कृष्णमूर्ति पद्धति

विषय सूची

Future Point

पृ.सं.

1. जन्मपत्री निर्माण 2
2. कृष्णमूर्ति पद्धति 19
3. नियंत्रक ग्रह 30
4. कृष्णमूर्ति पद्धति विश्लेषण के मुख्य तथ्य 34
5. जन्मपत्रिका अध्ययन में कृष्णमूर्ति पद्धति का उपयोग 42
6. कृष्णमूर्ति पद्धति द्वारा प्रश्न ज्योतिष 46
7. द्वादश भाव 54

Future Point

अध्याय–1

जन्मपत्री निर्माण

जन्मपत्रिका का सही निर्माण फलादेश में सटीकता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। कृष्णमूर्ति पद्धति द्वारा फलादेश में यह अनिवार्य शर्त है।

कृष्णमूर्ति पद्धति में जन्मपत्री निर्माण पारंपरिक जन्मपत्री निर्माण के समान ही है मगर भावों का निर्धारण भिन्न है। लग्न और ग्रह स्थिति की गणना के बाद भावों के अंशों की गणना प्लेसीडियस पद्धति द्वारा की जाती है। इसके अतिरिक्त नक्षत्र स्वामी और उपस्वामी की गणना भी फलादेश में सटीकता लाने के लिए की जाती है।

उदाहरण के लिए निम्न जन्म विवरण लिया जा रहा है :

जन्मतिथि : 12.9.1935 जन्म समय : 9.08 रात्रि

जन्म स्थान : गुना (म.प्र.) अक्षांश 24^0 39' उ. रेखांश 77^0 18' पू.

जन्मपत्रिका निर्माण में निम्न चरण होंगे :

प्रथम चरण :

भारतीय मानक समय का स्थानीय समय में परिवर्तन

पृथ्वी सूर्य के चारों ओर अंडाकार मार्ग में भ्रमण करती है तथा अपनी धुरी पर भी 24 घंटे में एक बार घूम जाती है। पश्चिम से पूर्व की ओर 1 अंश घूमने में 4 मिनट लगते हैं। इस प्रकार प्रत्येक सौर पिंड पूर्व से पश्चिम की ओर जाता हुआ प्रतीत होता है। अतः समान अक्षांश में किसी स्थान से 1^0 पूर्व दिशा में सूर्योदय 4 मिनट पहले होगा। भारतीय मानक समय ग्रीनविच समय से 5 घंटे 30 मिनट आगे रहता है क्योंकि भारतीय मानक समय 82^0 30' निर्धारित किया गया है। किसी स्थान के स्थानीय माध्यम समय को जानने के लिए उस स्थान के अक्षांश और रेखांश को जानना आवश्यक है।

गुना 82^0 30' से पश्चिम में स्थित है। रेखांश में 5^0 10' का अंतर है अतः समय संशोधन @ 4 मिनट प्रति अंश के अनुसार 5^0 10' X 4 = 20 मिनट 40 सैकंड होगा।

अतः जब भारतीय मानक समय 9.08 रात्रि है, गुना में स्थानीय माध्यम समय [09 घंटे - 08 मिनट] - [0 घंटे 20 मिनट 40 सैकंड]

=8 घंटे 47 मिनट 20 सैकंड रात्रि होगा।

ध्यान दें : अगर स्थान 82^0 30' से पूर्व दिशा में स्थित है तो स्थानीय मानक समय जानने के लिए प्रति अंश के हिसाब से उस स्थान के रेखांश और 82^0 30' के बीच अंतर के अनुसार जोड़ना होगा।

द्वितीय चरण :
स्थानीय माध्यम समय द्वारा सांपातिक समय (Sidereal Time) की गणना

स्थानीय माध्यम समय ज्ञात करने के बाद जन्मस्थान के सांपातिक समय की गणना की जाती है। गुना के लिए उपरोक्त स्थानीय माध्यम समय 8 घंटे 47 मिनट 20 सैकंड की गणना तारीख 12.9.1935 के लिए अक्षांश 24^0 40' उत्तर और रेखांश 77^0 20' पूर्व के अनुसार की गयी है।

इस पुस्तक में उपलब्ध लाहिड़ी पंचांग की सारणी 1 के अनुसार 12 बजे दोपहर को तारीख 12.9.1900 का सांपातिक समय 11 घंटे 23 मिनट 14 सैकंड है। इसमें वर्ष संशोधन सारणी 2 के अनुसार, सन 1935 के लिए 1 मिनट 53 सैकंड है। साथ ही समय संशोधन 1 घंटा 24 मिनट जोड़ना होगा।
अतः सांपातिक समय की गणना निम्नानुसार होगी :

		घं.	मि.	से.
1. 12 बजे दोपहर को तारीख 12.9.1900 का सांपातिक समय (सारणी 1 में सन 1900, 82^0 30' पूर्व के लिए)		11	23	14
2. वर्ष 1935 के लिए संशोधन (सारणी 4)	-		1	53
		11	21	21
3. समय संशोधन (सारणी 4 के अनुसार)	+		1	24
		11	22	45
4. रेखांश (पूर्व) का संशोधन @ 1 सैकंड प्रति 1½ अंश अंतर अर्थात मानक रेखांश 82°30' - 77°40'	+	0	0	3
		11	22	48
5. 12 बजे दोपहर और जन्म के स्था. मा. समय का अंतर		8	47	20
सांपातिक समय		20	10	08

तृतीय चरण :
लग्न और अन्य भावों की स्थिति का निर्धारण

लाहिड़ी पंचांग में भावों की सारणी सन्निहित है जिसमें प्रत्येक सांपातिक समय के अनुसार 10वें भाव की स्थिति जान सकते हैं। इस सारणी के अनुसार सांपातिक समय 20 घं. 8 मि. और 20 घं. 12 मि. के लिए 10वें भावारंभ क्रमशः 6°49' और 7°47' दिये गये हैं। 4 मिनट अंतर के लिए 62 सैकंड का अंतर होगा। अतः 2'8" के लिए 30' की वृद्धि होगी, तदनुसार 6°49' से 7°19' हो जाएंगे।

लग्न सारणी को देखें तो अक्षांश 24°39' के लिए और सांपातिक समय 20 घंटे 8 मिनट और 20 घंटे

Future Point

12 मिनट के लिए भावारंभ क्रमशः 18°37' और 19°48' दिये गये हैं, अर्थात 2 मिनट 8 सैकंड के लिए लगभग 44' का अंतर है। अतः लग्न 18°37' + 36' =19°21' होगा।

भावों 10–11, 11–12, 12–लग्न, लग्न–2, 2–3 के बीच का विस्तार निम्न सारणी में दिया गया है।

भाव	राशि	भावारंभ
1	मेष	19° 21' 0
2	वृष	18° 14' 0
3	मिथुन	12° 39' 0
4	कर्क	7° 19' 0
5	सिंह	5° 10' 0
6	कन्या	10° 21' 0
7	तुला	19° 13' 0
8	वृश्चिक	18° 14' 0
9	धनु	12° 39' 0
10	मकर	7° 19' 0
11	कुंभ	5° 19' 0
12	मीन	10° 21' 0

विभीन्न भावों के भावारंभ

<table>
<tr><td>मीन
12
10-21</td><td colspan="2">मेष
लग्न 19-21</td><td>वृष
2
18-14</td><td>मिथुन
3
12-39</td></tr>
<tr><td>कुंभ
11
5-10</td><td colspan="3" rowspan="2">निरयण
राशि</td><td>कर्क
4
7-19</td></tr>
<tr><td>मकर
10
7-19</td><td>सिंह
5
5-10</td></tr>
<tr><td>धनु
9
12-39</td><td>वृश्चिक
8
18-14</td><td>तुला
7
19-21</td><td>कन्या
6
10-21</td></tr>
</table>

Future Point

Future Point

चतुर्थ चरण :
जन्म समय के अनुसार ग्रह स्पष्ट का ज्ञान

लाहिड़ी पंचांग में वर्ष 1935 के लिए 5.30 बजे संध्या के ग्रहों के अंशों पर ध्यान दें। ग्रहों की स्थिति का आकलन निम्न प्रकार से कर सकते हैं :

प्रत्येक दिन के लिए चंद्रमा की निरयण स्थिति पंचांग में दी गयी है जबकि अन्य ग्रहों के लिए 7 दिनों की स्थिति उपलब्ध है। रात के ठीक 9 बजकर 8 मिनट की स्थिति जानने के लिए लोगेरिद्म अनुपात की विधि अपनानी चाहिए। वक्री ग्रह के लिए पिछले दिन के स्पष्ट से आनुपातिक गति घटा देनी चाहिए।

ग्रह	8-9-1935 को स्थिति	15-9-1935 को स्थिति	एक दिन में गति	आनुपातिक गति	सही स्थिति
सूर्य	4 रा 21°57'	4 रा 25°46'	58'25"	4°0'4"	145°57'40"
चंद्र	10 रा 20°52'*	11 रा 6°12'*	15°9'20"	2°18'14"	323°10'14"
	(* 24 घंटे की	अवधि के लिए)			
मंगल	7 रा 1°42'	7 रा 6°21'	39'53"	2°43'32"	214°25'32"
बुध	5 रा 14°32'	5 रा 23°50'	1°18'	5°29'	170°11'00"
गुरु	6 रा 25°14'	6 रा 26°20'	9'24"	37'42"	205°51'42"
शुक्र (व)	4 रा 21°44'	4 रा 17°37'	-35'12"	-2°28'48"	139°15'12"
शनि (व)	10 रा 13°15'	10 रा 12°44'	-4'26"	-18'41"	312°57'19"
राहु					267°53'00"
केतु					87°53'00"

चूंकि जन्म संध्या के भा. मा. समय 5.30 बजे से 3 घंटे 8 मिनट बाद में 12.9.1935 को हुआ है, इस अवधि के लिए आनुपातिक ग्रह भ्रमण ज्ञात करें और इसे 12.9.1935 की स्थिति में जोड़ दें (अगर ग्रह गति मार्गी हो)। अगर गति वक्री हो तो इसे घटाना होगा। चूंकि राहु स्पष्ट पंचांग में उपलब्ध हैं, केतु स्पष्ट जानने के लिए उनमें 180° जोड़ दें।

पंचम चरण
फोरचूना की स्थिति

लग्न के अंश	=	19°21'00"
चंद्र के अंश	=	323°10'14"
लग्न+चंद्र के अंश	=	342°31'14"
सूर्य के अंश	=	145°58' 24"
फोरचूना के अंश	=	196°32'50"
	=	6 रा -16°32'11" = तुला 16°-32'-11"

षष्ठ चरण

राशि चक्र बनाकर ग्रहों को अवस्थित करें

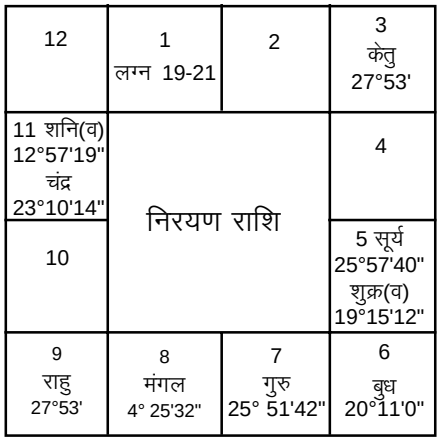

सप्तम चरण

जन्म समय की शेष दशा की गणना

चंद्रमा के जन्म के समय के अंश 23°10'14" हैं, कुंभ राशि में पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र है जिसका विस्तार कुंभ में 20° से मीन में 3°20' तक होता है।

अतः चंद्रमा द्वारा परिभ्रमित भाग 9°52'5" या 609' हुआ। बृहस्पति की महादशा 16 वर्ष की होती है। एक नक्षत्र का विस्तार 13°20' या 800' होता है।

अतः जन्म समय शेष बृहस्पति दशा = 609'/800 x 16

= 12 वर्ष 2 मास 8 दिन

अभ्यास

1. यदि जन्म भारतीय मानक समय के अनुसार दोपहर 10.40 पर दिल्ली में हुआ हो तो स्थानीय माध्यम समय ज्ञात करें।
2. किसी स्थान के लिए सांपातिक काल ज्ञात करने की विधि बतायें।
3. लाहिड़ी पंचांग के आधार पर लग्न और दशम भाव के भावस्पष्ट और तदनुसार सभी भावस्पष्ट ज्ञात करने की विधि लिखें।
4. सही ग्रह स्पष्ट जानने की विधि का वर्णन करें।
5. फ़ारचूना की स्थिति की गणना किस प्रकार से करते हैं ?
6. प्रत्येक ग्रह के नक्षत्र और उपस्वामियों का वर्णन सारणी के उपयोग द्वारा करें।

Future Point

Future Point

सांपातिक समय

सारणी -1

किसी वर्ष के दिनों के लिए 12 बजे दोपहर (स्थानीय माध्यम समय) का सांपातिक काल

(82½⁰ पू. रेखांश और 1900 ईस्वी के लिए)

दि.	सां. काल			दि.	सां. काल			दि.	सां. काल			दि.	सां. काल			दि.	सां. काल			दि.	सां. काल		
	जनवरी				फरवरी				मार्च				अप्रैल				मई				जून		
	घं	मि.	से.		घं	मि.	से.		घं	मि.	से.		घं	मि.	से.		घं	मि.	से.		घं	मि.	से.
1	18	41	48	1	20	44	2	1	22	34	25	1	0	36	39	1	2	34	55	1	4	37	8
2	18	45	45	2	20	47	58	2	22	38	22	2	0	40	35	2	2	38	52	2	4	41	5
3	18	49	42	3	20	51	55	3	22	42	18	3	0	44	32	3	2	42	48	3	4	45	2
4	18	53	38	4	20	55	51	4	22	46	15	4	0	48	28	4	2	46	45	4	4	48	58
5	18	57	35	5	20	59	48	5	22	50	12	5	0	52	25	5	2	50	41	5	4	52	55
6	19	1	31	6	21	3	45	6	22	54	8	6	0	56	21	6	2	54	38	6	4	56	51
7	19	5	2	7	21	7	41	7	22	58	5	7	1	0	18	7	2	58	35	7	5	0	48
8	19	9	24	8	21	11	38	8	23	2	1	8	1	4	14	8	3	2	31	8	5	4	44
9	19	13	21	9	21	15	34	9	23	5	58	9	1	8	11	9	3	6	28	9	5	8	41
10	19	17	18	10	21	19	31	10	23	9	54	10	1	12	8	10	3	10	24	10	5	12	37
11	19	21	14	11	21	23	27	11	23	13	51	11	1	16	4	11	3	14	21	11	5	16	34
12	19	25	11	12	21	27	24	12	23	17	47	12	1	20	1	12	3	18	17	12	5	20	31
13	19	28	7	13	21	31	20	13	23	21	44	13	1	23	57	13	3	22	14	13	5	24	27
14	19	33	4	14	21	35	17	14	23	25	41	14	1	27	54	14	3	26	10	14	5	28	24
15	19	37	0	15	21	39	14	15	23	29	37	15	1	31	50	15	3	30	7	15	5	32	20
16	19	40	57	16	21	43	10	16	23	33	34	16	1	35	47	16	3	34	4	16	5	36	17
17	19	44	53	17	21	47	7	17	23	37	30	17	1	39	43	17	3	38	0	17	5	40	13
18	19	48	50	18	21	51	3	18	23	41	27	18	1	43	40	18	3	41	56	18	5	44	10
19	19	52	47	19	21	55	0	19	23	45	23	19	1	47	37	19	3	45	53	19	5	48	6
20	19	56	43	20	21	58	56	20	23	49	20	20	1	51	33	20	3	49	50	20	5	52	3
21	20	0	40	21	22	2	53	21	23	53	16	21	1	55	30	21	3	53	46	21	5	56	0
22	20	4	36	22	22	6	49	22	23	57	13	22	1	59	26	22	3	57	43	22	5	59	56
23	20	8	33	23	22	10	46	23	0	1	10	23	2	3	23	23	4	1	39	23	6	3	53
24	20	12	29	24	22	14	43	24	0	5	6	24	2	7	19	24	4	5	36	24	6	7	49
25	20	16	26	25	22	18	39	25	0	9	3	25	2	11	16	25	4	9	33	25	6	11	46
26	20	20	22	26	22	22	36	26	0	12	59	26	2	15	12	26	4	13	29	26	6	15	42
27	20	24	19	27	22	26	32	27	0	16	56	27	2	19	9	27	4	17	26	27	6	19	39
28	20	28	16	28	22	30	29	28	0	20	52	28	2	23	6	28	4	21	22	28	6	23	35
29	20	32	12					29	0	24	49	29	2	27	2	29	4	25	19	29	6	27	32
30	20	36	9					30	0	28	45	30	2	30	59	30	4	29	15	30	6	31	29
31	20	40	5	29	22	34	25	31	0	32	42					31	4	33	12				

Future Point

सांपातिक समय

सारणी **-1** (क्रमशः.....)

किसी वर्ष के दिनों के लिए 12 बजे दोपहर (स्थानीय माध्यम समय) का सांपातिक काल

(82½⁰ पू. रेखांश और 1900 ईस्वी के लिए)

दि.	सां. काल			दि.	सां. काल			दि.	सां. काल			दि.	सां. काल			दि.	सां. काल			दि.	सां. काल		
	जुलाई				अगस्त				सितंबर				अक्तूबर				नवंबर				दिसंबर		
	घं	मि.	से.		घं	मि.	से.		घं	मि.	से.		घं	मि.	से.		घं	मि.	से.		घं	मि.	से.
1	6	35	25	1	8	37	38	1	10	39	52	1	12	38	8	1	14	40	21	1	16	38	38
2	6	39	22	2	8	41	35	2	10	43	48	2	12	42	5	2	14	44	18	2	16	42	35
3	6	43	18	3	8	45	31	3	10	47	45	3	12	46	1	3	14	48	14	3	16	46	31
4	6	47	15	4	8	49	28	4	10	51	41	4	12	49	58	4	14	52	11	4	16	50	28
5	6	51	11	5	8	53	25	5	10	55	38	5	12	53	54	5	14	56	8	5	16	54	24
6	6	55	8	6	8	57	21	6	10	59	34	6	12	57	51	6	15	0	4	6	16	58	21
7	6	59	4	7	9	1	18	7	11	3	31	7	13	1	48	7	15	4	1	7	17	2	17
8	7	3	1	8	9	5	14	8	11	7	27	8	13	5	44	8	15	7	57	8	17	6	14
9	7	6	58	9	9	9	11	9	11	11	24	9	13	9	41	9	15	11	54	9	17	10	10
10	7	10	54	10	9	13	7	10	11	15	21	10	13	13	37	10	15	15	50	10	17	14	7
11	7	14	51	11	9	17	4	11	11	19	17	11	13	17	34	11	15	19	47	11	17	18	4
12	7	18	47	12	9	21	0	12	11	23	14	12	13	21	30	12	15	23	43	12	17	22	0
13	7	22	44	13	9	24	57	13	11	27	10	13	13	25	27	13	15	27	40	13	17	25	57
14	7	26	40	14	9	28	54	14	11	31	7	14	13	29	23	14	15	31	37	14	17	29	53
15	7	30	37	15	9	32	50	15	11	35	3	15	13	33	20	15	15	35	33	15	17	33	50
16	7	34	33	16	9	36	47	16	11	39	0	16	13	37	16	16	15	39	30	16	17	37	46
17	7	38	30	17	9	40	43	17	11	42	56	17	13	41	13	17	15	43	26	17	17	41	43
18	7	42	27	18	9	44	40	18	11	46	53	18	13	45	10	18	15	47	23	18	17	45	39
19	7	46	23	19	9	48	36	19	11	50	50	19	13	49	6	19	15	51	19	19	17	49	36
20	7	50	20	20	9	52	33	20	11	54	46	20	13	53	3	20	15	55	16	20	17	53	33
21	7	54	16	21	9	56	29	21	11	58	43	21	13	56	59	21	15	59	12	21	17	57	29
22	7	58	13	22	10	0	26	22	12	2	39	22	14	0	56	22	16	3	9	22	18	1	26
23	8	2	9	23	10	4	23	23	12	6	36	23	14	4	52	23	16	7	6	23	18	5	22
24	8	6	6	24	10	8	19	24	12	10	32	24	14	8	49	24	16	11	2	24	18	9	19
25	8	10	2	25	10	12	16	25	12	14	29	25	14	12	45	25	16	14	59	25	18	13	15
26	8	13	59	26	10	16	12	26	12	18	25	26	14	16	42	26	16	18	55	26	18	17	12
27	8	17	56	27	10	20	9	27	12	22	22	27	14	20	39	27	16	22	52	27	18	21	8
28	8	21	52	28	10	24	5	28	12	26	19	28	14	24	35	28	16	26	48	28	18	25	5
29	8	25	49	29	10	28	2	29	12	30	15	29	14	28	32	29	16	30	45	29	18	29	2
30	8	29	45	30	10	31	58	30	12	34	12	30	14	32	28	30	16	34	41	30	18	32	58
31	8	33	42	31	10	35	55					31	14	36	25					31	18	36	55

Future Point

सारणी 2 – विभिन्न वर्षों के लिए संशोधन

(सारणी 1 के परिणाम में संशोधन के लिए)

वर्ष	शुद्धि		वर्ष	शुद्धि		वर्ष	शुद्धि		वर्ष	शुद्धि		वर्ष	शुद्धि	
	मि.	से.		मि.	से.		मि.	से.		मि.	से.		मि.	से.
1900	-0	0	1927	-2	8	1953	+0	38	1980*	-1	29	2006	-0	56
1901	-0	57	1928*	-3	5	1954	-0	19	1980†	+2	28	2007	-1	53
1902	-1	55	1928†	+0	51	1955	-1	16	1981	+1	30	2008*	-2	50
1903	-2	52	1929	-0	6	1956*	-2	13	1982	+0	33	2008†	+1	6
1904*	-3	49	1930	-1	3	1956†	+1	43	1983	-0	25	2009	+0	9
1904†	+0	7	1931	-2	1	1957	+0	46	1984*	-1	22	2010	-0	48
1905	-0	50	1932*	-2	58	1958	-0	12	1984†	+2	35	2011	-1	46
1906	-1	48	1932†	+0	59	1959	-1	9	1985	+1	37	2012*	-2	43
1907	-2	45	1933	+0	1	1960*	-2	6	1986	+0	40	2012†	+1	14
1908*	-3	42	1934	-0	56	1960†	+1	51	1987	-0	17	2013	+0	16
1908†	+0	14	1935	-1	53	1961	+0	53	1988*	-1	14	2014	-0	41
1909	-0	43	1936*	-2	50	1962	-0	4	1988†	+2	42	2015	-1	38
1910	-1	40	1936†	+1	6	1963	-1	2	1989	+1	45	2016*	-2	35
1911	-2	38	1937	+0	9	1964*	-1	59	1990	+0	47	2016†	+1	21
1912*	-3	35	1938	-0	49	1964†	+1	58	1991	-0	10	2017	+0	24
1912†	+0	22	1939	-1	46	1965	+1	0	1992*	-1	7	2018	-0	33
1913	-0	36	1940*	-2	43	1966	+0	3	1992†	+2	50	2019	-1	31
1914	-1	33	1940†	+1	13	1967	-0	54	1993	+1	52	2020*	-2	28
1915	-2	30	1941	+0	16	1968*	-1	51	1994	+0	55	2020†	+1	29
1916*	-3	27	1942	-0	41	1968†	+2	5	1995	-0	3	2021	+0	31
1916†	+0	29	1943	-1	38	1969	+1	8	1996*	-1	0	2022	-0	26
1917	-0	28	1944*	-2	36	1970	+0	10	1996†	+2	57	2023	-1	23
1918	-1	25	1944†	+1	21	1971	-0	47	1997	+1	59	2024*	-2	20
1919	-2	23	1945	+0	24	1972*	-1	44	1998	+1	2	2024†	+1	36
1920*	-3	20	1946	-0	34	1972†	+2	13	1999	+0	5	2025	+0	39
1920†	+0	37	1947	-1	31	1973	+1	15	2000*	-0	52	2026	-0	19
1921	-0	21	1948*	-2	28	1974	+0	18	2000†	+3	5	2027	-1	16
1922	-1	18	1948†	+1	28	1975	-0	39	2001	-0	5	2028*	-2	13
1923	-2	15	1949	+0	31	1976*	-1	36	2002	-1	3	2028†	+1	43
1924*	-3	12	1950	-0	26	1976†	+2	20	2003	-2	0	2029	+0	46
1924†	+0	44	1951	-1	24	1977	+1	23	2004*	-2	57	2030	-0	11
1925	-0	13	1952*	-2	21	1978	+0	25	2004†	+0	59	2031	-1	9
1926	-1	11	1952†	+1	36	1979	-0	32	2005	+0	2	2032*	-2	6

* केवल जनवरी और फरवरी के लिए . † मार्च से दिसंबर के लिए

सारणी 3 – विभिन्न स्थानों के लिए संशोधन

स्थान	अक्षांश	शुद्धि			स्थान	अक्षांश	शुद्धि		
			मि.	से.				मि.	से.
इलाहाबाद	81°52 पू.	+	0	0	ग्रीनविच	0°0 पू.	+	0	54
बंगलोर	77°36 पू.	+	0	2	इस्लामाबाद	73°10 पू.	+	0	6
बैंकाक	100°30 पू.	-	0	12	क्वालालंपुर	101°43 पू.	-	0	13
बंबई	72°50 पू.	+	0	6	मद्रास	80°15 पू.	+	0	1
कलकता	88°23 पू.	-	0	4	न्यूयॉर्क	74°0 प.	+	1	43
कोलंबो	79°52 पू.	+	0	2	पुणे	73°53 पू.	+	0	6
ढाका	90°25 पू.	-	0	5	रंगून	96°10 पू.	-	0	9
दिल्ली	77°13 पू.	+	0	3	वाराणसी	83°1 पू.	-	0	0

संशोधन .66 सैकंड प्रति रेखांश अंश की दर पर केंद्रीय रेखांश $82^{0}30'$ में होगा। पश्चिम के लिए यह + और पूर्व के लिए – होगा।

सारणी 4 – समयावधि में वृद्धि के लिए संशोधन

समय	शुद्धि		समय	शुद्धि		समय	शुद्धि		समय	शुद्धि		समय	शुद्धि	
घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.
1	+ 0	10	8	+ 1	19	15	+ 2	28	22	+ 3	37	24	+ 0	4
2	0	20	9	1	29	16	2	38	23	3	47	30	0	5
3	0	30	10	1	39	17	2	48	24	+ 3	56	36	0	6
4	0	39	11	1	48	18	2	57	m	m	s	42	0	7
5	0	49	12	1	58	19	3	7	6	+ 0	1	48	0	8
6	0	59	13	2	8	20	3	17	12	0	2	54	0	9
7	+ 1	9	14	+ 2	18	21	+ 3	27	18	+ 0	3	60	+ 0	10

समय संशोधन दिये समय और 12 बजे दोपहर में अंतर के अनुसार होगा।

Future Point

Future Point

Tenth House or M.C. (For all places on the Earth)

मिनट	Sidereal Time																	
	0h			3h			6h			9h			12h			15h			18h			21h		
0	11	7	0	0	24	28	2	7	0	3	19	32	5	7	0	6	24	28	8	7	0	9	19	32
4		8	5		25	28		7	55		20	32		8	5		25	28		7	55		20	32
8		9	11		26	27		8	50		21	32		9	11		26	27		8	50		21	32
12		10	16		27	27		9	45		22	32		10	16		27	27		9	45		22	32
16		11	22		28	26		10	40		23	33		11	22		28	26		10	40		23	33
20		12	27	0	29	25		11	35		24	33		12	27	6	29	25		11	35		24	33
24		13	32	1	0	23		12	30		25	34		13	32	7	0	23		12	30		25	34
28		14	37		1	22		13	26		26	35		14	37		1	22		13	26		26	35
32	11	15	43	1	2	21	2	14	21	3	27	36	5	15	43	7	2	21	8	14	21	9	27	36
36		16	48		3	19		15	16		28	37		16	48		3	19		15	16		28	37
40		17	53		4	17		16	11	3	29	39		17	53		4	17		16	11	9	29	39
44		18	58		5	15		17	7	4	0	41		18	58		5	15		17	7	10	0	41
48		20	3		6	13		18	2		1	42		20	3		6	13		18	2		1	42
52		21	8		7	11		18	58		3	47		22	12		8	8		19	53		3	47
	1h			**4h**			**7h**			**10h**			**13h**			**16h**			**19h**			**22h**	
0	11	23	17	1	9	5	2	20	49	4	4	49	5	23	17	7	9	5	8	20	49	10	4	49
4		24	21		10	3		21	44		5	52		24	21		10	3		21	44		5	52
8		25	26		11	0		22	40		6	54		25	26		11	0		22	40		6	54
12		26	30		11	57		23	36		7	57		26	30		11	57		23	36		7	57
16		27	34		12	54		24	32		9	0		27	34		12	54		24	32		9	0
20		28	38		13	50		25	28		10	3		28	38		13	50		25	28		10	3
24	11	29	42		14	47		26	24		11	7	5	29	42		14	47		26	24		11	7
28	0	0	46		15	43		27	20		12	10	6	0	46		15	43		27	20		12	10
32	0	1	50	1	16	40	2	28	17	4	13	14	6	1	50	7	16	40	8	28	17	10	13	14
36		2	53		17	36	2	29	13		14	18		2	53		17	36	8	29	13		14	18
40		3	57		18	38	3	0	10		15	22		3	57		18	32	9	0	10		15	22
44		5	0		19	28		1	6		16	26		5	0		19	28		1	6		16	26
48		6	3		20	24		2	3		17	30		6	3		20	24		2	3		17	30
52		7	6		21	20		3	0		18	34		7	6		21	20		3	0		18	34
56		8	8		22	16		3	57		19	39		8	8		22	16		3	57		19	39
	2h			**5h**			**8h**			**11h**			**14h**			**17h**			**20h**			**23h**	
0	0	9	11	1	23	11	3	4	55	4	20	43	6	9	11	7	23	11	9	4	55	10	20	43
4		10	13		24	7		5	52		21	48		10	13		24	7		5	52		21	48
8		11	16		25	2		6	49		22	52		11	16		25	2		6	49		22	52
12		12	18		25	58		7	47		23	57		12	18		25	58		7	47		23	57
16		13	19		26	53		8	45		25	2		13	19		26	53		8	45		25	2
20		14	21		27	49		9	43		26	7		14	21		27	49		9	43		26	7
24		15	23		28	44		10	41		27	12		15	23		28	44		10	41		27	12
28		16	24	1	29	39		11	39		28	17		16	24	7	29	39		11	39		28	17
32	0	17	25	2	0	34	3	12	38	4	29	23	6	17	25	8	0	34	9	12	38	10	29	23
36		18	26		1	30		13	37	5	0	28		18	26		1	30		13	37	11	0	28
40		19	27		2	25		14	35		1	33		19	27		2	25		14	35		1	33
44		20	27		3	20		15	34		2	38		20	27		3	20		15	34		2	38
48		21	28		4	15		16	33		3	44		21	28		4	15		16	33		3	44
52		22	28		5	10		17	33		4	49		22	28		5	10		17	33		4	49
56		23	28		6	5		18	32		5	55		23	28		6	5		18	32		5	55
60	0	24	28	2	7	0	3	19	32	5	7	0	6	24	28		7	0	9	19	32	11	7	0

Proportional Parts

Variation in 4 mins :	1°-5’	1°-3’	1°-1’	0°-59’	0°-57’	0°-55’
Variation in 3 mins :	49’	47’	46’	44’	43’	41’
Variation in 2 mins :	32’	31’	31’	30’	29’	28’
Variation in 1 min :	16’	16’	15’	15’	14’	14’

Future Point

Ascendant for Latitude 24°30' North

Minute	Sidereal Time																							
	0h			3h			6h			9h			12h			15h			18h			21h		
	s	°	'	s	°	'	s	°	'	s	°	'	s	°	'	s	°	'	s	°	'	s	°	'
0	2	17	17	3	26	34	5	7	0	6	17	26	7	26	43	9	10	28	11	7	0	1	3	32
4		18	10		27	27		7	54		18	18		27	37		11	34		8	21		4	38
8		19	3		28	20		8	49		19	11		28	30		12	40		9	43		5	43
12		19	56	3	29	13		9	44		20	4	7	29	24		13	47		11	4		6	49
16		20	49	4	0	6		10	39		20	56	8	0	18		14	55		12	26		7	53
20		21	42		0	59		11	33		21	48		1	12		16	4		13	47		8	56
24		22	34		1	52		12	28		22	41		2	6		17	12	15	8			10	0
28		23	28		2	46		13	22		23	34		3	0		18	20		16	29		11	3
32	2	24	20	4	3	38	5	14	17	6	24	26	8	3	54	9	19	29	11	17	50	1	12	6
36		25	12		4	31		15	11		25	18		4	48		20	39		19	11		13	8
40		26	5		5	25		16	6		26	11		5	43		21	49		20	32		14	10
44		26	57		6	18		17	0		27	3		6	38		23	0		21	52		15	12
48		27	50		7	12		17	54		27	56		7	33		24	12		23	11		16	13
52		28	42		8	6		18	49		28	48		8	28		25	23		24	31		17	14
56	2	29	35		8	58		19	43	6	29	41		9	23		26	35		25	50		18	14
	1h			4h			7h			10h			13h			16h			19h			22h		
0	3	0	26	4	9	52	5	20	38	7	0	32	8	10	19	9	47	48	11	27	10	1	19	14
4		1	19		10	46		21	32		1	24		11	15	9	29	1		28	29		20	14
8		2	11		11	40		22	26		2	16		12	11	10	0	15	11	29	47		21	14
12		3	3		12	34		23	20		3	8		13	8		1	29	0	1	5		22	13
16		3	55		13	27		24	15		4	1		14	4		2	43		2	23		23	12
20		4	47		14	21		25	9		4	52		15	1		3	58		3	40		24	10
24		5	39		15	15		26	3		5	44		15	58		5	14		4	58		25	9
28		6	32		16	9		26	58		6	36		16	56		6	29		6	14		26	7
32	3	7	25	4	17	3	5	27	51	7	7	28	8	17	53	10	7	46	0	7	30	1	27	4
36		8	16		17	57		28	45		8	21		18	51		9	3		8	46		28	2
40		9	7		18	51	5	29	39		9	13		19	49		10	19		10	2		28	59
44		9	59		19	45	6	0	33		10	5		20	48		11	37		11	16	1	29	56
48		10	52		20	40		1	27		10	57		21	47		12	54		12	31	2	0	52
52		11	44		21	34		2	20		11	50		22	46		14	13		13	45		1	49
56		12	36		22	28		3	14		12	41		23	46		15	31		14	59	2	2	45
	2h			5h			8h			11h			14h			17h			20h			23h		
0	3	13	28	4	23	22	6	4	8	7	13	33	8	24	46	10	16	50	0	16	12	2	3	41
4		14	20		24	17		5	2		14	25		25	46		18	10		17	25		4	36
8		15	12		25	11		5	54		15	18		26	46		19	29		18	37		5	32
12		16	5	26	6		6	48		16	10			27	47		20	49		19	48		6	27
16		16	57		27	0		7	42		17	3		28	48		22	8		21	0		7	22
20		17	49		27	54		8	35		17	55	8	29	50		23	28		22	11		8	17
24		18	42		28	49		9	29		18	48	9	0	52		24	49		23	21		9	12
28		19	34	4	29	44		10	22		19	40		1	54		26	10		24	3		10	7
32	3	20	26	5	0	38	6	11	15	7	20	33	9	2	57	10	27	31	0	25	40	2	11	1
36		21	18		1	32		12	8		21	25		4	0	10	28	51		26	48		11	55
40		22	11		2	27		13	1		22	18		5	3	11	0	13		27	57		12	49
44		23	4		3	22		13	54		23	11		6	7		1	34	0	29	5		13	43
48		23	56		4	17		14	47		24	4		7	11		2	55	1	0	12		14	37
52		24	49		5	11		15	40		24	57		8	16		4	17		1	19		15	30
56		25	42		6	6		16	33		25	50		9	22		5	39		2	26		16	24
60	3	26	34	5	7	0	6	17	26	7	26	43	9	10	28	11	7	0	1	3	32	2	17	17

Proportional Parts

Variation in 4 Mins :	0°-52'	0°-54'	0°-56'	0°-58'	1°-0'	1°-2'	1°-4'	1°-6'
Variation in 3 Mins :	39'	40'	42'	43'	45'	46'	48'	49'
Variation in 2 Mins :	26'	27'	28'	29'	30'	31'	32'	33'
Variation in 1 Min :	13'	14'	14'	15'	15'	16'	16'	17'

Future Point

Nirayana Longitudes of Planets at 5.30 PM IST for year 1935 Ayanamsa 22°57'17"

दिनांक	तिथि व महीना	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	बुधवार
जन. 6	21 9	10 2 36	6 24 49	5 19 5	8 22 18	9 3 59	8 26 10	9 1 7
13	28 9	10 3 20	6 25 54	5 21 52	8 29 26	9 12 47	9 7 49	9 12 51
20	6 10	10 4 6	6 26 53	5 24 24	9 6 34	9 21 33	9 19 34	9 24 30
27	13 10	10 4 54	6 27 46	5 26 38	9 13 41	10 0 19	10 0 41	10 4 47
फर. 3	20 10	10 5 43	6 28 32	5 28 32	9 20 42	10 9 4	10 8 56	10 10 38
10	27 10	10 6 34	6 29 11	6 0 2	9 27 53	10 17 47	10 10 29	10 8 35
17	5 11	10 7 25	6 29 41	6 1 5	10 4 57	10 26 30	10 4 27	10 1 7
24	12 11	10 8 16	7 0 3	6 1 37	10 12 0	11 5 11	9 27 38	9 26 12
मार्च 3	19 11	10 9 6	7 0 17	6 1 34	10 19 2	11 13 50	9 25 57	9 26 50
10	26 11	10 9 56	7 0 21	6 0 54	10 26 3	11 22 27	9 29 9	10 1 34
17	3 12	10 10 46	7 0 16	5 29 36	11 3 1	0 1 2	10 5 30	10 8 54
24	10 12	10 11 33	7 0 1	5 27 43	11 9 58	0 9 34	10 13 54	10 17 58
31	17 12	10 12 19	6 29 38	5 25 23	11 16 54	0 18 4	10 23 46	10 28 23
अप्रैल 7	24 12	10 13 3	6 29 7	5 22 45	11 23 48	0 26 30	11 4 54	11 10 2
14	1 1	10 13 45	6 28 29	5 20 4	0 0 40	1 4 53	11 17 15	11 22 55
21	8 1	10 14 23	6 27 44	5 17 37	0 7 30	1 13 13	0 0 50	0 7 2
28	15 1	10 14 59	6 26 55	5 15 35	0 14 19	1 21 28	0 15 31	0 21 59
मई 5	22 1	10 1 31	6 26 3	5 14 7	0 21 7	1 29 38	1 0 29	1 6 37
12	29 1	10 15 59	6 25 10	5 13 18	0 27 53	2 7 44	1 14 15	1 19 27
19	5 2	10 16 23	6 24 17	5 13 7	1 4 38	2 15 43	1 25 37	1 29 38
26	12 2	10 16 43	6 23 26	5 13 34	1 11 21	2 23 34	2 4 7	2 6 49
जून 2	19 2	10 16 58	6 22 40	5 14 34	1 12 4	3 1 18	2 9 26	2 10 37
9	26 2	10 17 9	6 21 59	5 16 5	1 24 46	3 8 53	2 11 8	2 10 45
16	1 3	10 17 15	6 21 25	5 18 2	2 1 28	3 16 15	2 9 19	2 7 46
23	8 3	10 17 16	6 20 58	5 20 22	2 8 8	3 23 23	2 5 29	2 3 57
30	15 3	10 17 12	6 20 40	5 23 3	2 14 49	4 0 14	2 2 35	2 2 17
जुलाई 7	22 3	10 17 4	6 20 30	5 26 1	2 21 29	4 6 44	2 3 2	2 4 28
14	29 3	10 16 31	6 20 29	5 29 16	2 28 10	4 12 46	2 7 35	2 10 45
21	5 4	10 16 33	6 20 37	96 2 43	3 4 50	4 18 13	2 16 5	2 20 49
28	12 4	10 16 12	6 20 54	6 6 23	3 11 32	4 22 54	2 28 0	3 3 52
अग. 4	19 4	10 15 47	6 21 19	6 10 15	3 18 14	4 26 36	3 12 4	3 18 18
11	26 4	10 15 20	6 21 52	6 14 16	3 24 56	4 29 1	3 26 31	4 2 30
18	1 5	10 14 50	6 22 32	6 18 26	4 1 39	4 29 49	4 10 10	4 15 40
25	8 5	10 14 19	6 23 20	6 22 44	4 8 24	4 28 44	4 22 42	4 27 44
सितं. 1	15 5	10 13 47	6 24 14	6 27 9	4 15 10	4 25 50	5 4 8	5 8 43
8	22 5	10 13 15	8 35 14	7 1 42	4 21 57	4 21 44	5 14 32	5 18 40
15	29 5	10 12 44	6 26 20	7 6 21	4 28 46	4 17 37	5 23 50	5 27 26
22	5 6	10 12 15	6 27 30	7 11 6	5 5 36	4 14 42	6 1 46	6 4 35
29	12 6	10 11 49	6 28 45	7 15 57	5 12 28	4 13 39	6 7 36	6 9 8
अक्तू. 6	19 6	10 11 25	7 0 4	7 20 53	5 19 21	4 14 31	6 9 52	6 9 10
13	26 6	10 11 6	7 1 27	7 25 53	5 26 16	4 17 2	6 6 22	6 3 4
20	3 7	10 10 51	7 2 52	8 0 58	6 3 13	4 20 54	5 28 17	5 25 32
27	10 7	10 10 40	7 4 20	8 6 7	6 10 10	4 25 49	5 24 17	5 25 15
नवं. 3	17 7	10 10 32	7 5 50	8 11 20	6 17 11	5 1 30	5 28 36	6 2 9
10	24 7	10 10 34	7 7 22	8 16 36	6 24 13	5 7 49	6 7 42	6 12 12
17	1 8	10 10 38	7 8 54	8 21 54	7 1 16	5 14 36	6 18 25	6 23 9
24	8 8	10 10 48	7 10 28	8 27 6	7 8 20	5 21 46	6 29 29	7 4 14
दिसं. 1	15 8	10 11 3	7 12 2	9 2 39	7 15 25	5 29 14	7 10 32	7 15 15
8	22 8	10 11 22	7 13 35	9 8 5	7 22 32	6 6 56	7 21 32	7 26 15
15	29 8	10 11 46	7 15 9	9 13 31	7 29 38	6 14 50	8 2 33	8 7 18
29	13 9	10 12 47	7 18 11	9 24 28	8 13 54	7 1 3	8 24 53	8 29 42
जन. 5	20 9	10 13 22	7 19 38	9 29 56	8 21 1	7 9 18	9 6 2	-

Stationary : Saturn-June 22R, November 8D, Jupiter - March 10R, July 12D, Mars - Feb. 27R, May 18D, Venus - August 18R, Sept. 30D, Mercury-Feb. 8R, March 2 D, June 9R, July 3D, October 6 R, 27D.

Future Point

Nirayana Longitudes of Moon at 5.30 PM IST for year 1935

दिनांक	तिथि व महीना	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
जन. 6	1 9	9 10 8	9 25 7	10 9 57	10 24 31	11 8 47	11 22 42	0 6 16
13	9 9	0 19 30	1 2 25	1 1 05	1 27 32	2 9 47	2 21 53	3 3 51
20	16 9	3 15 44	3 27 33	4 9 21	4 21 10	5 3 4	5 15 5	5 27 19
27	22 9	6 9 48	6 22 37	7 5 50	7 19 29	8 3 35	8 18 7	9 3 1
फर. 3	30 9	18 9	10 3 23	10 18 33	11 3 29	11 18 4	0 2 13	0 15 55
10	7 10	0 29 11	1 12 3	1 24 35	2 6 51	2 18 55	3 0 50	3 12 40
17	14 10	3 24 29	4 6 17	4 18 8	5 0 2	5 12 3	5 24 11	6 6 30
24	21 10	6 19 1	7 1 49	7 14 55	7 28 23	8 12 15	8 26 32	9 11 12
मार्च 3	28 10	9 26 11	10 11 21	10 26 33	11 11 38	11 26 24	0 10 48	0 24 39
10	6 11	1 8 3	1 20 59	2 3 32	2 15 45	2 27 45	3 9 37	3 21 24
17	13 11	4 3 11	4 15 1	4 26 57	5 9 0	5 21 12	6 3 33	6 16 5
24	19 11	6 28 47	7 11 42	7 24 52	8 8 17	8 22 0	9 6 3	9 20 24
31	27 11	10 5 3	10 19 54	11 4 51	11 19 45	0 4 27	0 18 48	1 2 45
अप्रैल 7	4 12	1 16 13	1 29 14	2 11 50	2 24 6	3 6 7	3 17 59	3 29 47
14	11 12	4 11 36	4 23 29	5 5 32	5 17 44	6 0 9	6 12 47	6 26 37
21	18 12	7 8 38	7 21 51	8 5 14	8 18 49	9 2 35	9 16 32	10 0 42
28	25 12	10 15 2	10 29 31	11 14 3	11 28 33	0 12 55	0 27 01	1 10 47
मई 5	3 1	1 24 9	2 7 8	2 19 45	3 2 3	3 14 6	3 26 0	4 7 49
12	9 1	4 19 40	5 1 37	5 13 45	5 26 5	6 8 41	6 21 34	7 4 43
19	16 1	7 18 6	8 01 43	8 15 29	8 29 23	9 13 24	9 27 30	10 11 39
26	24 1	10 25 50	11 10 1	11 24 10	0 8 14	0 22 8	1 5 49	1 19 14
जून 2	1 2	2 2 21	2 15 10	2 27 41	3 9 56	3 21 58	4 3 53	4 15 43
9	8 2	4 27 35	5 9 34	5 21 43	6 4 7	6 16 50	6 29 52	7 13 15
16	15 2	7 26 58	8 10 57	8 25 9	9 9 29	9 23 54	10 8 17	10 22 37
23	22 2	11 6 51	11 20 55	0 4 49	0 18 31	1 2 0	1 15 15	1 28 16
30	30 2	2 11 3	2 23 36	3 5 55	3 18 3	4 0 2	4 11 55	4 23 46
जुलाई 7	6 3	5 5 27	5 17 35	5 29 44	6 12 7	6 24 50	7 7 54	7 21 23
14	13 3	8 5 16	8 19 30	9 4 3	9 18 49	10 3 39	10 18 27	11 3 6
21	21 3	11 17 31	0 1 38	0 15 27	0 28 56	1 12 8	1 25 3	2 7 43
28	28 3	2 20 11	3 2 27	3 14 35	3 26 35	4 8 29	4 20 20	5 2 9
अग. 4	5 4	5 14 1	5 25 59	6 8 6	6 20 26	7 3 5	7 16 5	7 29 30
11	12 4	8 13 22	8 27 41	9 12 23	9 27 23	10 12 33	10 27 42	11 12 42
18	19 4	11 27 24	0 11 42	0 25 35	1 9 2	1 22 5	2 4 49	2 17 15
25	27 4	2 29 29	3 11 33	3 23 31	4 5 24	4 17 15	4 29 5	5 10 56
सितं. 1	3 5	5 22 51	6 4 51	6 16 59	6 29 19	7 11 54	7 24 49	8 8 6
8	10 5	8 21 49	9 6 0	9 20 38	10 5 38	10 20 52	11 6 12	11 21 24
15	18 5	0 6 20	0 20 51	1 4 53	1 18 25	2 1 29	2 14 10	2 26 31
22	25 5	3 8 38	3 20 36	4 2 28	4 14 17	4 26 7	5 8 0	5 19 56
29	2 6	6 1 58	6 14 5	6 26 21	7 8 47	7 21 25	8 4 18	8 17 31
अक्तू. 6	9 6	9 1 5	9 15 3	9 29 26	10 14 12	10 29 15	11 14 26	11 29 36
13	16 6	0 14 34	0 29 10	1 13 18	1 26 57	2 10 7	2 22 51	3 5 13
20	24 6	3 17 20	3 29 17	4 11 7	4 22 57	5 4 48	6 16 45	5 28 49
27	30 6	6 11 0	6 23 21	7 5 51	7 18 31	8 1 21	8 14 24	8 27 41
नवं. 3	7 7	9 11 14	9 25 5	10 9 14	10 23 40	11 8 20	11 23 9	0 7 59
10	15 7	0 22 41	1 7 8	1 21 12	2 4 51	2 18 4	3 0 52	3 13 19
17	22 7	3 25 29	4 7 28	4 19 20	5 1 11	5 13 4	5 25 5	6 7 15
24	29 7	6 19 37	7 2 12	7 15 0	7 28 0	8 11 13	8 24 37	9 8 11
दिसं. 1	6 8	9 21 56	10 5 51	10 19 56	11 4 9	11 18 28	0 2 50	0 17 10
8	13 8	1 1 24	1 15 26	1 29 13	2 12 40	2 25 48	3 8 34	3 21 3
15	20 8	4 3 15	4 15 16	4 27 11	5 9 3	5 20 57	6 2 59	6 15 12
22	27 8	6 27 39	7 10 24	7 23 27	8 6 48	8 20 25	9 4 17	9 18 19
29	4 9	10 2 29	10 16 43	11 0 58	11 15 11	11 29 20	0 13 22	0 27 16
जन. 5	12 9	1 10 59	-	-	-	-	-	-

Rahu on 1st of each month												
	जन.	9	9	16	9	7	38	9	6	9	9	4 30
	मई	9	2	55	9	1	16	8	29	41	8	28 3
	सितंबर	8	26	24	8	24	49	8	23	10	8	21 35

Future Point

Distance between the houses according to the Semi-arc system

Sid. Time		Latitude 0° N					Latitude 7° N					Latitude 13°				
		10th-11th	11th-12th	12th-Asc	Asc-2nd	2nd-3rd	10th-11th	11th-12th	12th-Asc	Asc-2nd	2nd-3rd	10th-11th	11th-12th	12th-Asc	Asc-2nd	2nd-3rd
0	0	32°2	29°9	27°9	27°9	29°9	32°7	31°1	29°0	26°8	28°8	33°2	32°2	29°9	25°7	27°8
0	30	31°8	29°2	27°7	28°2	30°6	32°4	30°5	28°7	27°0	29°4	33°0	31°5	29°5	25°9	28°4
1	0	31°2	28°7	27°6	28°7	31°2	32°0	29°9	28°5	27°4	30°0	32°6	30°8	29°2	26°3	29°1
1	30	30°6	28°2	27°7	29°2	31°8	31°4	29°4	28°4	27°9	30°6	32°1	30°3	29°0	26°7	27°7
2	0	29°9	27°9	27°9	29°9	32°2	30°7	28°9	28°5	28°5	31°2	31°5	29°8	28°9	27°3	30°3
2	30	29°3	27°7	28°2	30°6	32°5	30°2	28°6	28°7	29°1	31°5	30°0	29°5	29°0	27°8	30°7
3	0	28°7	27°6	28°7	31°2	32°6	29°6	28°5	29°0	29°7	31°7	30°5	29°3	29°1	28°4	30°7
3	30	28°3	27°7	29°2	31°8	32°5	29°2	28°5	29°4	30°2	31°8	30°0	29°2	29°3	28°9	31°2
4	0	27°9	27°9	29°9	32°2	32°2	28°8	28°6	29°8	30°7	31°7	29°7	29°2	29°6	29°4	31°2
4	30	27°7	28°2	30°6	32°5	31°8	28°6	28°9	30°2	31°0	31°4	29°4	29°8	29°8	29°8	31°1
5	0	27°6	28°7	31°2	32°6	31°2	28°5	29°2	30°6	31°2	31°0	29°3	29°6	30°1	30°1	30°9
5	30	27°7	29°2	31°7	32°5	30°6	28°6	29°6	30°9	31°3	30°6	29°3	29°9	30°2	30°2	30°6
6	0	27°9	29°9	32°2	32°2	29°9	28°7	30°1	31°2	31°2	30°1	29°5	30°2	30°3	30°3	30°2
6	30	28°3	30°6	32°5	31°7	29°2	29°0	30°6	31°3	30°9	29°6	29°8	30°6	32°2	30°2	29°9
7	0	28°7	31°2	32°6	31°2	28°7	29°5	31°0	31°2	30°6	29°2	30°0	30°9	30°1	30°1	29°6
7	30	28°3	30°6	32°5	31°7	29°2	29°0	30°6	31°3	30°9	29°6	29°8	30°6	30°2	30°2	29°9
8	0	29°9	32°2	32°2	29°9	27°9	30°4	31°7	30°7	29°8	28°0	30°9	31°2	29°4	29°6	29°2
8	30	30°5	32°5	31°8	29°2	27°7	30°9	31°8	30°2	29°4	28°5	31°4	31°2	28°9	29°3	29°2
9	0	31°2	32°6	31°2	28°7	27°6	31°5	31°7	29°7	29°0	28°5	31°7	31°0	28°4	29°1	29°3
9	30	31°7	32°5	30°6	28°2	27°7	31°9	31°5	29°1	28°7	28°6	32°0	30°7	27°8	29°0	29°6
10	0	32°2	32°2	29°9	27°9	27°9	32°2	31°2	28°5	28°5	28°9	32°2	30°3	27°3	28°9	29°8
10	30	32°5	31°8	29°2	27°7	28°2	32°3	30°6	27°9	28°4	29°4	32°2	29°7	26°7	29°0	30°3
11	0	32°6	31°2	28°7	27°6	28°7	32°2	30°0	27°4	28°5	29°9	32°0	29°1	26°3	29°2	30°8
11	30	32°5	30°6	28°2	27°7	29°2	32°0	29°4	27°0	28°7	30°5	31°7	28°4	25°9	29°5	31°5
12	0	32°2	29°9	27°9	27°9	29°9	31°6	28°8	26°8	29°0	31°1	31°2	27°8	25°7	29°9	32°2
12	30	31°8	29°2	27°7	28°2	30°6	31°2	28°2	26°6	29°4	31°7	30°6	27°2	25°7	30°4	32°8
13	0	31°2	28°7	27°6	28°7	31°2	30°5	27°5	26°7	30°0	32°4	29°9	26°7	25°8	31°1	33°5
13	30	29°6	28°2	27°7	29°2	31°8	29°8	27°2	26°8	30°6	32°9	29°2	26°3	26°0	31°9	33°9
14	0	29°9	27°9	27°9	29°9	32°2	29°1	26°9	27°2	31°4	33°3	28°3	26°0	26°5	32°8	34°3
14	30	29°3	27°7	28°2	30°6	32°5	28°4	26°7	27°7	32°1	33°5	27°7	25°8	27°0	33°5	34°4
15	0	28°7	27°6	28°7	31°2	32°6	27°8	26°7	28°3	32°8	33°4	27°0	25°8	27°9	34°4	34°3
15	30	28°8	27°7	29°2	31°8	32°5	27°4	26°8	29°0	33°4	33°2	26°5	26°0	28°8	35°0	33°9
16	0	27°9	27°9	29°9	32°2	32°2	27°0	27°1	30°0	33°8	32°7	26°2	26°4	29°9	35°4	33°2
16	30	27°7	28°2	30°6	32°5	31°8	26°8	27°5	30°8	34°1	32°1	26°0	26°9	31°0	35°6	32°4
17	0	27°6	28°7	31°2	32°6	31°2	26°7	28°2	31°8	34°0	31°3	25°9	27°6	32°2	35°5	31°4
17	30	27°7	29°2	31°7	32°5	30°6	26°8	28°8	32°5	33°8	30°6	26°0	28°4	33°3	35°1	30°5
18	0	27°9	29°9	32°2	32°2	29°9	27°1	29°7	33°3	33°3	29°7	20°3	29°4	34°3	34°3	29°4
18	30	28°3	30°6	32°5	31°7	29°2	27°5	30°6	33°8	32°5	28°8	26°7	30°5	35°1	33°3	28°4
19	0	28°7	31°2	32°6	31°2	28°7	28°0	31°3	34°0	31°8	26°2	27°4	31°4	35°5	32°2	27°6
19	30	29°2	31°8	32°5	30°6	28°2	28°7	32°1	34°1	30°8	27°5	28°1	32°4	35°6	31°0	26°9
20	0	29°9	32°2	32°2	29°9	27°9	29°4	32°7	33°8	30°0	27°1	28°9	33°2	35°4	29°9	26°4
20	30	30°5	32°5	31°8	29°2	27°7	30°2	33°2	33°4	29°0	26°8	29°8	33°9	35°0	28°8	26°0
21	0	32°2	32°6	31°2	28°7	27°6	31°0	33°4	32°8	28°3	26°7	30°6	34°3	34°4	27°9	25°8
21	30	31°7	32°5	30°6	28°2	27°7	31°6	33°5	32°1	27°7	26°7	31°6	34°4	33°5	27°0	25°8
22	0	32°2	32°2	29°9	27°9	27°9	32°1	33°3	31°4	27°2	26°9	32°1	31°3	32°8	26°5	26°0
22	30	32°5	31°8	29°2	27°7	28°2	32°7	32°9	30°6	26°8	27°2	32°7	33°9	31°9	26°0	26°3
23	0	32°6	31°2	28°7	27°6	28°7	32°9	32°4	30°0	26°7	27°5	33°0	33°5	31°1	25°8	26°7
23	30	32°5	30°6	28°2	27°7	29°2	32°9	31°7	29°4	26°6	28°2	33°3	32°8	30°4	25°7	27°2
24	0	32°2	29°9	27°9	27°9	29°9	32°7	31°1	29°0	26°8	28°8	33°2	32°2	29°9	25°7	27°8

Future Point

Houses Division

Distance between the houses according to the Semi-arc (Placidus) system

Sid. Time		Latitude 19° N					Latitude 23° N					Latitude 25° 19' N				
		10th-11th	11th-12th	12th-Asc	Asc-2nd	2nd-3rd	10th-11th	11th-12th	12th-Asc	Asc-2nd	2nd-3rd	10th-11th	11th-12th	12th-Asc	Asc-2nd	2nd-3rd
0	0	33°.7	33°3	30°.8	24°.6	26°.8	34°.1	34°.1	31°.4	23°.8	26°.1	34°	35°	32°	23°	26°
0	30	33.6	32.5	30.2	24.8	27.5	34.0	33.4	30.7	24.0	26.8	34	34	31	24	26
1	0	33.3	31.9	29.8	25.1	28.2	33.8	32.6	30.2	24.3	27.5	34	33	31	23	27
1	30	32.9	31.3	29.5	25.5	28.8	33.4	32.0	29.8	24.7	28.2	34	32	30	24	28
2	0	32.3	30.7	29.3	26.0	29.5	32.9	31.4	29.5	25.2	28.9	33	32	30	24	29
2	30	31.8	30.3	29.2	26.6	30.0	32.4	30.9	29.3	25.7	29.4	33	31	29	26	29
3	0	31.3	30.0	29.2	27.2	30.4	31.9	30.5	29.2	26.3	29.9	32	31	29	26	30
3	30	30.9	29.9	29.3	27.7	30.6	31.5	30.3	29.2	26.9	30.2	32	31	29	26	30
4	0	30.6	29.8	29.3	28.2	30.8	31.1	30.2	29.1	27.4	30.4	32	30	29	27	30
4	30	30.3	29.9	29.4	28.6	30.8	30.9	30.2	29.1	27.9	30.5	31	31	29	27	30
5	0	30.1	30.1	29.5	29.0	30.7	30.7	30.2	29.1	28.3	30.0	31	31	28	28	31
5	30	30.1	30.2	29.5	29.3	30.5	30.7	30.3	29.0	28.6	30.5	31	31	28	28	31
6	0	30.2	30.3	29.4	29.4	30.3	30.7	30.4	28.9	28.9	30.4	31	31	28	28	31
6	30	30.4	30.5	29.3	29.5	30.2	30.9	30.5	28.6	29.0	30.3	31	31	28	28	31
7	0	30.7	30.7	29.0	29.5	30.0	31.1	30.6	28.3	29.1	30.2	31	31	28	28	31
7	30	31.0	30.8	29.6	29.4	29.9	31.4	30.5	27.9	29.1	30.2	32	30	27	29	31
8	0	31.3	30.8	28.2	29.3	29.8	31.8	30.4	27.4	29.1	30.2	32	30	27	29	30
8	30	31.6	30.6	27.7	29.3	29.9	31.9	30.2	26.9	29.2	30.3	32	30	26	29	31
9	0	31.9	30.4	27.2	29.2	30.0	32.2	29.9	26.3	29.2	30.5	32	30	26	29	31
9	30	32.1	30.0	26.6	29.2	30.3	32.3	29.4	25.7	29.3	30.9	32	29	26	29	31
10	0	32.2	29.5	26.0	29.3	30.7	32.1	28.9	25.2	29.5	31.4	32	29	24	30	32
10	30	32.0	28.8	25.5	29.5	31.3	31.9	28.2	24.7	29.8	32.0	32	28	24	30	32
11	0	31.7	28.2	25.1	29.8	31.9	31.6	27.5	24.3	30.2	32.6	32	27	23	31	33
11	30	31.4	27.5	24.8	30.2	32.5	31.1	26.8	24.0	30.7	33.4	31	26	24	31	34
12	0	30.8	26.8	24.6	30.8	33.3	30.5	26.1	23.8	31.4	34.1	30	26	23	32	35
12	30	30.1	26.2	24.6	31.4	34.0	29.7	25.6	23.8	32.1	34.8	29	25	24	32	36
13	0	29.3	25.7	24.7	32.3	34.6	28.8	25.0	24.0	33.1	35.5	29	24	24	33	36
13	30	28.5	25.3	25.0	33.2	35.2	28.0	24.6	24.3	34.1	36.0	28	24	24	34	37
14	0	27.3	25.0	25.6	34.2	35.2	28.0	24.6	24.3	34.1	36.0	28	24	24	34	37
14	30	26.9	24.9	26.3	35.1	35.4	26.3	24.2	25.7	36.3	36.2	26	23	26	37	37
15	0	26.2	24.9	27.3	36.1	35.2	25.6	24.3	26.8	37.3	35.8	25	24	27	37	37
15	30	25.7	25.2	28.4	36.8	34.6	25.1	24.5	28.1	38.1	35.2	25	24	28	39	35
16	0	25.3	25.6	29.8	37.3	33.7	24.7	25.0	29.6	38.6	34.1	24	25	29	40	34
16	30	25.1	26.2	31.1	37.4	32.8	24.6	25.6	31.2	38.7	32.9	24	25	32	39	33
17	0	25.1	27.0	32.7	37.1	31.5	24.4	26.6	33.0	38.4	31.6	24	26	33	40	31
17	30	25.8	28.0	34.0	36.5	30.3	24.6	27.6	34.7	37.5	30.2	24	27	35	38	30
18	0	25.5	29.1	35.4	35.4	29.1	24.9	28.8	36.3	36.3	28.8	25	28	37	37	28
18	30	26.0	30.3	36.5	34.0	28.0	25.4	28.8	36.3	36.3	28.8	25	28	37	37	28
19	0	26.6	31.5	37.1	32.7	27.0	26.0	31.6	38.4	33.0	26.6	26	31	40	33	26
19	30	27.4	32.8	37.4	31.1	26.2	27.0	32.9	38.7	31.2	25.6	27	33	39	32	25
20	0	28.8	33.7	37.3	29.8	25.6	28.0	34.1	38.6	29.6	25.0	28	34	40	29	25
20	30	29.3	34.6	36.8	28.4	25.2	29.0	35.2	38.1	28.1	24.5	29	35	39	28	34
21	0	30.3	35.2	36.1	27.3	24.9	30.2	35.8	37.3	26.8	24.3	30	37	37	27	24
21	30	31.4	35.4	35.1	26.3	24.9	31.3	36.2	36.3	25.7	24.2	31	37	37	26	23
22	0	32.5	35.4	34.2	25.6	25.0	32.2	36.3	35.2	24.9	24.3	32	37	36	25	23
22	30	32.9	35.1	33.2	25.0	25.3	33.0	36.0	31.1	24.3	24.6	33	37	34	24	24
23	0	33.4	34.6	32.3	24.7	25.7	33.6	35.5	33.1	24.0	25.0	34	36	33	24	24
23	30	33.7	34.0	31.4	24.6	26.2	34.0	34.8	32.1	23.8	25.6	34	36	32	24	25
24	0	33.7	33.3	30.8	24.6	26.8	34.1	34.1	31.4	23.8	26.1	34	25	32	23	26

Future Point

Distance between the houses according to the Semi-arc system

Sid. Time	10th House		Latitude 35° N					Latitude 35° N					Latitude 40° N				
	Sayana	Niryana	10th-11th	11th-12th	12th-Asc	Asc-2nd	2nd-3rd	10th-11th	11th-12th	12th-Asc	Asc-2nd	2nd-3rd	10th-11th	11th-12th	12th-Asc	Asc-2nd	2nd-3rd
0 0	0.0	11ˢ 7°0	35°	35°	32°	23°	25°	36°	37°	33°	21°	24°	36°	39°	33°	20°	23
0 30	8.2	11 15.2	35	35	31	23	26	37	35	32	22	24	37	37	32	20	24
1 0	16.3	11 23.3	35	34	31	23	27	37	34	31	22	25	37	36	31	21	24
1 30	24.3	0 1.3	34	33	30	24	27	36	34	30	23	26	36	36	30	21	25
2 0	32.2	0 9.2	34	32	30	24	28	36	33	29	23	27	36	34	30	22	26
2 30	39.9	0 16.9	33	32	29	25	29	35	33	29	23	28	36	33	29	22	27
3 0	47.5	0 24.5	33	31	29	25	29	35	32	29	24	28	35	33	29	22	28
3 30	54.8	1 1.8	32	31	29	26	30	35	31	29	24	29	35	32	28	23	29
4 0	62.1	1 9.1	32	31	29	26	30	34	31	28	26	29	34	32	28	24	29
4 30	69.2	1 16.2	32	31	29	27	30	34	31	27	27	29	34	31	28	24	30
5 0	76.2	1 23.2	32	31	29	27	30	34	30	27	28	29	34	31	27	25	30
5 30	83.1	2 0.1	31	30	28	28	30	34	30	27	27	30	34	30	27	26	30
6 0	90.0	2 7.0	31	30	28	28	30	33	30	27	27	30	33	31	26	26	31
6 30	96.9	2 13.9	32	30	28	28	30	32	30	27	27	30	33	30	26	27	30
7 0	103.8	2 20.8	32	30	27	29	31	32	29	28	27	30	33	30	25	27	31
7 30	110.8	2 27.8	32	30	27	29	31	32	29	27	27	31	33	30	24	28	31
8 0	117.9	3 4.9	32	30	26	29	31	32	29	26	28	31	33	29	24	28	32
8 30	125.2	3 12.2	32	30	26	29	31	32	29	24	29	31	33	29	23	28	32
9 0	132.5	3 19.5	32	29	25	29	31	32	28	24	29	32	33	28	22	29	38
9 30	140.1	3 27.1	32	29	25	29	32	32	28	23	29	33	33	27	22	29	33
10 0	147.8	4 4.8	32	28	24	30	32	32	27	23	29	33	32	26	22	30	34
10 30	155.7	4 12.7	32	27	24	30	33	31	26	23	30	34	32	25	21	30	36
11 0	163.7	4 20.7	31	27	23	31	31	31	25	22	31	34	31	24	21	31	30
11 30	171.8	4 28.8	31	26	23	31	35	30	24	22	32	35	30	24	20	32	37
12 0	180.0	5 7.0	30	25	23	32	35	29	24	21	33	37	29	23	20	33	39
12 30	188.2	5 15.2	29	25	23	33	36	28	24	21	34	37	28	22	20	35	39
13 0	196.3	5 23.3	28	24	23	34	37	28	23	21	35	38	27	21	20	37	40
13 30	204.3	6 1.3	27	24	23	35	37	27	22	21	37	39	26	21	20	38	41
14 0	212.2	6 9.2	26	23	24	37	37	26	21	23	38	39	24	21	21	41	41
14 30	219.9	6 16.9	26	23	25	38	37	24	22	23	40	40	23	21	22	43	40
15 0	227.5	6 24.5	25	23	26	39	37	24	22	25	42	39	23	20	24	44	40
15 30	234.8	7 1.8	24	24	28	40	36	23	22	26	44	38	22	21	25	46	39
16 0	242.1	7 9.1	24	24	29	41	35	22	23	29	44	35	21	22	28	47	36
16 30	249.2	7 16.2	24	25	31	41	33	22	24	31	45	34	21	23	30	47	34
17 0	256.2	7 23.2	24	26	33	40	32	22	25	34	44	32	21	24	24	46	32
17 30	263.1	8 0.1	24	27	35	39	30	23	26	37	43	29	21	25	38	44	29
18 0	270.0	8 7.0	24	28	37	37	28	23	27	40	40	27	22	27	41	41	27
18 30	276.9	8 13.9	25	30	39	35	27	22	29	43	37	26	23	29	44	38	25
19 0	283.8	8 20.8	25	32	40	33	26	23	32	44	34	25	23	32	46	34	24
19 30	290.8	8 27.8	26	33	41	31	25	24	34	45	31	24	25	34	47	30	23
20 0	297.9	9 4.9	28	35	41	29	24	27	35	44	29	23	26	36	47	28	22
20 30	305.2	9 12.2	29	36	40	28	24	27	38	44	26	22	27	39	46	25	21
21 0	312.5	9 19.5	30	37	39	26	23	28	39	42	25	22	29	40	44	24	20
21 30	320.1	9 27.1	31	37	38	25	23	31	40	40	28	22	31	40	43	22	21
22 0	327.8	10 4.8	32	37	37	24	23	33	39	38	23	21	32	41	41	21	21
22 30	335.7	10 12.7	33	37	35	23	24	34	39	37	21	22	34	41	38	20	21
23 0	343.7	10 20.7	34	37	34	23	24	35	38	35	21	23	35	40	37	20	21
23 30	351.8	10 28.8	34	36	33	23	25	36	37	34	21	24	36	39	35	20	22
24 0	360.0	11 7.0	35	35	32	23	25	36	37	33	21	24	36	39	33	20	23

Future Point

Distance between the houses according to the Semi-arc system

Sid. Time	10th House		Latitude 45° N					Latitude 51° 32' N					Latitude 60° N				
	Sayana	Niryana	10th-11th	11th-12th	12th-Asc	Asc-2nd	2nd-3rd	10th-11th	11th-12th	12th-Asc	Asc-2nd	2nd-3rd	10th-11th	11th-12th	12th-Asc	Asc-2nd	2nd-3rd
0 0	0.0	11ˢ 7°0	37°	41°	34°	18°	22°	39°	43°	35°	15°	21°	43°	49°	33°	13°	17°
0 30	8.2	11 15.2	38	39	32	19	23	39	42	33	16	21	44	47	30	14	18
1 0	16.3	11 23.3	38	38	31	19	23	39	41	31	17	22	45	44	29	14	19
1 30	24.3	0 1.3	38	36	31	19	25	39	39	30	18	23	45	41	28	15	20
2 0	32.2	0 9.2	37	36	29	21	25	39	38	29	18	24	45	39	27	16	21
2 30	39.9	0 16.9	37	34	29	21	26	39	36	28	19	25	44	38	26	16	22
3 0	47.5	0 24.5	37	33	29	21	27	39	34	28	20	25	44	36	25	17	23
3 30	54.8	1 1.8	36	33	28	22	27	38	34	27	20	27	43	34	25	18	24
4 0	62.1	1 9.1	36	32	27	23	28	38	32	27	21	27	42	34	23	19	25
4 30	69.2	1 16.2	35	32	27	23	29	37	32	26	22	28	42	32	23	19	27
5 0	76.2	1 23.2	35	31	26	25	29	37	31	25	23	29	41	31	23	19	28
5 30	83.1	2 0.1	35	30	26	25	30	36	31	25	23	29	40	30	32	21	28
6 0	90.0	2 7.0	34	31	25	25	31	36	30	24	24	30	40	29	21	21	29
6 30	96.9	2 13.9	34	30	25	26	30	36	29	23	25	31	39	28	21	22	30
7 0	103.8	2 20.8	34	29	25	26	31	35	29	23	25	31	38	28	19	23	31
7 30	110.8	2 27.8	34	29	23	27	32	35	28	22	26	32	87	27	19	23	32
8 0	117.9	3 4.9	34	28	23	27	32	35	27	21	27	32	37	25	19	23	34
8 30	125.2	3 12.2	34	27	22	28	33	34	27	20	27	34	36	24	18	25	34
9 0	132.5	3 19.5	33	27	21	29	33	34	25	20	28	34	35	23	17	25	36
9 30	140.1	3 27.1	33	26	21	29	34	33	25	19	28	36	34	32	16	26	38
10 0	147.8	4 4.8	32	25	21	29	36	32	24	18	29	38	32	21	16	27	30
10 30	155.7	4 12.7	31	25	19	31	36	31	23	18	30	39	31	20	15	28	41
11 0	163.7	4 20.7	31	23	19	31	38	30	22	17	31	41	29	19	14	29	44
11 30	171.8	4 28.8	29	23	19	32	39	29	21	16	33	42	27	18	14	30	47
12 0	180.0	5 7.0	28	22	18	34	41	27	21	15	35	43	25	17	13	33	49
12 30	188.2	5 15.2	27	21	18	36	42	26	19	16	37	44	34	16	12	35	52
13 0	196.3	5 23.3	26	20	18	38	43	25	18	16	39	46	22	15	12	37	55
13 30	204.3	6 1.3	25	19	19	40	43	23	18	16	41	48	20	14	12	41	57
14 0	212.2	6 9.2	23	20	19	42	44	22	17	16	45	48	18	14	11	45	60
14 30	219.9	6 16.9	22	19	21	45	43	21	17	16	49	47	17	12	12	52	58
15 0	227.5	6 24.5	21	20	21	48	41	20	17	17	53	45	15	13	11	60	56
15 30	234.8	7 1.8	21	19	24	50	39	19	17	20	56	42	14	12	13	69	50
16 0	242.1	7 9.1	20	20	26	52	37	18	18	22	60	39	13	13	14	78	43
16 30	249.2	7 16.2	20	21	29	52	34	18	19	26	60	35	13	13	17	85	35
17 0	256.2	7 23.2	24	26	33	40	32	22	25	34	44	32	21	24	24	46	32
17 30	263.1	8 0.1	20	24	39	47	29	18	23	38	55	27	13	15	38	78	22
18 0	270.0	8 7.0	20	26	44	44	26	18	25	47	47	24	13	18	19	59	18
18 30	276.9	8 13.9	21	29	47	39	24	19	27	55	38	23	14	22	78	38	15
19 0	283.8	8 20.8	22	32	50	34	22	20	31	59	32	20	15	28	86	25	13
19 30	290.8	8 27.8	24	34	52	29	21	22	35	60	26	19	17	35	85	17	13
20 0	297.9	9 4.9	25	37	52	26	20	23	39	60	22	18	19	43	78	14	13
20 30	305.2	9 12.2	27	39	50	24	19	26	42	56	20	17	22	50	69	13	12
21 0	312.5	9 19.5	29	41	48	21	20	28	45	53	17	17	25	56	60	11	13
21 30	320.1	9 27.1	30	43	45	21	19	30	47	49	16	17	29	58	52	12	12
22 0	327.8	10 4.8	32	44	42	19	20	32	48	45	16	17	32	60	45	11	14
22 30	335.7	10 12.7	34	43	40	19	19	34	48	41	16	18	36	57	41	12	14
23 0	343.7	10 20.7	35	43	38	18	20	36	46	39	16	18	39	55	37	12	15
23 30	351.8	10 28.8	36	42	86	18	21	38	44	37	16	19	41	52	35	12	16
24 0	360.0	11 7.0	37	41	34	18	22	39	43	35	15	21	43	49	33	13	17

अध्याय–2

कृष्णमूर्ति पद्धति

2.1 उद्देश्य और सिद्धांत

एक राशि में स्थित किसी शुभ/अशुभ ग्रह का दायरा काफी बड़ा अर्थात 30° होता है। कृष्णमूर्ति पद्धति में एक ऐसी प्रणाली का विकास किया गया है जिसमें किसी ग्रह का प्रभाव सिर्फ उसकी किसी राशि या भाव में स्थिति के आधार पर ही न होकर नक्षत्र, चरण और उप में उसकी स्थिति पर भी निर्भर है।

समस्त ग्रह बसंत संपात (Vernal Equinox) में निरयण पद्धति के अनुसार भ्रमण करते हैं जिससे भचक्र में उनके गोचर में परिणाम संशोधित हो जाते हैं। इस प्रकार मेष में गोचर प्रारंभ करने के बाद कोई ग्रह प्रथम 13°20' में अश्विनी नक्षत्र में भ्रमण करेगा, इसके बाद रेवती तक समस्त 27 नक्षत्रों में विचरण करेगा। रेवती में बुध प्रभावी रहेगा। प्रत्येक नक्षत्र में 13°20' का दायरा काफी विस्तृत होता है। इसमें अधिक सूक्ष्मता से विश्लेषण के लिए प्रत्येक नक्षत्र को विंशोत्तरी दशा में विभिन्न ग्रहों की दशा के काल के अनुपात में 9 भागों में विभाजित किया गया है जिन्हें उप कहते हैं।

सामान्यतः बृहस्पति, शुक्र, शुभ युति का बुध और शुक्लपक्ष के चंद्रमा को नैसर्गिक शुभ ग्रह समझा जाता है जबकि सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु अशुभ ग्रह हैं। कृष्णमूर्ति पद्धति में किसी ग्रह का शुभाशुभत्व उसकी उप में उपस्थिति और उप के स्वामी के अनुसार आंका जाता है।

2.2 उपस्वामी की गणना

अश्विनी नक्षत्र का स्वामी केतु है और इस नक्षत्र का विस्तार 13°20' है। इस दूरी को प्रत्येक ग्रह के लिए 9 भागों में केतु से प्रारंभ कर बांटते हैं। प्रत्येक ग्रह का आबंटित भाग उस ग्रह की विंशोत्तरी दशा की अवधि के अनुपात में होता है। ये भाग 'उप' कहलाते हैं। केतु की महादशा 120 वर्ष के जीवन में 7 वर्ष होती है। अतः केतु के नक्षत्र में केतु उप का काल अश्विनी की कुल अवधि 13°20' या 800' का $\frac{7}{120}$ भाग हुआ।

अतः केतु –केतु = $\frac{800 \times 7}{120}$ = 46 2/3' अर्थात अश्विनी में 0°46' 40"

और शुक्र 'उप'–केतु में = $\frac{800 \times 20}{120}$ = 133 1/3' = 2°13'20"

अतः शुक्र उप का विस्तार मेष में 0°46'40" से 3°00'00" तक होगा।

Future Point

उप स्वामी	अं.मि.सै.से	अं.मि.सै.तक
1. केतु	0°	0° 46' 40"
2. शुक्र	0° 46' 40"	3° 00' 00"
3. सूर्य	3° 0' 0"	3° 40' 00"
4. चंद्र	3° 40' 0"	4° 46' 40"
5. मंगल	4° 46' 40"	5° 33' 20"
6. राहु	5° 33' 20"	7° 33' 20"
7. गुरु	7° 33' 20"	9° 20' 00"
8. शनि	9° 20' 00"	11° 26' 40"
9. बुध	11° 26' 40"	13° 20' 00"

अध्याय के अंत में उपलब्ध सारणी से राशि स्वामी, नक्षत्रेश और उपस्वामी का ज्ञान सरलता से हो जाता है। अध्याय 1 की उदाहरण कुंडली के लिए विभिन्न भावों की स्थिति, नक्षत्र, उपस्वामियों आदि का विवरण निम्न है।

ग्रहों की स्थिति और उनके नक्षत्र

ग्रह	रा.अं.मि.सै.	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी
सूर्य	04रा 00° 01' 08"	पू. फाल्गुनी	शुक्र	केतु
चंद्र	10रा 23° 10' 14"	पू. भाद्रपद	गुरु	शनि
मंगल	07रा 04° 25' 32"	अनुराधा	शनि	शनि
बुध	05रा 20° 11' 00"	हस्त	चंद्र	केतु
गुरु	06रा 25° 51' 42"	विशाखा	गुरु	केतु
शुक्र	04रा 19° 15' 12"	पू. फाल्गुनी	शुक्र	राहु
शनि	10रा 12° 57' 19"	शतभिषा	राहु	शनि
राहु	08रा 27° 53' 00"	पूर्वाषाढ़ा	शुक्र	केतु
केतु	02रा 27° 53' 00"	पुनर्वसु	गुरु	केतु

द्वादश भावों के भावारंभ

भाव	रा.अं.मि.	भावारंभ राशीश	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी
1	0रा 19° 21'	मंगल	शुक्र	राहु
2	1रा 18° 14'	शुक्र	चंद्र	बुध
3	2रा 12° 39'	बुध	राहु	बुध
4	3रा 7° 19'	चंद्र	शनि	बुध
5	4रा 5° 10'	सूर्य	केतु	मंगल
6	5रा 10° 0'	बुध	चंद्र	चंद्र
7	6रा 19° 13'	शुक्र	राहु	मंगल
8	7रा 18° 14'	मंगल	बुध	बुध
9	8रा 12° 34'	गुरु	केतु	बुध
10	9रा 7° 19'	शनि	सूर्य	केतु
11	10रा 5° 10'	शनि	मंगल	सूर्य
12	11रा 10° 21'	गुरु	शनि	सूर्य

Future Point

2.3 ग्रह, नक्षत्र और राशियों की भूमिका

मान लीजिये किसी गोल कमरे के केंद्र में कोई प्रकाश स्रोत, बल्ब आदि स्थित है। कमरे में विभिन्न रंगों के 12 कांच अलग–अलग स्थान पर लगे हैं। कमरे के चारों ओर, बाहर एक बरामदा है। इस बरामदे में 27 कांच लगे हैं जिनमें कांच 1,10 और 19 का रंग समान है। कांच संख्या 2, 11, 20 का रंग भी समान है मगर 1, 10, 19 के रंग से भिन्न है। कांच संख्या 3, 12, 21 का रंग एक है मगर अन्य कांचों से भिन्न है। इस प्रकार 27 कांच 9 विभिन्न रंगों के हैं।

अगर कोई व्यक्ति गोल बरामदे के बाहर से अंदर के बल्ब पर नज़र डाले तो अलग–अलग रंग के कांच से देखने पर प्रकाश स्रोत का रंग अलग–अलग दिखाई देगा। इसी प्रकार से ग्रहों के प्रभाव राशीश या नक्षत्रेश के अनुसार बदल जाते हैं।

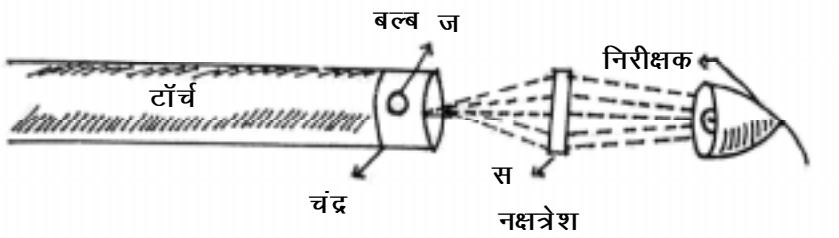

अगर हम किसी ग्रह की तुलना टॉर्च के प्रकाश से करें तो राशि और नक्षत्रों के प्रभाव के अनुसार प्रकाश का रंग बदल जाएगा। जिस प्रकार से रेल का गार्ड जब बत्ती दिखाता है तो उसका रंग सादा, लाल या हरा पृष्ठभाग में स्थित दर्पण के अनुसार बदल जाता है।

इसी प्रकार से, कल्पना करें कि बल्ब के पीछे स्थित दर्पण राशीश है। यह दर्पण सादे कांच जैसा हो सकता है, या प्रकाश को तीव्र रूप में परावर्तित कर सकता है या प्रकाश को मंद, प्रभावहीन कर सकता है। रंग की शक्ति और संशोधन बल्ब के पीछे स्थित दर्पण (परावर्तक) पर निर्भर है। यह परावर्तक संकेत देता है कि ग्रह उच्च का, बली है या नीच का, निर्बल है।

अगर टॉर्च के प्रकाश और अवलोकन करने वाले व्यक्ति के बीच में एक रंगीन कांच की स्लाइड लगा दी जाए तो उसका रंग नक्षत्रेश 'स' के अनुसार होगा जबकि 'ग' ग्रह (चित्र में बल्ब) है

अतः ग्रहों के प्रभाव, भचक्र में विभिन्न स्थितियों में, भिन्न भिन्न राशियों में, भिन्न भिन्न नक्षत्रों में टॉर्च के प्रकाश के समान संशोधित हो जाते हैं। परिणाम, अगर कांच के रंग मूल प्रकाश के समान न हों तो प्रकाश के मूल स्रोत से बिल्कुल भिन्न हो जाते हैं।

प्रो. कृष्णमूर्ति ने ज्ञात किया कि कोई भी ग्रह किसी भाव में अपनी स्थिति या किसी भाव का स्वामी होने के अनुसार ही फल नहीं देता है बल्कि जिस नक्षत्र में वह स्थित होता है, उसके अनुसार प्रभावी होता

Future Point

है। उन्होंने परंपरागत 9 ग्रहों, 27 नक्षत्रों, 12 राशियों और विंशोत्तरी दशा का ही सहारा लिया।

किसी भाव में स्थित ग्रह उस भाव से संबंधित मामलों में सक्रिय रहेगा, साथ ही जिस नक्षत्र में वह स्थित है, अगर उस नक्षत्र में अन्य ग्रह स्थित नहीं हो तो उसके अनुसार भी फल देगा। ये फल अवस्थित ग्रह के अनुसार घटेंगे या नहीं, यह उस ग्रह के निवास वाले नक्षत्र के उप पर निर्भर करेगा। अगर ग्रह के निवास वाले उप का स्वामी अपने निवास या स्वामित्व द्वारा अवस्थित ग्रह के नक्षत्रेश से सकारात्मक संबंध रखता हो तो निवासी ग्रह अपने कारकत्व वाले मामलों में शुभफल देता है।

अगर निवासी ग्रह किसी ऐसे ग्रह के उप में अवस्थित है जो ऐसे भावों में स्थित है या उनका अधिपति है जो (भाव) नक्षत्रेश के कारकत्व के विरुद्ध हैं तो फल शुभ नहीं रहता है।

उप के स्वामी की ऐसे भावों पर जिनका कारक नक्षत्रेश है, अशुभ दृष्टि नहीं होनी चाहिए। दृष्टि की गणना अंशों में दूरी के अनुसार होनी चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति में कोई ग्रह परंपरागत ज्योतिष के नियमों के अनुसार नैसर्गिक शुभ या अशुभ नहीं होता है बल्कि शुभ या अशुभ भावों में निवास या उनके स्वामित्व के कारण शुभ/अशुभ होता है।

प्रो. कृष्णमूर्ति की दृढ़ मान्यता थी कि कोई भी ग्रह पूर्णतः शुभ या पूर्णतः अशुभ नहीं होता है। न तो बृहस्पति शुभ है, न ही शनि अशुभ है।

शुभ भाव : 1, 2, 3, 6, 10, 11

अशुभ भाव : 4, 5, 7, 8, 9, 12

जिस प्रकार से किसी ग्रह पर उप स्वामी का प्रभाव पड़ता है उसी प्रकार से भावारंभों पर भावारंभ के अंशों के अनुसार उप स्वामियों का प्रभाव पड़ता है। प्रभाव की मात्रा भावारंभ के उप स्वामी पर निर्भर है। यह (उपस्वामी) न केवल उस भाव का कारक हो जहां पर भावारंभ स्थित है बल्कि इसे जिस मामले का परिणाम जानना है, उसका कारक होना आवश्यक है। प्रो. कृष्णमूर्ति ने इस बात पर बल दिया है कि प्रत्येक भाव और भावारंभ का मूल्यांकन जरूरी है।

प्रो. कृष्णमूर्ति ने प्रश्न कुंडली के निर्माण के लिए भावों का विभाजन प्लेसीडस पद्धति के अनुसार करने पर जोर दिया है।

कृष्णमूर्ति पद्धति के अनुसार क्योंकि लग्न और प्रत्येक भावारंभ की गति ग्रहों से तीव्र होती है, ये दोनों नक्षत्र और उप में निवास के अनुसार तीव्र परिवर्तनों का कारण बताने में अधिक सक्षम हैं। लग्न एक राशि में 2 घंटे रहता है मगर 1 नक्षत्र में केवल 50–60 मिनट ही रहता है।

कई घटनाएं 5–10 मिनट के अंतराल में ही घट जाती हैं अतः उप स्वामी की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। कुंडली के फलकथन में सटीकता लाने के लिए सभी भावों के राशीश, नक्षत्रेश और उप स्वामियों का ज्ञान लाभकारी रहता है।

कुंडली के विश्लेषण के लिए उपरोक्त वृहत विवरण को महत्व के अनुसार निम्न क्रम में रखा जा सकता

Future Point

है :

1. किसी नक्षत्र में स्थित ग्रह उस भाव का फल देगा जिसमें उस नक्षत्र का स्वामी स्थित है।
2. किसी नक्षत्र में स्थित ग्रह उस भाव के परिणाम बताने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है जिसमें उस नक्षत्र का स्वामी अवस्थित है।
3. किसी भाव में स्थित ग्रह उस भाव के परिणाम बताने में सक्षम है। उस भाव में स्थित ग्रह के नक्षत्र में स्थित ग्रह उस भाव के शुभ फल का संकेत देता है।
4. किसी भाव के भावारंभ की राशि का स्वामी जिस नक्षत्र में स्थित हो, उस नक्षत्र में स्थित ग्रह।
5. अंत में भावारंभ की राशि का स्वामी।

उपरोक्त तथ्य किसी घटना का आकलन करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

अतः निष्कर्षतः ग्रह मूल स्रोत है, नक्षत्र परिणाम की प्रकृति का द्योतक है और उप से पता चलता है कि घटना का परिणाम सकारात्मक रहेगा या नकारात्मक। जब तक उप लाभकारी नहीं हो, जन्मपत्रिका शुभ नहीं मानी जाएगी।

ध्यान दें : राहु और केतु छाया ग्रह हैं। छाया ग्रह सर्वप्रथम जिस ग्रह के साथ स्थित हैं, उसके अनुसार फल देते हैं। इसके बाद जिस नक्षत्र में ये छाया ग्रह स्थित हैं, उसके स्वामी के अनुसार फल देते हैं, इसके बाद उन ग्रहों के अनुसार जिनकी राहु/केतु पर दृष्टि है और सबसे अंत में जिस राशि में ये स्थित हैं, उसके स्वामी के अनुसार फल देते हैं।

उदाहरण कुंडली में भाव कारक

भाव	भाव में स्थित ग्रह के नक्षत्र में स्थित ग्रह	भाव में स्थित ग्रह	भावारंभ राशीश के नक्षत्र में स्थित ग्रह	भावारंभ राशीश
1	-	-	-	मंगल
2	-	-	शुक्र, सूर्य, राहु	शुक्र
3	-	केतु	-	बुध
4	-	-	बुध	चंद्र
5	शुक्र, सूर्य, राहु	सूर्य, शुक्र	-	सूर्य
6	-	बुध	-	बुध
7	चंद्र, गुरु, केतु	गुरु, मंगल	शुक्र, सूर्य, राहु	शुक्र
8	-	-	-	मंगल
9	शनि	राहु	चंद्र, गुरु, केतु	गुरु
10	-	-	मंगल	शनि
11	बुध मंगल	चंद्र, शनि	मंगल	शनि
12	-	-	चंद्र, गुरु, केतु	गुरु

Future Point

भावों के कारक

1	मंगल
2	सूर्य, शुक्र, राहु
3	बुध, केतु
4	चंद्र, बुध
5	सूर्य, शुक्र, राहु
6	बुध
7	सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु, शुक्र, राहु, केतु
8	मंगल
9	चंद्र, गुरु, शनि, राहु, केतु
10	मंगल, शनि
11	चंद्र, मंगल, बुध, शनि
12	चंद्र, गुरु, केतु

ग्रह किन किन भावों के कारक हैं

सूर्य	5	2	7		
चंद्र	7	11	9	12	4
मंगल	11	7	10	1	8
बुध	11	6	4	3	
गुरु	7	9	12		
शुक्र	5	2	7		
शनि	9	11	10		
राहु	5	9	2	7	
केतु	7	3	9	12	

अभ्यास

1. कृष्णमूर्ति पद्धति में संख्या 249 कैसे जानी जाती है ?
2. उप स्वामी क्या है ? किसी ग्रह के अंश $2^{रा}$ 5^{0} 6' हों तो उपस्वामी क्या होगा ?
3. कृष्णमूर्ति पद्धति में कारक की क्या महत्ता है ? ग्रह कब कारक से अधिक बली होता है ?
4. प्रभावी ग्रह क्या हैं ? उनका क्या महत्व है ?
5. संख्या 142 के लिए राशीश, नक्षत्रेश और उपस्वामी बतायें।
6. कृष्णमूर्ति पद्धति में उप स्वामी का क्या महत्व है ?
7. 249 संख्या पद्धति का निर्माण क्यों हुआ ?

Future Point

Future Point

उदाहरण जन्म कंडली

जन्म तिथि — जन्म समय — गुरुवार, स्थान — **गुना चित्रपक्षीय अयनांश** — **बीजांक 0**

अक्षांश — उत्तर रेखांश — पूर्व मध्य रेखांश — पूर्व समय संस्कार

फॉरच्युना तुला — लग्न मेष

ग्रह

ग्रह–व	राशि	अंश	राशेश	नक्षत्र अं.		प्रत्यं.
सूर्य	सिंह	25:58:24	सूर्य	शुक्र	केतु	शुक्र
चंद्र	कुंभ	23:10:17	शनि	गुरु	शनि	मंग
मंगल	वृश्चि.	04:25:51	मंग	शनि	शनि	शुक्र
बुध	कन्या	20:10:21	बुध	चंद्र	केतु	गुरु
गुरु	तुला	25:51:11	शुक्र	गुरु	केतु	शुक्र
शुक्र–व	सिंह	19:11:53	सूर्य	शुक्र	राहु	बुध
शनि–व	कुंभ	12:56:06	शनि	राहु	बुध	शुक्र
राहु–व	धनु	27:22:48	गुरु	सूर्य	चंद्र	चंद्र
केतु–व	मिथुन	27:22:48	बुध	गुरु	शुक्र	राहु
हर्ष–व	मेष	12:08:38	मंग	केतु	बुध	सूर्य
नेप	सिंह	21:31:56	सूर्य	शुक्र	गुरु	मंग
प्लू.	कर्क	03:59:51	चंद्र	शनि	शनि	केतु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	राशेश	नक्षत्र अं.		प्रत्यं.
1	मेष	19:19:02	मंग	शुक्र	राहु	केतु
2	वृष	18:16:27	शुक्र	चंद्र	बुध	शुक्र
3	मिथुन	12:49:52	बुध	राह	बुध	केतु
4	कर्क	07:20:59	चंद्र	शनि	केतु	केतु
5	सिंह	05:31:19	सूर्य	केतु	मंग	चंद्र
6	कन्या	10:11:23	बुध	चंद्र	चंद्र	राहु
7	तुला	19:19:02	शुक्र	राहु	मंग	राहु
8	वृश्चि.	18:16:27	मंग	बुध	बुध	शनि
9	धनु	12:49:52	गुरु	केतु	बुध	गुरु
10	मकर	07:20:59	शनि	सूर्य	केतु	राहु
11	कुंभ	05:31:19	शनि	मंग	सूर्य	शुक्र
12	मीन	10:11:23	गुरु	शनि	शुक्र	बुध

स्वामित्व

लग्न भावाधिपति	...:	मंगल
लग्न नक्षत्राधिपति	...:	शुक्र
लग्न अंतर स्वामी	...:	राहु
चंद्र भावाधिपति	.:	शनि
चंद्र नक्षत्राधिपति	...:	गुरु
चंद्र अंतर स्वामी	...:	शनि
वार स्वामी	.....:	गुरु

विंशोत्तरी

गुरु 12 व 2 मा 10 दि

शुक्र
22.11.1990
22.11.2010

शुक्र	24.03.1994
सूर्य	24.03.1995
चंद्र	22.11.1996
मंगल	22.01.1999
राहु	22.01.2001
गुरु	23.09.2003
शनि	22.11.2006
बुध	22.09.2009
केतु	22.11.2010

शुक्र–शनि
23.09.2003
22.11.2006

शनि	24.03.2004
बुध	03.09.2004
केतु	10.11.2004
शुक्र	22.05.2005
सूर्य	19.07.2005
चंद्र	23.10.2005
मंगल	29.12.2006
राहु	21.06.2006
गुरु	22.11.2006

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल
2	सूर्य, शुक्र
3	बुध, केतु
4	चद्र, बुध
5	सूर्य+शुक्र+राहु+
6	बुध
7	सूर्य–चंद्र, मं., गु.+शुक्र, केतु
8	मंगल
9	चंद्र–गुरु, शनि, राहु, केतु
10	मंगल, शनि
11	चंद्र, मंगल+बुध, शनि
12	चंद्र–गुरु, केतु

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2रा- 5वां + 7 वां
चंद्र	4था- 7वां, 9वां- 11वां, 12वां-
मंगल	1ला- 7वां, 8वां- 10वां- 11वां+
बुध	3रा- 4था- 6वां, 11वां,
गुरु	7वां+ 9वां, 12वां,
शुक्र	2रा, 5वां+ 7वां,
शनि	9वां, 10वां- 11वां,
राहु	5वां+ 9वां,
केतु	3रा, 7वां, 9वां- 12वां-

लग्न

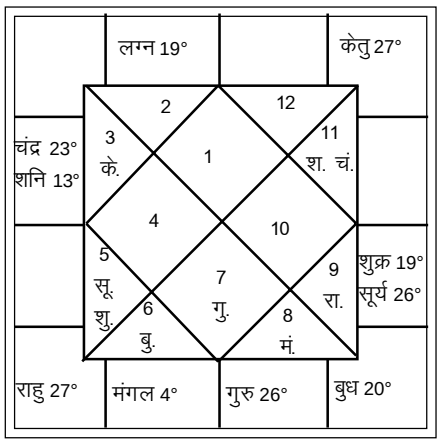

निरयण भाव चलित

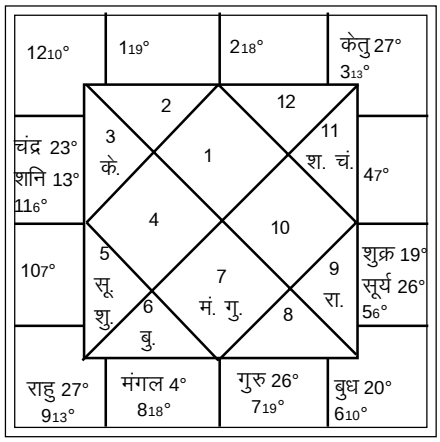

उदाहरण प्रश्न कंडली

जन्म तिथि — जन्म समय — मंगलवार, स्थान –**दिल्ली चित्रपक्षीय अयनांश** — **बीजांक 100**

अक्षांश — उत्तर रेखांश — पूर्व मध्य रेखांश — पूर्व समय संस्कार

फॉरच्युना मेष — लग्न वृषभ

ग्रह

ग्रह–व	राशि	अंश	राशेश	नक्षत्र	अं.	प्रत्यं.
सूर्य	कुंभ	16:50:29	शनि	राहु	शुक्र	शनि
चंद्र	तुला	15:57:54	शुक्र	राहु	शुक्र	मंग
मंग	धनु	22:03:57	गुरु	शुक्र	शनि	शनि
बुध	कुंभ	29:24:51	शनि	गुरु	सूर्य	शुक्र
गुरु -व	कन्या	23:47:32	बुध	मंग	मंग	बुध
शुक्र	कुंभ	9:22:12	शनि	राहु	गुरु	बुध
शनि-व	मिथुन	26:51:54	बुध	गुरु	शुक्र	शुक्र
राहु	मीन	29:37:48	गुरु	बुध	शनि	राहु
केतु	कन्या	29:37:48	बुध	मंग	शनि	राहु
हर्ष	कुंभ	13:03:26	शनि	राहु	बुध	शुक्र
नेप.	मकर	22:05:31	शनि	चंद्र	शुक्र	शनि
प्लू.	धनु	0:24:08	गुरु	केतु	केतु	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	राशेश	नक्षत्र	अं.	प्रत्यं.
1	सिंह	24:00:00	सूर्य	शुक्र	बुध	बुध
2	कन्या	21:21:46	बुध	चंद्र	शुक्र	राहु
3	तुला	21:42:47	शुक्र	गुरु	गुरु	राहु
4	वृश्चि.	23:27:01	मंग	बुध	मंग	राहु
5	धनु	25:03:28	गुरु	शुक्र	बुध	राहु
6	मकर	25:32:33	शनि	मंग	राहु	शुक्र
7	कुंभ	24:00:00	शनि	गुरु	बुध	बुध
8	मीन	21:21:46	गुरु	बुध	शुक्र	बुध
9	मेष	21:42:47	मंग	शुक्र	गुरु	राहु
10	वृष	23:27:01	शुक्र	मंग	मंग	राहु
11	मिथुन	25:03:28	बुध	गुरु	बुध	राहु
12	कर्क	25:32:33	चंद्र	बुध	राहु	शुक्र

स्वामित्व

लग्न भावाधिपति ...: शुक्र
लग्न नक्षत्राधिपति ...: मंगल
लग्न अंतर स्वामी ...: राहु
चंद्र भावाधिपति .: शुक्र
चंद्र नक्षत्राधिपति ...: राहु
चंद्र अंतर स्वामी ...: शुक्र
वार स्वामी .....: मंगल

विंशोत्तरी

राहु 5 व 5 मा 11 दि

राहु
01.03.2005
12.08.2010

राहु	00.00.0000
गुरु	00.00.0000
शनि	00.00.0000
बुध	00.00.0000
केतु	01.03.2005
शुक्र	28.02.2007
सूर्य	23.01.2008
चंद्र	24.07.2009
मंगल	12.08.2010

राहु - शुक्र
01.03.2005
28.02.2007

शुक्र	00.00.0000
सूर्य	00.00.0000
चंद्र	01.03.2005
मंगल	27.03.2005
राहु	08.09.2005
गुरु	01.02.2006
शनि	24.07.2006
बुध	27.12.2006
केतु	28.02.2007

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य
I2	चंद्र, बुध+ गुरु, शनि, राहु-केतु
3	मंगल, शुक्र
4	मंगल, गुरु +केतु+
5	बुध गुरु शनि
6	सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि
7	बुध, शनि, राहु
8	सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु
9	मंगल, गुरु, केतु
10	मंगल, शुक्र
11	बुध, शनि, राहु
12	चंद्र

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1ला- 6वां, 8वां,
चंद्र	2रा, 8वां, 12वां
मंगल	3रा- 4था, 6वां, 9वां 10वां
बुध	2रा+ 5वां, 7वां, 8वां 11वां
गुरु	2रा, 4था+ 5वां 8वां 9वां
शुक्र	3रा- 6वां 8वां 10वां
शनि	2रा, 5वां 6वां 7वां 8वां 11वां
राहु	2रा- 7वां 8वां 11वां
केतु	2रा, 4था+ 9वां

लग्न

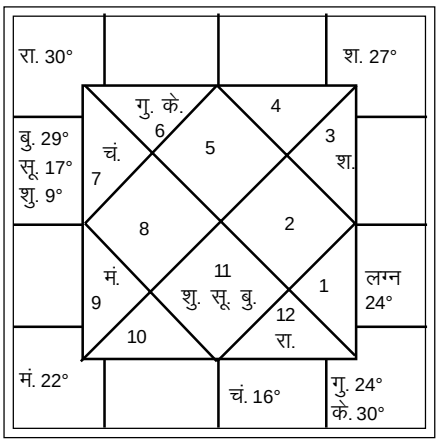

निरयण भाव चलित

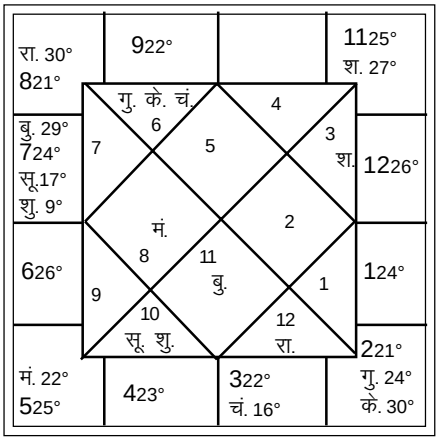

Future Point

कृष्णमूर्ति पद्धति की 249 संख्या सारणी

Future Point

मेष

नं.	राशीश	नक्षत्रेश	उप स्वामी	अं.मि.सै. से	अं.मि.सै. तक
1	मंगल	केतु	केतु	0.00.00	0.46.40
2	"	"	शुक्र	0.46.40	3.00.00
3	"	"	सूर्य	3.00.00	3.40.00
4	"	"	चंद्र	3.40.00	4.46.40
5	"	"	मंगल	4.46.40	5.33.20
6	"	"	राहु	5.33.20	7.33.20
7	"	"	गुरु	7.33.20	9.20.00
8	"	"	शनि	9.20.00	11.26.40
9	"	"	बुध	11.26.40	13.20.00
10	"	शुक्र	शुक्र	13.20.00	15.33.20
11	"	"	सूर्य	15.33.20	16.13.20
12	"	"	चंद्र	16.13.20	17.20.00
13	"	"	मंगल	17.20.00	18.6.40
14	"	"	राहु	18.6.40	20.6.40
15	"	"	गुरु	20.6.40	21.53.20
16	"	"	शनि	21.53.20	24.00.00
17	"	"	बुध	24.00.00	25.53.20
18	"	"	केतु	25.53.20	26.40.00
19	"	सूर्य	सूर्य	26.40.00	27.20.00
20	"	"	चंद्र	27.20.00	28.26.40
21	"	"	मंगल	28.26.40	29.13.20
22	"	"	राहु	29.13.20	30.00.00

वृष

नं.	राशीश	नक्षत्रेश	उप स्वामी	अं.मि.सै. से	अं.मि.सै. तक
23	शुक्र	सूर्य	राहु	0.00.00	1.13.20
24	"	"	गुरु	1.13.20	3.00.00
25	"	"	शनि	3.00.00	5.6.40
26	"	"	बुध	5.6.40	7.00.00
27	"	"	केतु	7.00.00	7.46.40
28	"	"	शुक्र	7.46.40	10.00.00
29	"	चंद्र	चंद्र	10.00.00	11.6.40
30	"	"	मंगल	11.6.40	11.53.20
31	"	"	राहु	11.53.20	13.53.20
32	"	"	गुरु	13.53.20	15.40.00
33	"	"	शनि	15.40.00	17.46.40
34	"	"	बुध	17.46.40	19.40.00
35	"	"	केतु	19.40.00	20.26.40
36	"	"	शुक्र	20.26.40	22.40.00
37	"	"	सूर्य	22.40.00	23.20.00
38	"	मंगल	मंगल	23.20.00	24.6.40
39	"	"	राहु	24.6.40	26.6.40
40	"	"	गुरु	26.6.40	27.53.20
41	"	"	शनि	27.53.20	30.00.00

मिथुन

नं.	राशीश	नक्षत्रेश	उप स्वामी	अं.मि.सै. से	अं.मि.सै. तक
42	बुध	मंगल	बुध	0.00.00	1.53.20
43	"	"	केतु	1.53.20	2.40.00
44	"	"	शुक्र	2.40.00	4.53.20
45	"	"	सूर्य	4.53.20	5.33.20
46	"	"	चंद्र	5.33.20	6.40.00
47	"	राहु	राहु	6.40.00	8.40.00
48	"	"	गुरु	8.40.00	10.26.40
49	"	"	शनि	10.26.40	12.33.20
50	"	"	बुध	12.33.20	14.26.40
51	"	"	केतु	14.26.40	15.13.20
52	"	"	शुक्र	15.13.20	17.26.40
53	"	"	सूर्य	17.26.40	18.6.40
54	"	"	चंद्र	18.6.40	19.13.20
55	"	"	मंगल	19.13.20	20.00.00
56	"	गुरु	गुरु	20.00.00	21.46.40
57	"	"	शनि	21.46.40	23.53.20
58	"	"	बुध	23.53.20	25.46.40
59	"	"	केतु	25.46.40	26.33.20
60	"	"	शुक्र	26.33.20	28.46.40
61	"	"	सूर्य	28.46.40	29.26.40
62	"	"	चंद्र	29.26.40	30.00.00

कर्क

नं.	राशीश	नक्षत्रेश	उप स्वामी	अं.मि.सै. से	अं.मि.सै. तक
63	चंद्र	गुरु	चंद्र	0.00.00	0.33.20
64	"	"	मंगल	0.33.20	1.20.00
65	"	"	राहु	1.20.00	3.20.00
66	"	शनि	शनि	3.20.00	5.26.40
67	"	"	बुध	5.26.40	7.20.00
68	"	"	केतु	7.20.00	8.6.40
69	"	"	शुक्र	8.6.40	10.20.00
70	"	"	सूर्य	10.20.00	11.00.00
71	"	"	चंद्र	11.00.00	12.6.40
72	"	"	मंगल	12.6.40	12.53.20
73	"	"	राहु	12.53.20	14.53.20
74	"	"	गुरु	14.53.20	16.40.00
75	"	बुध	बुध	16.40.00	18.33.20
76	"	"	केतु	18.33.20	19.20.00
77	"	"	शुक्र	19.20.00	21.33.20
78	"	"	सूर्य	21.33.20	22.13.20
79	"	"	चंद्र	22.13.20	23.20.00
80	"	"	मंगल	23.20.00	24.6.40
81	"	"	राहु	24.6.40	26.6.40
82	"	"	गुरु	26.6.40	27.53.20
83	"	"	शनि	27.53.20	30.00.00

Future Point

सिंह

नं.	राशीश	नक्षत्रेश	उप स्वामी	अं.मि.सै. से	अं.मि.सै. तक
84	सूर्य	केतु	केतु	0.00.00	0.46.40
85	"	"	शुक्र	0.46.40	3.00.00
86	"	"	सूर्य	3.00.00	3.40.00
87	"	"	चंद्र	3.40.00	4.46.40
88	"	"	मंगल	4.46.40	5.33.20
89	"	"	राहु	5.33.20	7.33.20
90	"	"	गुरु	7.33.20	9.20.00
91	"	"	शनि	9.20.00	11.26.40
92	"	"	बुध	11.26.40	13.20.00
93	"	शुक्र	शुक्र	13.20.00	15.33.20
94	"	"	सूर्य	15.33.20	16.13.20
95	"	"	चंद्र	16.13.20	17.20.00
96	"	"	मंगल	17.20.00	18.6.40
97	"	"	राहु	18.6.40	20.6.40
98	"	"	गुरु	20.6.40	21.53.20
99	"	"	शनि	21.53.20	24.00.00
100	"	"	बुध	24.00.00	25.53.20
101	"	"	केतु	25.53.20	26.40.00
102	"	सूर्य	सूर्य	26.40.00	27.20.00
103	"	"	चंद्र	27.20.00	28.26.40
104	"	"	मंगल	28.26.40	29.13.20
105	"	"	राहु	29.13.20	30.00.00

कन्या

नं.	राशीश	नक्षत्रेश	उप स्वामी	अं.मि.सै. से	अं.मि.सै. तक
106	बुध	सूर्य	राहु	0.00.00	1.13.20
107	"	"	गुरु	1.13.20	3.00.00
108	"	"	शनि	3.00.00	5.6.40
109	"	"	बुध	5.6.40	7.00.00
110	"	"	केतु	7.00.00	7.46.40
111	"	"	शुक्र	7.46.40	10.00.00
112	"	चंद्र	चंद्र	10.00.00	11.6.40
113	"	"	मंगल	11.6.40	11.53.20
114	"	"	राहु	11.53.20	13.53.20
115	"	"	गुरु	13.53.20	15.40.00
116	"	"	शनि	15.40.00	17.46.40
117	"	"	बुध	17.46.40	19.40.00
118	"	"	केतु	19.40.00	20.26.40
119	"	"	शुक्र	20.26.40	22.40.00
120	"	"	सूर्य	22.40.00	23.20.00
121	"	मंगल	मंगल	23.20.00	24.6.40
122	"	"	राहु	24.6.40	26.6.40
123	"	"	गुरु	26.6.40	27.53.20
124	"	"	शनि	27.53.20	30.00.00

तुला

नं.	राशीश	नक्षत्रेश	उप स्वामी	अं.मि.सै. से	अं.मि.सै. तक
125	शुक्र	मंगल	बुध	0.00.00	1.53.20
126	"	"	केतु	1.53.20	2.40.00
127	"	"	शुक्र	2.40.00	4.53.20
128	"	"	सूर्य	4.53.20	5.33.20
129	"	"	चंद्र	5.33.20	6.40.00
130	"	राहु	राहु	6.40.00	8.40.00
131	"	"	गुरु	8.40.00	10.26.40
132	"	"	शनि	10.26.40	12.33.20
133	"	"	बुध	12.33.20	14.26.40
134	"	"	केतु	14.26.40	15.13.20
135	"	"	शुक्र	15.13.20	17.26.40
136	"	"	सूर्य	17.26.40	18.6.40
137	"	"	चंद्र	18.6.40	19.13.20
138	शुक्र	"	मंगल	19.13.20	20.00.00
139	"	गुरु	गुरु	20.00.00	21.46.40
140	"	"	शनि	21.46.40	23.53.20
141	"	"	बुध	23.53.20	25.46.40
142	"	"	केतु	25.46.40	26.33.20
143	"	"	शुक्र	26.33.20	28.46.40
144	"	"	सूर्य	28.46.40	29.26.40
145	"	"	चंद्र	29.26.40	30.00.00

वृश्चिक

नं.	राशीश	नक्षत्रेश	उप स्वामी	अं.मि.सै. से	अं.मि.सै. तक
146	मंगल	गुरु	चंद्र	00.00.00	0.33.20
147	"	"	मंगल	0.33.20	1.20.00
148	"	"	राहु	1.20.00	3.20.00
149	"	शनि	शनि	3.20.00	5.26.40
150	"	"	बुध	5.26.40	7.20.00
151	"	"	केतु	7.20.00	8.6.40
152	"	"	शुक्र	8.6.40	10.20.00
153	"	"	सूर्य	10.20.00	11.00.00
154	"	"	चंद्र	11.00.00	12.6.40
155	"	"	मंगल	12.6.40	12.53.20
156	"	"	राहु	12.53.20	14.53.20
157	"	"	गुरु	14.53.20	16.40.00
158	"	बुध	बुध	16.40.00	18.33.20
159	"	"	केतु	18.33.20	19.20.00
160	"	"	शुक्र	19.20.00	21.33.20
161	"	"	सूर्य	21.33.20	22.13.20
162	"	"	चंद्र	22.13.20	23.20.00
163	"	"	मंगल	23.20.00	24.6.40
164	"	"	राहु	24.6.40	26.6.40
165	"	"	गुरु	26.6.40	27.53.20
166	"	"	शनि	27.53.20	30.00.00

Future Point

धनु

नं.	राशीश	नक्षत्रेश	उप स्वामी	अं.मि.सै. से	अं.मि.सै. तक
167	गुरु	केतु	केतु	0.00.00	0.46.40
168	"	"	शुक्र	0.46.40	3.00.00
169	"	"	सूर्य	3.00.00	3.40.00
170	"	"	चंद्र	3.40.00	4.46.40
171	"	"	मंगल	4.46.40	5.33.20
172	"	"	राहु	5.33.20	7.33.20
173	"	"	गुरु	7.33.20	9.20.00
174	"	"	शनि	9.20.00	11.26.40
175	"	"	बुध	11.26.40	13.20.00
176	"	शुक्र	शुक्र	13.20.00	15.33.20
177	"	"	सूर्य	15.33.20	16.13.20
178	"	"	चंद्र	16.13.20	17.20.00
179	"	"	मंगल	17.20.00	18.6.40
180	"	"	राहु	18.6.40	20.6.40
181	"	"	गुरु	20.6.40	21.53.20
182	"	"	शनि	21.53.20	24.00.00
183	"	"	बुध	24.00.00	25.53.20
184	"	"	केतु	25.53.20	26.40.00
185	"	सूर्य	सूर्य	26.40.00	27.20.00
186	"	"	चंद्र	27.20.00	28.26.40
187	"	"	मंगल	28.26.40	29.13.20
188	"	"	राहु	29.13.20	30.00.00

कुंभ

नं.	राशीश	नक्षत्रेश	उप स्वामी	अं.मि.सै. से	अं.मि.सै. तक
208	शनि	मंगल	बुध	0.00.00	1.53.20
209	"	"	केतु	1.53.20	2.40.00
210	"	"	शुक्र	2.40.00	4.53.20
211	"	"	सूर्य	4.53.20	5.33.20
212	"	"	चंद्र	5.33.20	6.40.00
213	"	राहु	राहु	6.40.00	8.40.00
214	"	"	गुरु	8.40.00	10.26.40
215	"	"	शनि	10.26.40	12.33.20
216	"	"	बुध	12.33.20	14.26.40
217	"	"	केतु	14.26.40	15.13.20
218	"	"	शुक्र	15.13.20	17.26.40
219	"	"	सूर्य	17.26.40	18.6.40
220	"	"	चंद्र	18.6.40	19.13.20
221	"	"	मंगल	19.13.20	20.00.00
222	"	गुरु	गुरु	20.00.00	21.46.40
223	"	"	शनि	21.46.40	23.53.20
224	"	"	बुध	23.53.20	25.46.40
225	"	"	केतु	25.46.40	26.33.20
226	"	"	शुक्र	26.33.20	28.46.40
227	"	"	सूर्य	28.46.40	29.26.40
228	"	"	चंद्र	29.26.40	30.00.00

मकर

नं.	राशीश	नक्षत्रेश	उप स्वामी	अं.मि.सै. से	अं.मि.सै. तक
189	शनि	सूर्य	राहु	0.00.00	1.13.20
190	"	"	गुरु	1.13.20	3.00.00
191	"	"	शनि	3.00.00	5.6.40
192	"	"	बुध	5.6.40	7.00.00
193	"	"	केतु	7.00.00	7.46.40
194	"	"	शुक्र	7.46.40	10.00.00
195	"	चंद्र	चंद्र	10.00.00	11.6.00
196	"	"	मंगल	11.6.00	11.53.20
197	"	"	राहु	11.53.20	13.53.20
198	"	"	गुरु	13.53.20	15.40.00
199	"	"	शनि	15.40.00	17.46.40
200	"	"	बुध	17.46.40	19.40.00
201	"	"	केतु	19.40.00	20.26.40
202	"	"	शुक्र	20.26.40	22.40.00
203	"	"	सूर्य	22.40.00	23.20.00
204	"	मंगल	मंगल	23.20.00	24.6.40
205	"	"	राहु	24.6.40	26.6.40
206	"	"	गुरु	26.6.40	27.53.20
207	"	"	शनि	27.53.20	30.00.00

मीन

नं.	राशीश	नक्षत्रेश	उप स्वामी	अं.मि.सै. से	अं.मि.सै. तक
229	गुरु	गुरु	चंद्र	0.00.00	0.33.20
230	"	"	मंगल	0.33.20	1.20.00
231	"	"	राहु	1.20.00	3.20.00
232	"	शनि	शनि	3.20.00	5.26.40
233	"	"	बुध	5.26.40	7.20.00
234	"	"	केतु	7.20.00	8.6.40
235	"	"	शुक्र	8.6.40	10.20.00
236	"	"	सूर्य	10.20.00	11.00.00
237	"	"	चंद्र	11.00.00	12.6.40
238	"	"	मंगल	12.6.40	12.53.20
239	"	"	राहु	12.53.20	14.53.20
240	"	"	गुरु	14.53.20	16.40.00
241	"	बुध	बुध	16.40.00	18.33.20
242	"	"	केतु	18.33.20	19.20.00
243	"	"	शुक्र	19.20.00	21.33.20
244	"	"	सूर्य	21.33.20	22.13.20
245	"	"	चंद्र	22.13.20	23.20.00
246	"	"	मंगल	23.20.00	24.6.40
247	"	"	राहु	24.6.40	26.6.40
248	"	"	गुरु	26.6.40	27.53.20
249	"	"	शनि	27.53.20	30.00.00

अध्याय–3

नियंत्रक ग्रह (Ruling Planets)

3.1 नियंत्रक ग्रह

किसी भाव के मामलों का आकलन करने के बाद घटना के घटने के समय को ज्ञात करते हैं। इस कार्य के लिए कृष्णमूर्ति पद्धति में नियंत्रक ग्रह पद्धति का सृजन किया गया है। नियंत्रक ग्रहों का उपयोग किसी घटना के घटने के समय को प्रश्न ज्योतिष या जन्म कुंडली की सहायता के बिना जानने के लिए किया जाता है।

नियंत्रक ग्रह निम्न हैं :

1. दिन (सोम, मंगल आदि) का स्वामी
2. चंद्र राशीश
3. चंद्रमा के नक्षत्र का स्वामी
4. लग्नेश
5. लग्न नक्षत्र का स्वामी
6. नियंत्रक ग्रहों की राशियों में स्थित राहु/केतु

छाया ग्रह अगर नियंत्रक ग्रह की राशियों के कारक हों तो उन्हें भी नियंत्रक ग्रह मानना चाहिए।

नियंत्रक ग्रहों का विश्लेषण करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए:

1. नियंत्रक ग्रह का बल इस क्रम में होता है:

   अ. लग्न का नक्षत्रेश
   आ. लग्नेश
   इ. चंद्र नक्षत्रेश
   ई. राशीश
   उ. दिवस का स्वामी

2. नियम 1 के प्रावधानों के बावजूद अगर कोई नियंत्रक ग्रह किसी अन्य ऐसे ग्रह के उप में हो जो किसी कार्य के विचार के लिए संबंधित भाव के लिए अरिष्टकारी हो (संबंधित भाव से 8 या 12वें भाव का कारक हो) तो यह नियंत्रक ग्रह प्रभावी नहीं होगा।
3. अगर चयनित नियंत्रक ग्रह किसी वक्री ग्रह के उप में स्थित है तो प्रभावी नहीं होगा।
4. नियंत्रक ग्रह अगर ऐसे उप में स्थित है जिसका स्वामी वक्री है तो वह नियंत्रक ग्रह प्रभावी नहीं होगा।

Future Point

3.1.1 उदाहरण :

प्रश्न था कि क्या जातक की मौलिक जन्मपत्री ठीक बनी हुई है। प्रश्न भारतीय समय रात्रि 11 बजे, 04 फरवरी 1976 को 8° 29' उ / 76° 59' पू. में किया गया।

मौलिक जन्म कुंडली

जन्म – 4.25 सुबह, स्थान – त्रिवेंद्रम, 15.12.1967

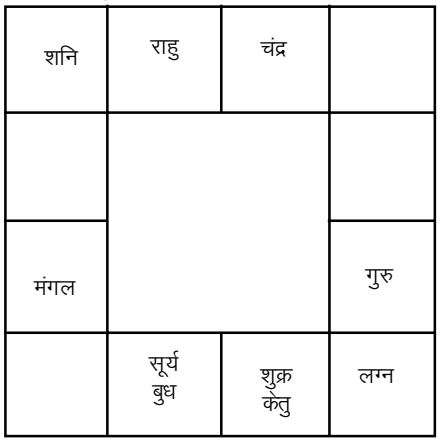

प्रश्न के समय की कुंडली

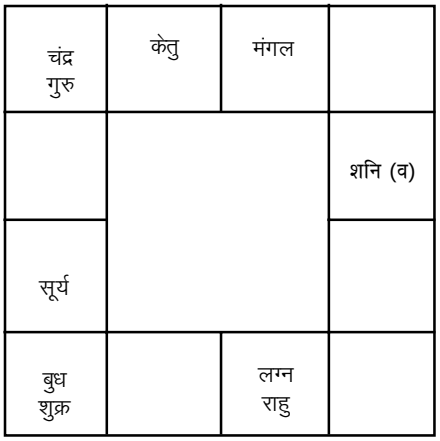

नियंत्रक ग्रह

4.2.1976 बुधवार, समय रात्रि 11 बजे भा. मा. समय स्थान 8° 29' उ / 76° 59'पू.

बुधवार	बुध
लग्न तुला 3°16'	शुक्र
लग्न नक्षत्र	मंगल
चंद्र राशि मीन	गुरु
चंद्र नक्षत्र	शनि

Future Point

मंगल की बुध और शुक्र पर दृष्टि है। गुरु चंद्र से युति में है। अतः मंगल, शुक्र और बुध के लिए कार्य करेगा जबकि चंद्रमा गुरु के लिए कार्य करेगा।

जब 4.25 बजे प्रातः (भा. मा. स.), त्रिवेंद्रम, 15.12.1967 के लिए लग्न की गणना की जाती है तो यह 0°8' वृश्चिक आता है। चूंकि लग्न का नक्षत्रेश मंगल है, यह नियंत्रक ग्रहों में सर्वाधिक बली है, अतः लग्न वृश्चिक ही होना चाहिए।

नियंत्रक ग्रहों के नियमों के अनुसार लग्न की वृश्चिक राशि, गुरु का नक्षत्र, चंद्रमा का उप और मंगल का उप उप होगा। अतः प्रश्नकुंडली का लग्न ठीक है। मौलिक जन्मपत्री में दिया गया कन्या लग्न गलत है। जातक की सही जन्मकुंडली निम्न होनी चाहिए

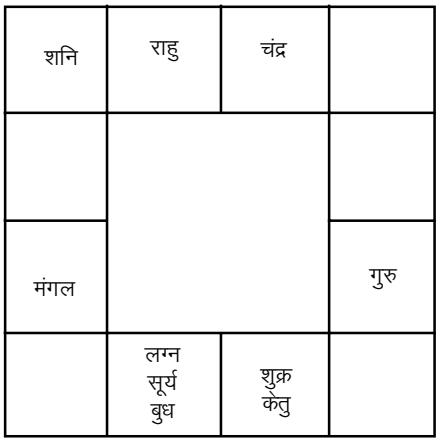

जन्म नक्षत्र कृत्तिका

जन्म समय शेष दशा : 1 वर्ष 6 मास 18 दिन

3.1.2 उदाहरण : पत्नी कब लौटेगी

प्रश्न समय का विवरण :

स्थान	बंगलोर
अक्षांश	12° 58' उत्तर
रेखांश	77° 36' पूर्व
तिथि	2 अप्रेल 1972
समय	प्रातः 9.23 बजे (भा. मा. स.)

Future Point

नियंत्रक ग्रह

प्रश्न के समय लग्न वृष 10° 9' (निरयण पद्धति) था।

दिवसेश	सूर्य
चंद्र राशीश	शुक्र (तुला)
चंद्र नक्षत्रेश	गुरु (विशाखा)
लग्न राशीश	शुक्र (वृष)
लग्न नक्षत्रेश	चंद्र (रोहिणी)

नियंत्रक ग्रह चंद्र, शुक्र, गुरु और सूर्य थे। यद्यपि सूर्य वक्री बुध के नक्षत्र में स्थित और बुध से युति में था मगर सूर्य को रद्द नहीं किया गया क्योंकि काम शीघ्र ही होना था।

जब लग्न वृष राशि में (स्वामी शुक्र), चंद्र नक्षत्र रोहिणी में, गुरु के उप और सूर्य के उप उप में हो अर्थात वृष में 15° 3' 34" और 15° 8' 34" के बीच में हो तो पत्नी लौट आएगी। अतः आगमन का समय स्थानीय समय 9 बजकर 23 मिनट 28 सैकंड होना चाहिए। इसमें बंगलौर के स्थानीय औसत समय और भारतीय मानक समय के बीच के अंतर 19 मिनट 36 सैकंड को जोड़ने पर आगमन का समय 9 बजकर 43 मिनट प्रातः (भा. मा. स.) नियत किया गया। पत्नी ने प्रातः 9.43 (भा. मा. स.) पर घर के दरवाजे पर दस्तक दी।

Future Point

अध्याय–4

कृष्णमूर्ति पद्धति विश्लेषण के मुख्य तथ्य

4.1 दृष्टियां

सभी ग्रह सातवें भाव पर दृष्टि डालते हैं जबकि इसके अतिरिक्त शनि 3, 10 पर, बृहस्पति 5, 9 पर और मंगल 4, 8 भावों पर भी दृष्टि डालते हैं। इन ग्रहों की ये दृष्टियां 7वी दृष्टि से भी अधिक बली होती हैं। भाव से भाव की दृष्टि मानने में समस्या यह है कि इसमें सूक्ष्मता नहीं आ पाती है क्योंकि एक राशि 30^0 की होती है। दो ग्रहों की दृष्टि जानने के लिए उनके अंशों का ज्ञान आवश्यक है। अतः अगर मंगल कन्या में 1^0 में और केतु धनु में 29^0 में स्थित हैं तो फल शुभ होता है क्योंकि दोनों के मध्य 118^0 का अंतर है जो ट्राइन दृष्टि के अधीनस्थ है। अतः एक ही भाव में स्थित ग्रहों की दृष्टियां भिन्न भिन्न हो सकती हैं और अंशों की दूरी के आधार पर शुभ भी हो सकती हैं और अशुभ भी।

कोई भी ग्रह उपरोक्त अंशों के नियम को छोड़कर 2, 6, 11 भावों पर दृष्टि नहीं डालता है।

अतः निष्कर्षतः अगर दो ग्रहों के मध्य शुभ दृष्टि है तो वे दोनों एक दूसरे से सहयोग करेंगे और दशानाथ और ग्रह द्वारा इंगित फल देंगे। अगर दशानाथ शुभ फलकारी है तो उससे शुभ दृष्टि में स्थित ग्रह शुभ फल देने में दशानाथ की सहायता करेगा। इसके विपरीत अगर ग्रह अशुभ दृष्टि में है तो वह दशानाथ की सहायता नहीं करेगा।

विभिन्न दृष्टियां

दृष्टि	स्थिति	फल
युति (Conjunction)	0^0 का अंतर	बहुत शुभ और बली
वियुति (Opposition)	180^0 का अंतर	अशुभ, ग्रह अगर नैसर्गिक या अन्य कारणों से अशुभ हैं तो तनाव का संकेत
ट्राइन (Trine)	120^0 का अंतर	बहुत शुभ और कल्याणकारी
स्क्वायर (Square)	90^0 का अंतर	अत्यधिक अशुभ
सैक्सटाइल (Sextile)	60^0 का अंतर	ट्राइन के समान शुभ
अर्ध स्क्वायर (Semi square)	45^0 का अंतर	कम अशुभ
अर्ध सैक्सटाइल (Semi Sextile)	30^0 का अंतर	कुछ शुभ
क्विनकंक्स (Quincunx)	150^0 का अंतर	विपरीत फल
क्विनटाइल (Quintile)	72^0 का अंतर	शुभ
बाई क्विनटाइल (Biquintile)	144^0 का अंतर	ट्राइन के समान बहुत शुभ

Future Point

सेसक्वीक्वाड्रेट(Sesquiquadrate)	135^0 का अंतर	45^0 के समान
विजिन्टाइल (Vigintile)	18^0 का अंतर	कुछ शुभ
क्विन्डेसाइल (Quindecile)	24^0 का अंतर	कुछ शुभ
डेसाइल सेमिक्विन्टाइल (Decil Semiquintile)	36^0 का अंतर	काफी शुभ
ट्रेडेसाइल (Tredecile)	108^0 का अंतर	शुभ
	54^0 का अंतर	कुछ शुभ
	162^0 का अंतर	कुछ शुभ

$22\frac{1}{2}^\circ$ से विभाज्य सभी दृष्टियां अशुभ होती हैं जबकि 18^0 और 30^0 से विभाज्य (90^0 और 150^0 को छोड़कर) दृष्टियां शुभ हैं।

बली होने के क्रम में युति सबसे बली, इसके बाद वियुति, ट्राइन, क्विनकंक्स, बाईक्विनटाइल, सेसक्वीक्वाड्रेट, स्क्वायर, सेक्सटाईल और क्विनटाइल का स्थान है। अन्य दृष्टियों का प्रभाव न्यून रहता है।

दृष्टिसीमा

गोचर में जब कोई ग्रह दूसरे ग्रह के निकट आता है और बाद में उससे दूर होता है तो वह दूरी जिसमें उस ग्रह की दृष्टि प्रभावी रहती है दृष्टि सीमा कहलाती है। विभिन्न ग्रहों के लिए दृष्टि सीमा का मान निम्न माना जाता है।

	निकट आते हुए	दूर जाते हुए
सूर्य	12°	17°
चंद्र	8°	12°
अन्य ग्रह	6°	8°

केवल तीव्रतर गति वाला ग्रह ही मंदगति ग्रह के निकट आएगा, फिर आगे निकल जाएगा और दूर हो जाएगा।

गति की तीव्रता के क्रम में चंद्रमा, बुध, शुक्र, सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस और नेप्च्यून का स्थान है। कभी–कभी शुक्र की गति बुध से अधिक हो जाती है। बुध जब सूर्य के निकट होता है तो इसकी गति शुक्र से अधिक तीव्र होती है मगर जब बुध सूर्योच्च स्थान पर होता है तो बुध की गति मंद हो जाती है।

विभिन्न दृष्टियों के प्रभाव क्षेत्र की सारणी निम्न प्रकार से हैं :

Future Point

दृष्टि	निकट आते हुए	निर्धारित अंश	दूर जाते हुए
(I) वियुति (Opposition)	172-180	180	180-!88
(2) ट्राइन (Trine)	114-120	120	120-126
(3) 126°	—	126	126-130
(4) स्क्वायर (Square)	84-90	90	90- 96
(5) सैक्सटाइल (Sextile)	54- 60	60	60 -66
(6) बाईक्विनटाइल (Biquintile)	141-144	144	144-147
(7) क्विनकंक्स (Quincunx)	148-150	150	150-153
(8) सेसक्वीक्साड्रेट (Sesquiquadrate)	132-135	135	135-138
(9) ट्रेडेसाइल (Tredecile)	106- 108	108	108- 110
(10) 54°	52-54	54	54- 56
(I I) अर्धस्क्वायर (Semi-square)	43- 45	45	45- 47
(12) डेसाइल (Decile)	34-36	36	36- 38
(13) सेमीसैक्सटाइल (Semi-sextile)	28 -30	30	30- 32
(14) विजिन्टाइल (Vigintile)	16- 18	18	18- 20

4.2 परस्पर निकटत्व

जब दो ग्रहों का एक दूसरे से दृष्टि संबंध हो और उनमें से एक वक्री हो तो दूसरा ग्रह उसकी निकट तीव्रतर गति से आएगा। इसे Mutual Application कहते हैं।

ग्रह की वक्री गति उसकी पृथ्वी की और सूर्य की गति में सापेक्ष परिवर्तन के कारण होती है। वास्तव में कोई भी ग्रह कभी भी अपनी धुरी पर उल्टा नहीं घूमता है। अगर ग्रह के रेखांश कम होते जाएं तो वह वक्री कहलाता है। सूर्य और चंद्रमा कभी भी वक्री नहीं होते जबकि राहु/केतु हमेशा वक्री रहते हैं।

4.3 वक्री ग्रहों का प्रभाव

वक्री ग्रहों के प्रभाव के बारे में विभिन्न मत हैं :

1. पश्चिमी ज्योतिर्विद मानते हैं कि वक्री शुभ ग्रह के शुभत्व में कमी हो जाती है जबकि अशुभ ग्रह वक्री होने पर पाप प्रभाव दुगुना हो जाता है। जब दो वक्री ग्रह परस्पर शुभ दृष्टि में हों तो परिणाम असफलताकारी और दुखद रहेंगे। वक्री ग्रहों की अशुभ दृष्टि पाप प्रभावों को प्रबल कर देती है।
2. हिंदू शास्त्रों के अनुसार वक्री ग्रह की युति में स्थित ग्रह का बल बढ़ जाता है। उच्च का वक्री ग्रह नीच का फल देता है जबकि नीचस्थ वक्री ग्रह उच्च का फलदायी होता है। वक्री ग्रह अवनति (depression) में या शत्रुक्षेत्री आदि होने पर भी बली रहता है।

जन्मपत्री में ग्रह के वक्री होने का कोई महत्व नहीं है मगर प्रश्न कुंडली में वक्री ग्रह के फल कृष्णमूर्ति पद्धति के अनुसार निम्न है :

Future Point

1. वक्री ग्रह अगर किसी मार्गी ग्रह के नक्षत्र में स्थित है तो इस बात का संकेत है कि कार्य बाधाओं को पार करने के बाद देरी से उस समय पूर्ण होगा जब वह मार्गी गति में उन अंशों पर पहुंचेगा जहां से वक्री गति आरंभ हुई थी।
2. वक्री ग्रह या स्वयं के नक्षत्र में स्थित वक्री ग्रह असफलता देता है।
3. वक्री ग्रह के नक्षत्र में मार्गी ग्रह स्थित हो तो सफलता नहीं मिलती है। इस नियम में राहु/केतु को नहीं लेना चाहिए।

4.4 अस्त ग्रह

सूर्य से 5^0 तक स्थित ग्रह पूर्णास्त कहलाता है। सूर्य से 10^0 तक स्थित ग्रह मध्यम अस्त माना जाता है जबकि 15^0 से अधिक दूरी होने पर अस्त नहीं होता है।

यह भी संभव है कि दो ग्रहों में सीधा दृष्टि संबंध न हो लेकिन दोनों के मध्य कोई अनुबंधक ग्रह स्थित होने पर दृष्टि संबंध स्थापित हो जाता है। उदाहरणार्थ अगर मंगल वृष में 5^0 पर और वृश्चिक में बृहस्पति 17^0 पर स्थित हों तो वे वियुति (Opposition) में नहीं हैं क्योंकि बृहस्पति दृष्टिसीमा 13^0 से 4^0 अधिक दूरी पर स्थित है। परंतु अगर चंद्रमा सिंह में 11^0 पर स्थित हो तो यह मंगल और बृहस्पति दोनों से स्क्वायर दृष्टि में है। इस प्रकार चंद्रमा अशुभ मंगल का प्रभाव शुभ बृहस्पति तक पहुंचा देगा।

चंद्रमा के कारण मंगल और बृहस्पति में वियुति दृष्टि स्थापित हो गई है।

4.5 उच्च एवं नीच ग्रह

कृष्णमूर्ति पद्धति में अगर कोई ग्रह उच्च का है मगर किसी नीच ग्रह के नक्षत्र में स्थित है तो अच्छा/बुरा करने की इसकी शक्ति सीमित हो जाती है। अगर ग्रह नीच का है मगर किसी उच्च के ग्रह के नक्षत्र में स्थित है तो उसका शुभत्व कई गुना बढ़ जाता है।

4.6 ग्रहण – ग्रहण के ग्रहों के फल

अगर कोई आकाशीय पिंड किसी अन्य आकाशीय पिंड के प्रकाश में अवरोध उत्पन्न कर देता है तो दर्शक दूरस्थ पिंड के प्रकाश को देखने में असफल हो जाता है। इस स्थिति में दूरस्थ पिंड ग्रहण वाला समझा जाता है। उसकी वृत्ताकर आकृति और तेज में दोष उत्पन्न हो जाता है।

सौरमंडल में सूर्य केंद्रस्थ है जिसके चारों ओर ग्रह घूमते हैं। प्रत्येक ग्रह की स्वयं की कक्षा होती है। पृथ्वी और चंद्रमा साथ–साथ सूर्य की परिक्रमा करते हैं। चंद्रमा जो पृथ्वी से 2,40,000 मील दूर है पृथ्वी का एक चक्कर 27.5 दिनों में लगाता है। चंद्रमा और पृथ्वी दोनों सूर्य का चक्कर वर्ष में 1 बार लगाते हैं।

बुध और शुक्र सूर्य के काफी निकट हैं। पृथ्वी से सूर्य 9 करोड़ 30 लाख मील दूर है। बुध सूर्य से 3 करोड़ 60 लाख मील दूर है। शुक्र सूर्य से 6 करोड़ 70 लाख मील दूर है।

अतः कभी–कभी पृथ्वी और सूर्य के बीच में चंद्रमा, बुध और शुक्र आ जाते हैं।

Future Point

मान लीजिए आप अपनी एक उंगली अपनी किसी एक आंख के निकट रखते हैं। दूसरी आंख बंद कर लें। 100 मीटर दूर खड़ा एक हाथी इस अंगली से दृष्टिगोचर नहीं हो पाता है। यह उंगली के आकार, उंगली की आंख से निकटता और हाथी की दूरी पर निर्भर है।

अभी आपकी आंख, उंगली और हाथी एक ही रेखा और धरातल में है। मान लीजिये हाथी को एक लिफ्ट से उसी स्थान पर उठा दिया जाता है। पहले हाथी उंगली के कारण दृष्ट नहीं था, ऊपर उठाने के कारण हाथी धीरे–धीरे दिखाई पड़ने लगता है।

चंद्रमा काफी बड़ा पिंड है। यह पृथ्वी के काफी निकट है। सूर्य बहुत दूर है। यह हाथी के समान विशालकाय है। अतः सूर्य और दर्शक के बीच जब चंद्रमा आ जाता है तो सूर्य अदृश्य हो जाता है।

धीरे–धीरे चंद्रमा की छाया सूर्य को ढक लेती है। यह सूर्य ग्रहण है। ग्रहण के समय चंद्रमा और सूर्य की क्रांति समान होती हैं। परंतु अगर क्रांति भिन्न है लेकिन दोनों के भोगांश समान हैं तो यह केवल अमावस्या होती है। इसी प्रकार से जब चंद्रमा और सूर्य के बीच में पृथ्वी आ जाती है तो पृथ्वी सूर्य के प्रकाश को चंद्रमा तक पहुंचने से रोक देती है और चंद्र ग्रहण हो जाता है।

सूर्य और चंद्र ग्रहण के समान अन्य ग्रहों में प्रकाश पहुंचने में बाधा आती है मगर क्योंकि दूर होने के कारण वे ग्रह बहुत प्रकाशवान नहीं होते हैं, उनके ग्रहण को देखना कठिन होता है।

बुध और शुक्र अंतर्ग्रह कहलाते हैं क्योंकि वे पृथ्वी की अपेक्षा सूर्य के अधिक निकट स्थित हैं तथा सूर्य और पृथ्वी के मध्य (जैसे चंद्रमा अमावस्या और सूर्य ग्रहण में सूर्य और पृथ्वी के मध्य आ जाता है) आ सकते हैं। चंद्र ग्रहण में चंद्रमा पृथ्वी द्वारा ढ़कने के कारण सूर्य के लिए अदृश्य हो जाता है मगर पृथ्वी कभी भी बुध और सूर्य या शुक्र और सूर्य के मध्य नहीं आ सकती है अतः पृथ्वी द्वारा कभी भी बुध ग्रहण या शुक्र ग्रहण नहीं हो सकता है।

4.6.1 ग्रहण अवस्था के ग्रह का फल (कृष्णमूर्ति पद्धति के अनुसार)

कोई ग्रह अगर ग्रहण वाले ग्रह के नक्षत्र में स्थित हो तो उसका फल इस प्रकार होगा। अगर कोई ग्रह किसी ग्रहणित ग्रह के नक्षत्र में स्थित हो और अगर यह ग्रह लग्न भावारंभ का उप स्वामी है तो उप स्वामी से संकेत मिलता है कि जातक को कारावास होगा, वह एकाकी जीवन व्यतीत करेगा, भय, बीमारी, चिंता से त्रस्त रहेगा, दाह संस्कार में भाग लेगा, धन की हानि होगी, पदच्युत हो सकता है, दुर्भाग्यशाली रहेगा।

द्वितीय भावारंभ का उपस्वामी : जन समुदाय में मूर्खतापूर्ण व्यवहार होगा, अविश्वसनीय होगा, परेशान करने वाले पत्र प्राप्त करेगा, बुरे पत्र अज्ञात नाम से लिखेगा, आंखों के रोग हो सकते हैं, अपशब्द बोलेगा, खूब धन खर्च करेगा, प्रशासक उससे अप्रसन्न रहेंगे।

तृतीय भावारंभ का उपस्वामी : भाई की मृत्यु, दुष्टों का परामर्श, घरेलू शत्रुओं के गुप्त षड्यंत्रों के कारण परेशानी, अपमान, पराजय और उसके कारण मानहानि।

Future Point

चतुर्थ भावारंभ का उपस्वामी : माता को संताप, घनिष्ठ मित्रों को बीमारी, भवन को खतरा, पशु की हानि से परेशानी, पानी और वाहन से खतरा।

पंचम भावारंभ का उपस्वामी : संतानहानि, मस्तिष्क दोष, धोखा, थकान, व्यर्थ भटकना, पेट के रोग, प्रशासन की अप्रसन्नता, शारीरिक कमजोरी।

षष्ठम भावारंभ का उपस्वामी : चोरों से हानि, भाग्यहीनता, हार, दुष्टकार्यों में रुचि, चापलूसी करेगा, लोग नफरत करेंगे, घोटालों में फंसेगा, घायल होगा।

सप्तम भावारंभ का उपस्वामी : दामाद को संताप, प्रियजन से बिछड़ना, विपरीत लिंग के व्यक्तियों से परेशानी और हानि, दुष्ट महिलाओं के साथ षड्यंत्र, गुप्तरोग, हमेशा भटकना।

अष्टम भावारंभ का उपस्वामी : अत्यधिक शोक, विवेक की कमी, अधिक वासना, ईर्ष्या, अचेतना, दरिद्रता, व्यर्थ भटकना, व्याधि, अपमान और मृत्यु।

नवम भावारंभ का उपस्वामी : गुरु, धर्मशास्त्री, पिता या भगवान की मूर्ति का कोप भाजक, भाग्यहीन, पत्नी और संतान को कष्ट, दुष्ट कार्यों में रुचि, आदरणीय परिवारजनों का निधन, दरिद्रता से परेशान।

दशम भावारंभ का उपस्वामी : निष्फल प्रयास, मानहानि, दुष्टता की ओर रुझान, स्थायी निवास का त्याग, अशुभ घटनाएं, बुरा जीवन, मुसीबतें।

एकादश भावारंभ का उपस्वामी : बुरे समाचार, बड़े भाई को कष्ट, संतान व्याधिग्रस्त, दरिद्रता, धोखा, कान के रोग।

द्वादश भावारंभ का उपस्वामी : विभिन्न रोग, अपमान, धन का लोप, कारावास, बंधन।

ये परिणाम जातक को उस समय प्रभावित करते हैं जब वह उपस्वामी की महादशा, अंतर्दशा आदि से गुज़रता है।

4.7 मूल्यांकन के सिद्धांत

जन्मपत्रिका के फल में दृष्टियों के प्रभाव से पर्याप्त संशोधन हो जाता है। जब तक दृष्टियों की सही गणना, अध्ययन और परिणाम का आकलन न हो, भविष्यकथन सटीक नहीं हो सकता है। वास्तव में, जुड़वां लोगों के बिल्कुल भिन्न जीवन का कारण भाव और कारक के मध्य दृष्टि द्वारा वैज्ञानिक ढंग से समझाया जा सकता है।

सटीक फलादेश के लिए कुछ उपयोगी संकेत यहां प्रस्तुत हैं :

1. सबसे पहले दृष्टि के बल का आकलन करें। शुभत्व के लिए 36^0 और डेसाइल दृष्टियां इतनी शक्तिशाली नहीं होती जितनी ट्राइन और 120^0 की दृष्टियां। इसी प्रकार अशुभत्व जानने के लिए अर्ध स्क्वायर और 45^0 की दृष्टियां स्क्वायर और 90^0 की दृष्टियों से कम हानिकारक होती है।
2. दृष्टि की गुणवत्ता कैसी है ? यह लाभकारी है या अशुभ ?

Future Point

3. दृष्टि बिल्कुल सही है या बहुप्रसारी ?

4. दृष्ट ग्रह के भाव के कार्यों पर ध्यान दें। क्या यह ग्रह अन्य ग्रह से युति में है? शुभ ग्रह (शुभ भाव का स्वामी) से युति बहुत शुभ और लाभकारी होती है।

   पापग्रह विशेषकर 6,8,12 के स्वामियों से युति, उनके नक्षत्र में स्थिति आदि के कारण बना संबंध बहुत अशुभ होता है। सबसे महत्वपूर्ण ग्रह के निवास का नक्षत्र है क्योंकि इस नक्षत्र के स्वामी के परिणाम सर्वाधिक प्रभावी रहते हैं।

5. दृष्ट ग्रह अपने स्वामित्व द्वारा क्या संकेत दे रहा है ? यद्यपि यह सत्य है कि प्रत्येक ग्रह के नैसर्गिक गुण होते हैं और वे प्रभावी होते हैं मगर ये नैसर्गिक गुण ग्रह के स्वामित्व के अनुसार बदल भी सकते हैं। उदाहरण के लिए बृहस्पति नैसर्गिक शुभ होते हुए भी पापभाव का स्वामी होने पर अशुभ प्रभाव देगा। इसी प्रकार से शुभ भाव का स्वामी होने पर शनि शुभ हो जाता है। सही मूल्यांकन के लिए ग्रह की स्थिति, वह किस भाव का स्वामी है और ग्रह के नैसर्गिक गुणों पर ध्यान देना चाहिए। नक्षत्र में निवास और नक्षत्रेश और भी अधिक महत्वपूर्ण हैं। शुभ ग्रह शुक्र और बृहस्पति बहुत सारे लोगों के लिए अत्यधिक हानिकारक साबित होते हैं जबकि अशुभ ग्रह मंगल, शनि आदि भाग्यवर्धक हो जाते हैं। ऐसा शुभ भावों और नक्षत्रों में निवास, स्वामित्व आदि के कारण होता है।

6. क्या दृष्ट ग्रह अपने भाव से 6, 8, 12 में स्थित है ? क्या यह अपने स्वामित्व के भाव के भावारंभ से शुभ दृष्टिकोण में है ?

   मान लीजिए किसी जातक का जब जन्म हुआ तो मेष के 29^0 का पूर्वोदय हो रहा था। तब लग्नेश मंगल हुआ। अगर मंगल कन्या में 2^0 में स्थित हो तो हिंदू पद्धति से लग्न से छठे भाव में स्थित हुआ, अतः अशुभ हुआ। वास्तव में मंगल लग्न से 123^0 दूर स्थित है अतः यह शुभ ट्राइन दृष्टि में है।

7. क्या दृष्ट ग्रह शुभ है ? उच्च ग्रह सबसे बली होता है। इसके बाद वर्गोत्तम ग्रह का स्थान आता है, तृतीय मूलत्रिकोण, चतुर्थ स्वक्षेत्री और पंचम मित्रक्षेत्री ग्रह होता है। शत्रुक्षेत्री, नीच का, अशुभ ग्रहों से संबंधित ग्रह निर्बल और दूषित समझा जाता है।

8. इसके बाद दृष्ट ग्रह की राशि पर ध्यान दें। क्या यह चर, स्थिर या द्विस्वभाव राशि है ? राशि का तत्व अग्नि, पृथ्वी, वायु या जल क्या है ? राशि सकारात्मक, नकारात्मक, फलप्रद, निष्फल आदि में से क्या है ? इसी प्रकार से ज्ञात करें कि दृष्टिपात करने वाला ग्रह स्वामित्व के कारण शुभ है या अशुभ, वह स्थानबली है या दूषित, निवास के अनुसार लाभकारी है या विपरीत और क्या यह अपने नैसर्गिक स्वभाव के अनुकूल राशि से दृष्टि डाल रहा है। साथ ही दृष्टि डालने वाला ग्रह केंद्र, पणफर या आपोक्लिम भाव में किस में स्थित है। 1, 4, 7, 10 भाव केंद्र कहलाते हैं, यहां पर स्थित ग्रह स्थानबल प्राप्त कर लेते हैं अर्थात् अपने प्रभाव के लिए पूर्ण बल से युक्त होते हैं। 2, 5, 8, 11 भाव पणफर कहलाते हैं, इनमें स्थित ग्रहों का बल मध्यम होता है। 3, 6, 9, 12 भाव ऑपोक्लिम कहलाते हैं। इनमें स्थित ग्रहों की शक्ति क्षीण हो जाती है। इस बात का ध्यान भी रखना चाहिए कि दृष्टिपात करने वाले ग्रह के निवास के नक्षत्र का स्वामी कौन है।

Future Point

अगर अध्ययनकर्ता जन्मपत्रिका के मूल तत्वों को ठीक से समझ ले और विश्लेषण की योग्यता विकसित करने में समर्थ हो जाए तो कृष्णमूर्ति पद्धति भावी घटना की प्रकृति और समय का आकलन करने में उत्कृष्ट है।

अभ्यास

1. कुंडली के अध्ययन के लिए कृष्णमूर्ति पद्धति के प्रयोग से क्या लाभ हैं ?
2. किसी विशेष घटना के लिए कौन से ग्रह मुख्य रूप से प्रभावी हैं, यह जानने के लिए महत्व के क्रम में पत्रिका के मूल तथ्य लिखें।
3. ग्रहों की दृष्टियों के मूल्यांकन के लिए उनमें अंशों के अंतर को क्यों आधार बनाते हैं? उदाहरण सहित लिखें।
4. विभिन्न दृष्टियों के बारे में उनके फल सहित वर्णन करें।
5. वक्री ग्रहों का क्या प्रभाव होता है ?
6. किसी ग्रह के बल को उच्च और नीच के ग्रह किस प्रकार से प्रभावित करते हैं ?
7. किसी ग्रहण वाले ग्रह का प्रभाव कृष्णमूर्ति पद्धति के अनुसार इसकी महादशा और अंतर्दशा में कैसा रहेगा ?

Future Point

अध्याय–5

जन्मपत्रिका अध्ययन में कृष्णमूर्ति पद्धति का उपयोग

Future Point

5.1 जन्मकुंडली के अध्ययन के लिए कृष्णमूर्ति पद्धति का उपयोग करते समय यह आवश्यक है कि प्रत्येक भाव के कारकत्व का विस्तार से ज्ञान हो। ध्यान रहे जन्म कुंडली अध्ययन में वक्री गति का कोई महत्व नहीं है।

नक्षत्र उन भावों के कारकत्व और मामलों का संकेतक है जिनमें उस नक्षत्र के स्वामी ग्रह का निवास है या जिनका वह ग्रह स्वामी है।

किसी ग्रह के वास के उप के स्वामी से पता चलता है कि उस भाव से संबंधित कार्यों में प्रगति होगी या निराशा हाथ लगेगी।

यह नियम सभी भावों के परिणामों पर लागू होता है। अगर लग्न में कोई ग्रह स्थित है या लग्नाधिपति का विचार करें, यदि कोई ग्रह या लग्नाधिपति लग्न में स्थित ग्रह या लग्नाधिपति के नक्षत्र में स्थित हो तो वह प्रथम भाव के मामलों का प्रतिनिधित्व करेगा। अगर उस नक्षत्र में स्थित ग्रह शुभ उप में स्थित है तो लग्न से संबंधित सब कार्यों में भाग्य चमकेगा। अगर उस नक्षत्र में स्थित ग्रह अशुभ उप में स्थित है तो नक्षत्रेश के फल उसके निवास और स्वामित्व के अनुसार कष्ट प्रदान करेंगे।

कृष्णमूर्ति पद्धति के अनुसार विश्लेषण करने के निम्न चरण हैं :

1. कुंडली बनाएं जिसमें ग्रह और उनके अंश अंकित हों।
2. 12 भावों के भावारंभ निर्धारित करें।
3. पूछे गये प्रश्न से संबंधित भावों का मूल्यांकन करें।
4. भाव से संबंधित कारकों को अध्याय–2 के अनुसार ज्ञात करें अर्थात
   अ. भावेश, इसका नक्षत्र और उप स्वामी
   आ. भाव में स्थित ग्रह के नक्षत्र में स्थित ग्रह
   इ. संबंधित भावों के कारक ग्रह
   ई. संबंधित भाव और उसके कारक पर विभिन्न दृष्टियों के प्रभाव को ज्ञात करें।
   दृष्टि डालने वाला ग्रह शुभ अंशों की दूरी पर है या अशुभ दूरी पर है ? क्या यह ग्रह वक्री है ?
5. कारकों को ज्ञात करने के बाद, संबंधित भाव में युति करने वाले ग्रहों का विचार करें।
6. अंत में उन दशा, अंतर्दशाओं का ज्ञान करें जब कारक ग्रह प्रभावी होंगे।

5.1.1 उदाहरण

शेष केतु दशा 0 वर्ष 5 मास 23 दिन। लग्नेश सूर्य है, लग्न में कोई ग्रह स्थित नहीं है। सूर्य के नक्षत्र कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढ़ हैं। इन नक्षत्रों में स्थित ग्रह प्रथम भाव के कार्यों का प्रतिनिधित्व करेंगे। अगर इन नक्षत्रों में कोई ग्रह स्थित नहीं है तो सूर्य लग्न के परिणामों का संकेतक होगा। यह इसी प्रकार से है जैसे किसी सचिव के अधीनस्थ 3 उपसचिव हों जिन्हें 3 कमरे सचिव के आदेशों का पालन करने के लिए दिये गये हों। अगर ये 3 कमरे खाली हों और कोई उपसचिव नहीं हो तो सचिव सारे कार्य करता है। अगर उपसचिव उपलब्ध हों तो सचिव उपसचिवों से भिन्न कुछ अन्य कार्य कर सकता है।

गुरु 8-27	9 0-30 चंद्र 12-25	10 1-30 राहु 23-23	11 1-30
8 28-30 7 8-04	29-1-1928 7-06 शाम 13-04 उत्तर 80-15 पूर्व		12 4-45
बुध 29-27 सूर्य15-40 6 0-30			लग्न 0-04 2 28-30
मंगल 14-59 शुक्र 7-53 5 1-30	शनि 23-37 केतु 23-23 6 1-30	3 0-30	

कुंडली में सूर्य के नक्षत्र में कोई ग्रह स्थित नहीं है। अतः लग्न के परिणाम सूर्य देगा। सूर्य चंद्रमा के नक्षत्र में स्थित है। चंद्रमा नवम भाव में स्थित है और 12वें भाव का स्वामी है। अतः सूर्य अधिकांशतः भाव 9 और 12 के मामलों का संकेतक रहेगा अर्थात लंबी यात्राएं, घर से दूर निवास, पिता की हानि, पिता की स्थायी संपत्ति और पिता से अलगाव।

सूर्य के निवास के उप पर ध्यान दें। सूर्य बृहस्पति के उप में स्थित है। देखें कि बृहस्पति 9वें भाव के लिए क्या परिणाम देगा ? बृहस्पति 12वें भाव के लिए क्या परिणाम देगा ? बृहस्पति शनि के नक्षत्र में स्थित है। क्योंकि शनि भाव 9 के लिए बाधक स्थान का अधिपति है, बृहस्पति पिता के लिए बाधा का संकेतक है। अतः अगर कोई नक्षत्र पिता का संकेतक है तो उस नक्षत्र में बृहस्पति का उप पिता के लिए खतरे का संकेतक है।

अतः नवम भावस्थ चंद्र के नक्षत्र और बृहस्पति के उप में स्थित सूर्य पिता के लिए बाधक होगा, पिता को खतरे का संकेतक है।

मंगल नवम भाव का स्वामी है। यह मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा नक्षत्रों का स्वामी है। मंगल के नक्षत्रों में राहु और बुध स्थित हैं। राहु मंगल के उप में स्थित है जो पिता की दीर्घायु का द्योतक है। बुध शनि के उप में स्थित है जो पिता के लिए बाधक है। अतः राहु शुभ और बुध अशुभ है।

पिता की आयु के लिए 9वें भाव से दूसरा और तीसरा भाव अशुभ है। दोनों का स्वामी शुक्र है। राहु नवम भाव से द्वितीय में स्थित है, मंगल शुक्र के नक्षत्र में है अतः यह अशुभ है। राहु के नक्षत्र में कोई ग्रह नहीं है। राहु मंगल के उप में स्थित है, अतः शुभ है।

अतः सूर्य, बुध और मंगल इस कुंडली में अशुभ हैं। शुक्र बृहस्पति के उप में स्थित है। शुक्र भी अशुभ है क्योंकि यह केतु के नक्षत्र में स्थित है जो 4 और 9 भावों का प्रतिनिधि है।

शुक्र 3, 9, 10 भावों का संकेतक है और पिता को खतरे का सूचक है।

जातक के पिता की सूर्य महादशा, बुध भुक्ति, शुक्र अंतर में जुलाई 1952 में मृत्यु हो गई।

5.1.2 उपरोक्त पत्रिका के चतुर्थ भाव पर ध्यान दें। यहां शनि और केतु अवस्थित हैं। इसका स्वामी मंगल

Future Point

है। अतः शनि, केतु और मंगल के नक्षत्रों में स्थित ग्रह चतुर्थ भाव के कार्यों के सूचक हैं। शुक्र केतु के नक्षत्र में, बृहस्पति शनि के नक्षत्र में और बुध मंगल के नक्षत्र में स्थित हैं और चतुर्थ भाव के कार्यों के सूचक हैं।

शुक्र बृहस्पति के उप में है जो मारक स्थान का अधिपति है। शुक्र चतुर्थ भाव से मारकस्थान में स्थित है।

बृहस्पति शुक्र के उप में स्थित है। यह पापी है। बुध शनि के उप में स्थित है। क्योंकि शनि केतु के साथ युति में लगभग समान अंशों में है और शनि चतुर्थ से अष्टम भाव के नक्षत्र में स्थित है, बुध पापी है, शनि भी पापी है।

शुक्र, बुध, मंगल, शनि, चंद्रमा आदि चतुर्थ भाव के कार्यकलापों के संकेतक हैं। उप के स्वामी से संकेत मिलेगा कि 4थे भाव के कार्यों में प्रगति होगी कि नहीं।

शुक्र चतुर्थ भाव से द्वितीय में, द्वितीयेश के उप में स्थित है। बुध चतुर्थ भाव से द्वितीय में स्थित ग्रह के नक्षत्र में स्थित है।

बृहस्पति के उप में स्थित शनि और केतु दोनों चतुर्थ भाव में स्थित होकर अशुभ हैं। अतः जातक की माता का देहांत शुक्र महादशा, बुध भुक्ति और शनि के अंतर में 27.4.47 को हो गया।

शुक्र पंचम भाव में अर्थात चतुर्थ से द्वितीय में स्थित है।

अतः मंगल स्वास्थ्य का संकेतक है और उसके नक्षत्र में अगर ग्रह स्थित हो तो उसकी दशा में मृत्यु देगा जो 4, 5, 6 भावों का उप है (5 और 10 भाव चतुर्थ भाव के लिए मारक स्थान हैं)। बुध मंगल के नक्षत्र में और चतुर्थ भाव के कारक शनि के उप में स्थित है।

अब हम जातक की माता की मृत्यु की तिथि का विश्लेषण करते हैं। यह 27.4.1947 थी जब शुक्र की महादशा (चतुर्थ भाव में स्थित ग्रह के नक्षत्र में और दशम भाव में स्थित ग्रह के उप में), बुध की भुक्ति में (चतुर्थ से द्वितीय भाव में स्थित ग्रह के नक्षत्र में और चतुर्थ में स्थित ग्रह के उप में) हुई जब शनि का अंतर चल रहा था। शनि अपने निवास के उप के आधार पर जीवन या मृत्यु का संकेतक है। शनि मंगल के उप में और दशमस्थ राहु के सूक्ष्म में स्थित है। राहु चतुर्थ से द्वितीय भावस्थ मंगल के नक्षत्र और उप में स्थित है।

निधन का दिन–शुक्रवार। नक्षत्र मूल था जहां दशानाथ स्थित था। बृहस्पति राशि, चतुर्थ भाव का कारक बृहस्पति शनि के नक्षत्र में और शुक्र के उप में स्थित है। शुक्र चतुर्थ भाव से द्वितीय भाव में स्थित है। निधन रात्रि में हुआ जब लग्न धनु, 15^0 पूर्वाषाढ़ में था।

5.1.3 संतान की मृत्यु : संतान की मृत्यु चंद्र महादशा, बृहस्पति भुक्ति और राहु अंतर में हुई। चंद्रमा केतु के नक्षत्र में और बुध के उप में स्थित है। केतु क्योंकि छायाग्रह है, यह अपने साथ युति वाले ग्रह का फल देगा। शनि पंचम से द्वितीय भाव का स्वामी है और पंचम से द्वादश भाव में स्थित है। अतः चंद्रमा पापी है क्योंकि यह छायाग्रह के नक्षत्र में स्थित है जो पंचम से द्वितीय भाव का प्रतिनिधि है और पंचम से सप्तम भाव के स्वामी (बुध) के उप में स्थित है जो पंचम से द्वितीय भाव में स्थित है।

Future Point

बृहस्पति शनि के नक्षत्र में स्थित है। शनि पंचम भाव से द्वितीय भाव का स्वामी होकर पंचम से द्वादश भाव में स्थित है। बृहस्पति शुक्र के उप में स्थित है। शुक्र पंचम भाव में स्थित है और पंचम से द्वादश में स्थित केतु के नक्षत्र में स्थित है। पंचम भाव के लिए शुक्र अशुभ ग्रह है। शुक्र के नक्षत्र और शुक्र के उप में स्थित मंगल भी अशुभ है। राहु शुक्र की राशि में मंगल के नक्षत्र और मंगल के उप में स्थित होकर अवश्य ही अशुभ है। अतः चंद्र महादशा, बृहस्पति भुक्ति और राहु का अंतर अशुभ समय है।

अब हम जीवन की कुछ शुभ घटनाओं पर प्रकाश डालते हैं :

5.1.4 विवाह : लग्न से 2, 7, 11 भावों का विश्लेषण करें। 2, 7, 11 भाव खाली हैं। 2 का स्वामी सूर्य है, 11 का स्वामी बुध है, 7 का स्वामी शनि है। शनि और केतु बुध के नक्षत्र में स्थित हैं। बृहस्पति शनि के नक्षत्र में स्थित है। केतु सप्तमेश से अधिक बली है। चंद्रमा और शुक्र केतु के नक्षत्र में स्थित हैं। सूर्य भी बली है क्योंकि सूर्य के नक्षत्र में कोई ग्रह स्थित नहीं है।

विवाह शुक्र महादशा, केतु भुक्ति, शुक्र अंतर और चंद्रमा की सूक्ष्मदशा में 6.7.1947 को श्रवण नक्षत्र में हुआ। शुक्र केतु के नक्षत्र में स्थित है। केतु शनि से अधिक बली है। शनि सप्तमेश है, सप्तम भाव खाली है। केतु 1, 11 के स्वामी बुध के नक्षत्र में स्थित है। ये दोनों भाव खाली हैं। चंद्रमा केतु के नक्षत्र में स्थित है। केतु सप्तमेश शनि से अधिक बली है। केतु को अधिकांशतः शनि के परिणाम देने हैं, उसके बाद मंगल के परिणाम देगा। चंद्रमा का नक्षत्र मंगल की राशि में नहीं है। अतः चंद्रमा के अधिपत्य वाले श्रवण नक्षत्र के शनि की राशि में होने पर विवाह हुआ।

सामान्यतः जब 4, 9, 11 भावों में शनि, केतु और द्वादशेश स्थित हों तो पारंपरिक ज्योतिष के अनुसार फलादेश किया जाता है कि जातक का शिक्षा में मन नहीं लगेगा। इस संदर्भ में विवाह का जिक्र नहीं किया जाता।

मगर कृष्णमूर्ति पद्धति के अनुसार शनि और केतु चतुर्थ भाव में एकादशेश बुध के नक्षत्र और 4, 9 के स्वामी मंगल के उप में स्थित होकर उच्च शिक्षा का संकेत दे रहे हैं।

प्रो. कृष्णमूर्ति के अनुसार अगर दशानाथ का संबंध 4 और 9 भावों से हो तो शिक्षा अच्छी होगी। चतुर्थ भाव में स्थित केतु के नक्षत्र के स्वामी शुक्र ने अपनी दशा में उत्तम शिक्षा प्रदान की। नवम भाव में स्थित चंद्र के नक्षत्र में स्थित सूर्य ने उच्च शिक्षा दी। क्योंकि चंद्रमा 12वें भाव का भी कारक है, चंद्र के नक्षत्र में स्थित सूर्य ने शिक्षा में रुकावट डाली और उसका अंत कर दिया। सूर्य महादशा, शनि भुक्ति और सूर्य अंतर में जातक ने दिसंबर, 1952 में मेडिकल कॉलेज में पढ़ाई पूरी करने के बाद शिक्षा छोड़ दी।

अभ्यास

1. कृष्णमूर्ति पद्धति द्वारा जन्म कुंडलियों के अध्ययन के लिए वांछित विभिन्न तथ्यों का वर्णन करें।
2. प्रातः 9.45 बजे 24.9.2004 को दिल्ली में प्रश्न किया गया कि विवाह कब होगा। स्त्री जातक का जन्म 1.5.1982 को दिल्ली में दोपहर के 12.30 बजे हुआ था।

Future Point

अध्याय–6

कृष्णमूर्ति पद्धति द्वारा प्रश्न ज्योतिष

6.1 प्रश्न ज्योतिष को वरीयता क्यों ?

भविष्य के ज्ञान के लिए दो माध्यम हैं :

1. जन्मकुंडली पर आधारित ज्योतिष

2. प्रश्न ज्योतिष

जन्म कुंडली पर आधारित ज्योतिष की सटीकता पर अभी भी संदेह है क्योंकि सही जन्म समय के बारे में विभिन्न मत और संदेह हैं। इससे फलादेश अशुद्ध हो जाते हैं। इसी प्रकार से निकट भविष्य की किसी घटना को बिल्कुल सटीक जानने के लिए जन्म कुंडली फलकथन में बहुत प्रवीणता की आवश्यकता है। ऐसे में प्रश्न ज्योतिष की उपयोगिता बढ़ जाती है, खास तौर पर जब सही जन्मकुंडली उपलब्ध न हो।

प्रश्न ज्योतिष के दो प्रकार हैं :

1. प्रश्न के समय की कुंडली बनाकर

2. किसी प्रश्न के लिए 1 से 249 के मध्य संख्या चुनकर

6.2 प्रश्न के समय के आधार पर कृष्णमूर्ति पद्धति का उपयोग

प्रश्न ज्योतिष का उपयोग करते समय प्रश्न से संबंधित भावों का सही ज्ञान आवश्यक है। साथ ही अध्याय–3 के अनुसार कारकों के चयन में वरीयता भी महत्वपूर्ण है।

6.2.1 ट्रंक कॉल कब मिलेगी ?

3, 9, 11 संबंधित भाव हैं। 11वें भावारंभ के उपस्वामी को देखें। क्या उपस्वामी के निवास का नक्षत्रेश वक्री है ? अगर यह वक्री है तो ट्रंक कॉल से कोई लाभ नहीं होगा।

अगर तृतीय भावारंभ के उपस्वामी का नक्षत्रेश वक्री है तो कॉल नहीं लगेगी। अगर नवम भावारंभ का उपस्वामी वक्री है तो दूसरी ओर के व्यक्ति से संपर्क नहीं हो पाएगा। परंतु अगर उपरोक्त ग्रह मार्गी हैं तो 3, 9, 11 के कारकों का अध्ययन करें क्योंकि कॉल मिलने की संभावना है।

क्योंकि कॉल होने में कुछ मिनट या घंटे ही लगते है, शेष दशा की गणना की आवश्यकता नहीं है। जरूरत है सिर्फ लग्न की गति को जानने की और गणना करने की कि कब लग्न नियंत्रक ग्रहों के प्रशासन वाली स्थिति में भचक्र में आएगा और 3, 9, 11 के कारकों के अनुकूल होगा।

जो ग्रह तृतीय भाव का कारक है, वह 9 और 11 भावों का भी कारक होगा। इसी प्रकार से 9वे भाव का कारक, 3 या 11 भाव का भी कारक होगा। अगर कोई ग्रह 9 और 11 का कारक नहीं है, बल्कि 6, 8

Future Point

या 12 भाव का कारक है तो वह ग्रह ट्रंक काल के लिए कारक नहीं है, भले ही यह 3रे भाव का कारक है। इसी प्रकार से अगर कोई ग्रह 9वे भाव का कारक है लेकिन साथ ही 6, 8 या 12 भाव का भी कारक है और 3 या 11 का कारक नहीं है तो दूसरी ओर बात करने वाले व्यक्ति अनुपस्थित रहेंगे। केवल जब ग्रह 9वे भाव के कारक के साथ 3 या 11वे भाव का कारक हो तो दूसरी ओर से व्यक्ति उत्तर देगा। अगर ग्रह 11वे भाव का कारक है और 3 या 9 का कारक नहीं है लेकिन अन्य भावों का कारक है तो इस ग्रह को छोड़ दें। उन ग्रहों का चयन करें जो 11वे भाव के साथ 3 या 9 या दोनों के भी कारक हों।

21.9.1969 को प्रातः 9 बजे कांडी के लिए ट्रंक कॉल बुक की गयी। यह बहुत जरूरी कॉल थी। कांडी मताले से बहुत दूर है। मेरी इच्छा थी कि कॉल एक–दो घंटे में मिल जाए। मैंने कृष्णमूर्ति पद्धति के अनुसार लाइन मिलने से पूर्व कॉल मिलने के समय की गणना की।

अध्ययन समय : 9.00 प्रातः 21.9.1969; 7°28' उत्तर; 80°22' पूर्व.

लग्न : 20-22', प्रयुक्त अयनांश : 23° 20'

6 19°55'	7 20°22' श. 14°48'	8 18°55'	9 16°55'
5 17°55' रा. 27°55'	9.00 प्रातः 21.9.1969		
4 16°55' चं. 1°52'			11 17°55' शु. 4°14' के. 27°21'
3 16°55' मं. 6°29'	2 18°55'	लग्न 1 20°22'	12 19°55' सू. 4°38' गु. 19°1' बु. 20°15'

ग्रह	नक्षत्रेश	उप स्वामी
सूर्य	सूर्य	शनि
चंद्र	सूर्य	गुरु
मंगल	केतु	राहु
बुध (व)	चंद्र	केतु
गुरु	चंद्र	बुध
शुक्र	केतु	चंद्र
शनि (व)	शुक्र	शुक्र
राहु	गुरु	शुक्र
केतु	सूर्य	चंद्र

Future Point

टेलीफोन कॉल फलीभूत होने के लिए भाव 3, 11 का विचार करें।

तृतीय भाव में चंद्रमा स्थित है। बुध और बृहस्पति चंद्रमा के नक्षत्र में स्थित हैं। बृहस्पति तृतीय भाव का स्वामी है।

राहु बृहस्पति के नक्षत्र में स्थित है। अतः कारक बुध, बृहस्पति और राहु हैं।

एकादश भाव में केतु, सूर्य और बृहस्पति स्थित हैं। मंगल और शुक्र, केतु द्वारा शासित नक्षत्र में स्थित हैं। चंद्रमा, सूर्य और केतु सूर्य के नक्षत्र में स्थित हैं। राहु बृहस्पति के नक्षत्र में स्थित है। अतः कारक मंगल, शुक्र, चंद्रमा सूर्य और राहु हैं।

फोन कॉल के मिलने में सहायक कारक बुध, बृहस्पति, राहु, मंगल, शुक्र, चंद्रमा और सूर्य है।

3रा भावारंभ केतु के नक्षत्र और चंद्रमा के उप में स्थित है। 11वां भावारंभ शुक्र के नक्षत्र और मंगल के उप में स्थित है। क्योंकि इन भावारंभों के उपस्वामी बली कारक हैं, कॉल मिलने की पूर्ण संभावना है।

कॉल के मिलने के समय के कारकों के निर्धारण के लिए उस समय के नियंत्रक ग्रहों का विचार करें:

1. दिन रविवार था, नियंत्रक सूर्य।
2. कॉल बुक करने के समय चंद्रमा के गोचर के नक्षत्र का स्वामी सूर्य था।
3. चंद्रमा के गोचर की राशि मकर थी, स्वामी शनि।
4. कॉल बुक करने के समय लग्न तुला, स्वामी शुक्र थे।
5. लग्न नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति था।

अतः नियंत्रक ग्रह सूर्य, शनि, शुक्र और बृहस्पति थे।

नियंत्रक ग्रह और कारकों में दोनों जगह सूर्य, शुक्र और बृहस्पति सम्मिलित हैं। इनके सम्मिलित प्रभाव से कॉल फलीभूत होने के समय का पता चलेगा, भले ही यह मामूली घटना हो या गंभीर। क्योंकि कॉल कुछ मिनटों या घंटों में मिलनी थी, लग्न का गोचर महत्वपूर्ण है। अतः मैंने लग्न की गणना की। यह शुक्र की राशि, बृहस्पति का नक्षत्र, सूर्य का उप, शुक्र का उप–उप था। अतः उदय होने वाला लग्न तुला में $29^0 20'$ था। कॉल मिलने का सटीक समय गणना के अनुसार निरयण लग्न $29^0 20'$ तुला था। प्रयुक्त अयनांश $23^0 20'$ था। चंद्रमा के लिए मैताले नगर में उस दिन सांपातिक समय 11 घंटे 59 मिनट 52 सैकंड था। गणना करने पर कॉल का समय प्रातः 9.41 बजे निकला। अतः मैंने भविष्यकथन किया कि कॉल 9.41 पर मिलेगी। वास्तव में भी कॉल ठीक 9.41 पर मिल गयी।

6.3 संख्या पद्धति से प्रश्न ज्योतिष (कृष्णमूर्ति पद्धति के अनुसार)

प्रश्नकर्ता से 1 से 249 के बीच कोई संख्या बोलने के लिए कहा जाता है। अध्याय–2 में उपलब्ध सारणियों द्वारा लग्न ज्ञात किया जाता है। भावारंभों और ग्रह स्पष्ट की गणना प्रश्न के समय के अनुसार की जाती है। कारकों के ज्ञान के लिए अध्याय–2 में निहित सिद्धांतों का पालन किया जाता है। निम्न

Future Point

उदाहरण से प्रक्रिया समझने में सरलता होगी :

6.3.1 जातक कितने वर्ष जिएगा?

1 और 249 के मध्य कोई संख्या बोलने को कहें। बोली गयी संख्या के अनुसार कृष्णमूर्ति पद्धति सारणियों से लग्न ज्ञात करें।

अगर लग्न चर राशि में है तो 11वां भाव बाधक स्थान है। लग्न अगर स्थिर राशि में है तो 9 वां भाव बाधक स्थान है। लग्न द्विस्वभाव राशि में हो तो सप्तम भाव बाधक स्थान होता है।

लग्न की राशि कोई भी हो, द्वितीय और सप्तम मारक स्थान हैं। अतः इन तीन भावों का विश्लेषण आवश्यक है। कारक भी ज्ञात करें।

मृत्यु तिथि जानने के लिए शेष दशा भी ज्ञात करें।

पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार लग्न, चंद्र और सूर्य 4, 6, 8, 12 के स्वामियों के साथ अशुभ दृष्टि में नहीं होने चाहिएं। साथ ही लग्नेश, चंद्र और सूर्य बली होने चाहिएं। ऐसा होने पर दीर्घायु होती है। बृहस्पति और शुक्र के शुभ भावों के स्वामी होने पर तथा लग्नेश और चंद्र, सूर्य के मध्य शुभ दृष्टि होने पर दीर्घायु होती है। परंतु अगर लग्न, चंद्र और सूर्य पर 4, 6, 8 और 12 के स्वामियों से अशुभ दृष्टियां जैसे स्क्वायर, वियुति, युति आदि हैं तो अल्पायु होती है। यह पश्चिमी पद्धति है। इसके अनुसार लग्न, लग्नेश, और चंद्रमा जातक के स्वास्थ्य और आयु के परिचायक हैं। लग्नेश अगर वक्री हो या अष्टम में स्थित हो या अष्टमेश लग्न में स्थित हो या पापग्रह लग्न या अष्टम में स्थित हों तो अल्पायु होती है।

जातक कितने वर्ष और जिएगा इसके लिए पश्चिमी पद्धति इस प्रकार है :

अगर लग्नेश सूर्य या 4, 6, 8 के स्वामियों के साथ युति, स्क्वायर या वियुति दृष्टि में है तो गणना करें कि लग्नेश उस ग्रह से कितने अंशों की दूरी पर है। इसके बाद पहले वर्णित नियमों के अनुसार गणना करें।

लग्नेश के उपस्वामी पर ध्यान दें। अगर यह बाधक स्थान और मारक स्थान के कारकों के नक्षत्र में स्थित है तो कुंडली आकलन के बाद जातक की आयु अल्प रहेगी। यह कई वर्ष नहीं होगी। अगर लग्नेश का उपस्वामी छठे भाव के कारक के नक्षत्र में स्थित हो तो जातक बीमार पड़ेगा मगर इससे मृत्यु नहीं होगी, परंतु अगर लग्नेश का उपस्वामी अष्टम भाव के कारक के नक्षत्र में स्थित हो तो जातक की मृत्यु दुर्घटना में होगी।

अगर लग्नेश का उपस्वामी प्रश्नकुंडली में द्वादश भाव के कारक के नक्षत्र में स्थित हो तो जातक काफी दिन बिस्तर पर रहेगा या अस्पताल में भर्ती होगा। मृत्यु का संकेत केवल मारक स्थान और बाधक स्थान से मिलता है। लग्न के उपस्वामी के निवास के नक्षत्रेश के बल के अनुसार दशा और अंतर्दशा निर्धारित करनी चाहिए।

बतायी गयी संख्या के अनुसार निर्मित प्रश्न कुंडली के अनुसार दशाओं की गणना करें और ज्ञात करें

Future Point

कि कितने वर्ष और महीनों के बाद कारकों की युति की अवधि क्रियान्वित होगी। इन्हीं वर्ष और महीनों तक जातक के जीवित रहने का भविष्यकथन करें। परामर्श के समय नियंत्रक ग्रहों द्वारा भविष्यकथन की पुष्टि करना न भूलें।

24.10.67 के लिए संध्या के 5.30 बजे संख्या 246 बतायी गयी।

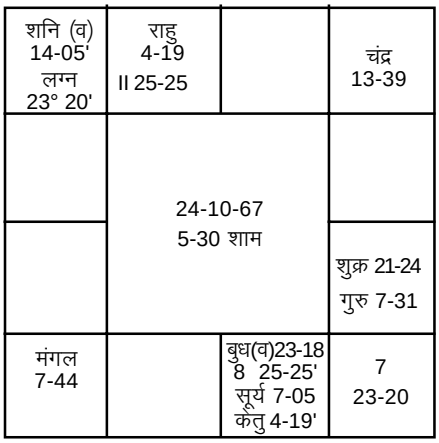

246 के अनुसार लग्न में बृहस्पति की मीन राशि, बुध का नक्षत्र रेवती और मंगल का उप है।

उपस्वामी मंगल सप्तम भाव में केतु के नक्षत्र में स्थित है। अतः मृत्यु अवश्यंभावी है। गोचर में जब लग्नेश सप्तम भाव में उस वर्ष राहु/केतु से युति करेगा, जब सूर्य स्वयं के नक्षत्र में और केतु के उप में आएगा और जब चंद्रमा राहु या गुरु या केतु के नक्षत्र में आएगा, देहांत हो जाएगा।

विश्लेषण

जीवन को खतरे के बारे में जानने के लिए बाधक स्थान और मारक स्थान का विचार करना चाहिए। क्योंकि लग्न की राशि मीन द्विस्वभाव की है, इसलिए सप्तम भाव बाधक स्थान है। द्विस्वभाव राशि के लिए सप्तम भाव बाधक स्थान और मारक स्थान होता है, साथ ही केंद्र भी है। अतः यह प्रबल मृत्युकारक है।

कृष्णमूर्ति पद्धति के अनुसार मृत्यु के कारक निम्न हैं :

अ. बाधकस्थान और मारक स्थान में स्थित ग्रह के नक्षत्र में स्थित ग्रह

आ. उपरोक्त भावों में स्थित ग्रह

इ. उपरोक्त भावों के स्वमियों के नक्षत्र में स्थित ग्रह

ई. इन भावों के स्वामी

उ. कारकों के साथ युति या दृष्टिसंबंध रखने वाले ग्रह

अब हम भाव 2 और 7 का विश्लेषण करेंगे। द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित नहीं है। मंगल द्वितीयेश

Future Point

है। मंगल का प्रतिनिधि राहु मेष में स्थित है। राहु (छायाग्रह) इस प्रकार प्रभाव में अधिक बली है। राहु का चयन करें। राहु के नक्षत्र में सूर्य स्थित है।

सप्तम भाव में सूर्य, केतु और वक्री बुध स्थित हैं।

बुध के नक्षत्र अश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती हैं। इन किसी में कोई ग्रह स्थित नहीं है। वक्री बुध बृहस्पति के नक्षत्र में और वक्री शनि के उप में स्थित है।

सूर्य–केतु युति में हैं। केतु के नक्षत्र अश्विनी, मघा, और मूल हैं। राहु, मंगल और बृहस्पति केतु के नक्षत्र में स्थित हैं। बृहस्पति कन्या में है और उसकी दृष्टि मंगल और केतु दोनों पर है। बृहस्पति मृत्युकारक ग्रह राहु के उप में स्थित है। राहु मंगल का प्रतिनिधित्व कर रहा है। केतु सप्तम भाव में स्थित है। केतु द्वितीयेश मंगल के नक्षत्र और अष्टमेश शुक्र के उप में स्थित है जो मृत्यु का प्रबल कारक है। अंत में राहु, केतु और बृहस्पति का विचार करें।

जातक की राहु महादशा, बुध की भुक्ति चल रही थी (शेष दशा 1 वर्ष 26 दिन)

अतः निष्कर्षतः राहु महादशा, केतु भुक्ति और राहु अंतर में और बृहस्पति सूक्ष्म में जातक के जीवन को खतरा होगा।

6.3.2 प्रश्न : संतान सामान्य होगी या नहीं ?

प्रश्नकर्ता ने संख्या 100 बतायी। समय था 2.7.1969 को शाम के 7.30 बजे मुंबई में। प्रश्न के समय लग्न सिंह राशि में 24^0 में शुक्र के नक्षत्र और बुध के उप में था। कुंडली इस प्रकार है :

<table>
<tr><td>8
23.21
राहु
1.37</td><td>शनि
13.34
9
23.21</td><td>शुक्र 2.11
बुध 27.23
10
24.21</td><td>सूर्य
17.10
11
24.21</td></tr>
<tr><td>7
24.20</td><td colspan="2" rowspan="2">02-07-1969
7-30 शाम
18.55 उत्तर</td><td>12
24.21</td></tr>
<tr><td>चंद्र
26.05
6
24.21</td><td>लग्न
24.00</td></tr>
<tr><td>5
24.21</td><td>4
24.21
मंगल
8.35 (व)</td><td>3
23.21</td><td>2
23.21
केतु 1.37
गुरु 5.05</td></tr>
</table>

1. लग्न में केतु और बृहस्पति स्थित हैं।
2. लग्नेश दशम भाव में स्थित है।
3. मंगल की लग्नेश पर आठवीं दृष्टि है।

Future Point

लग्नेश दशम भाव में उत्तम स्थिति में है, अतः महिला को कोई खतरा नहीं है। मंगल की लग्नेश सूर्य पर दृष्टि है। लग्नेश और केतु की लग्न में स्थिति सकारात्मक नहीं है। क्योंकि मंगल शल्यक्रिया का संकेतक है, अतः जन्म शल्य चिकित्सा द्वारा होने का संकेत है। परंतु जन्म ठीक प्रकार से होगा और माता को कोई खतरा नहीं होगा क्योंकि बृहस्पति लग्न में स्थित है।

मंगल वक्री है। बुध शनि के नक्षत्र में स्थित है और मार्गी है। अतः शल्य चिकित्सा के उपकरणों के प्रयोग का संकेत है।

व्याधि विचार

अगर लग्न का उपस्वामी 1 या 11 भाव में स्थित ग्रह के नक्षत्र में स्थित हो तो स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम होता है। परंतु अगर लग्न का उपस्वामी 1 और 6 भाव के कारक ग्रह के नक्षत्र में स्थित हो तो जातक उनकी दशा, अंतर्दशा में व्याधिग्रस्त होता है। अगर छठे भावारंभ का उपस्वामी ऐसे ग्रह के नक्षत्र में स्थित हो जो 6 या 1 का कारक हो परंतु 11वें भाव का कारक नहीं हो तब उपस्वामी अपनी दशा/अंतर्दशा में व्याधि देगा। अगर उपस्वामी ऐसे नक्षत्र में स्थित है जिसका स्वामी किसी प्रकार से शनि से संबंधित है तो बीमारी चिरकालिक होती है। उपस्वामी शनि होने पर भी व्याधि लंबे समय तक चलने वाली होती है। परंतु अगर उपस्वामी का संबंध मंगल से हो तो बीमारी तीक्ष्ण वेदनापूर्ण होती है। बुध जटिलताओं का संकेतक है।

रोगी ठीक कब होगा ?

सामान्यतः व्यक्ति उस समय बीमार पड़ता है जब लग्न और छठे भाव से संबंधित ग्रहों की दशा किसी प्रकार से साथ–साथ प्रभावी हो। रोगी ठीक उस समय होता है जब छठे भाव के कारक की दशा के बाद 5 या 11 भावों के कारकों की दशा आएं। बीमारी के बाद जातक तभी जीवित बचेगा अगर आयु विचार से उसकी आयु हो। आयु विचार के लिए बाधक स्थान और मारक स्थान का विश्लेषण करना चाहिए। इनसे वास्तविक स्थिति स्पष्ट हो जाएगी।

दुर्घटना

ज्योतिष में 'दुर्घटना' जैसा कोई विषय नहीं है क्योंकि प्रत्येक फल के पीछे कोई कारण होता है। दुर्घटना ऐसी घटना है जिसकी कोई आशंका नहीं होती। जो घटना अप्रत्याशित और अवांछित हो दुर्घटना मानी जाती है।

अतः दुर्घटना के लिए अष्टम भावारंभ का उपस्वामी अष्टम भाव के कारक ग्रह के नक्षत्र में स्थित होना चाहिए। अगर यह कारक छठे भाव का भी कारक हो तो दुर्घटना के बाद ज्वर आदि व्याधि होगी। अगर यही उपस्वामी द्वादश भाव के कारक ग्रह के नक्षत्र में स्थित हो तो जातक अस्पताल में भर्ती होता है। अगर उपस्वामी किसी बाधक स्थान या मारक स्थान का कारक हो तो अगर जातक की आयु आयु निर्णय से समाप्त हो रही हो तो जातक की दुर्घटना में मृत्यु हो जाएगी। अगर आयु शेष हो तो जातक बच जाएगा मगर उसकी हालत गंभीर रहेगी। हो सकता है जातक बेहोश रहे या उसे ऑक्सीजन, खून आदि देने पड़ें। अतः हमें जातक की आयु और व्याधि की अवधि दोनों का विश्लेषण करना चाहिए।

Future Point

अभ्यास

1. प्रश्न ज्योतिष क्या है और इसके क्या लाभ हैं ?
2. प्रश्न ज्योतिष में कृष्णमूर्ति पद्धति की कौन सी विधियों का उपयोग किया जाता है ?
3. कृष्णमूर्ति पद्धति द्वारा किसी प्रश्न का उत्तर देते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
4. निम्न समय विवरण के लिए कृष्णमूर्ति पद्धति द्वारा बताएं कि क्या ट्रंक कॉल मिलेगी ? 9.00 प्रातः, 21.9.1969, $7^{o}28'$ उत्तर और $80^{o}22'$ पूर्व।
5. प्रश्न ज्योतिष के लिए कृष्णमूर्ति पद्धति की संख्या पद्धति क्या है ? इसका उपयोग किस प्रकार से होता है ?
6. किसी जातक की आयु, शिक्षा और धन के आकलन के लिए कौन से भावों का अध्ययन करना चाहिए?

Future Point

अध्याय–7

द्वादश भाव

7.1 बारह भावों के कारकत्व

लग्न (प्रथम भाव)

शारीरिक गठन, रंग, आकृति, स्वास्थ्य, शारीरिक संरचना, कार्यक्षमता और शक्ति, चिंतन शक्ति, नैसर्गिक झुकाव और आदतें, व्यक्तित्व, जीवन संघर्ष, प्रयास में सफलता/असफलता, स्पष्टवादिता, सम्मान, प्रतिष्ठा, सम्पन्नता, सामान्य शुभत्व। सिर, चेहरे का ऊपरी भाग, देश के व्यक्ति, प्रश्नकर्ता। गुण, आयु, कष्ट। दूसरों के धन को हड़पना, दूसरों के धन को दांव पर लगाना, त्वचा। छोटे भाई को लाभ। प्रसिद्धि, माता की साख तथा ननिहाल की संपत्ति। उच्च शिक्षा, लंबी यात्रा, विदेश प्रवास या जातक की संतान की अजनबियों से मित्रता, छात्रावास, मामा को खतरा, जीवनसाथी या साझेदार की मृत्यु, पिता द्वारा सट्टेबाजी, बड़े भाई के पड़ोसी, बड़े भाई की लघु यात्राएं।

द्वितीय भाव

आर्थिक मामले, भाग्य, लाभ–हानि। सामर्थ्य, साधन, सांसारिक उपलब्धियां, तड़क–भड़क के साधन, आभूषण, रत्न, धातुएं, दस्तावेज, शेयर, रुपयों के नोट, गिरवी सामान, बैंक में धन, अन्य संपत्ति, विचारों को प्रस्तुत करने की क्षमता, द्वितीय विवाह, विवेक, भांपने की क्षमता, दायीं आंख, स्मृति, कल्पना, नाखून, जिह्वा, नाक, दांत, ठोडी, गाल।

अन्य लोगों की रक्षा, पारिवारिक सदस्य, मुकदमे, फिजूलखर्ची या मितव्ययता, कर्ज, कर्ज दिया धन, जातक की मृत्यु, राष्ट्रीय धन, बैंकों का कार्य, प्रशासकीय धन।

प्रश्नकर्ता का धन, सच–झूठ, वस्त्र, तांबा, हीरे, रत्न, मोती, व्यापार, भाषा की कोमलता, इत्र, दूसरों की सहायता, धनार्जन के प्रयास, कंजूसी या खर्च में दिलेरी, भाषण कला, स्वर्ण, चांदी, मक्की, अनाज, नज़दीकी आश्रित, माणिक, खनिज पदार्थ, वस्त्र।

छोटे भाई को हानि और उसके जीवन के परिवर्तन, माता को लाभ, संतान के व्यवसाय और सफलता, पद, पदवी, मामा की लंबी यात्राएं, साझेदार को खतरा, जातक के पिता को सामान्य व्याधि, बड़े भाई द्वारा मकान, भूमि, वाहन की खरीद।

तृतीय भाव

मानसिक झुकाव, योग्यता, स्मृति, बौद्धिक क्षमता, शिक्षा में रुचि। साहस, शौर्य, दृढ़ता, शक्ति। छोटे भाई–बहन, चचेरे भाई–बहन, सगोत्री, सामान्य जान–पहचान वाले, पड़ोसी, लघु–यात्राएं, साइकिल, बस, ट्राम, रेल, पत्र व्यवहार, कागज, लेख, लेखा – जोखा, गणित, विचार संचार, डाकखाना, लेटर बॉक्स,

Future Point

टेलीफोन, टेलीग्राफ, टेलीप्रिंटर, टेलीविज़न, संचार माध्यम, रेडियो समीक्षा, सिग्नल, हवाई डाक, मध्यस्थ, संदेशवाहक, प्रचार अधिकारी, संवाददाता, संपादक, सूचना अधिकारी, पत्रकार। निवास में परिवर्तन, बेचैनी, पुस्तकालय, पुस्तकों की दुकान, मोलभाव, हस्ताक्षर, समझौते पर हस्ताक्षर, अफवाह, गपबाजी।

हाथ, गर्दन, कंधे, गले की हड्डी, बाहें, स्नायु तंत्र।

पड़ोसी देश, संधियां, सड़क के किनारे की जगह, मस्तिष्क भ्रम, शुद्ध और ताजे भोजन का प्रयोग, जायदाद का बंटवारा, स्त्री कर्मचारी, भोज्य फल और कंदमूल।

चतुर्थ भाव

माता, घर, निवास, घरेलू वातावरण, कब्र, निजी गतिविधियां, जिज्ञासा, गुप्त जीवन, वाहन, खेत, खलिहान, उद्यान, खान, अचल संपत्ति, भवन, पुरानी रिहाइश, स्मारक, कलात्मक सामग्री। पैतृक जायदाद, खज़ाने। विद्यालय, महाविद्यालय। सरकारी भवन, फसल, खेती। विद्याध्ययन, नाव, तेल भंडारण, छोटे कुंए, जल, दूध, न्यास, झूठे आरोप, तंबू, शामियाना, तालाब, हवेली, कला, प्रवेशद्वार, स्वादिष्ट भोजन, लूट का माल रखने का स्थान, प्राचीन पवित्र ग्रंथ, वेद, जड़ी–बूटी, गुफाएं।

पंचम भाव

संतान, रुचि, आमोद–प्रमोद, समाज, पसंद, शौक, कलात्मक प्रतिभा, जीवनसाथी या साझेदार का भाग्य और लाभ, मनोरंजन, खेल–कूद, प्रेम प्रसंग, सिनेमा, नृत्य, नाटक, संगीत, मौजमस्ती, ताश, पहेलियां, पासा, घोड़ा, शेयर, लॉटरी, जुआ, शेयर बाजार। प्रेम संबंध, अवैध यौनाचार, बलात्कार, अपहरण। दूत, राजदूत, दावत, उत्तम चरित्र, यांत्रिक कला, विवेक, पाप–पुण्य का विचार, वैदिक मंत्रोच्चार, धार्मिकता, गहन ज्ञान और बुद्धि, अत्यधिक धन और वैभव, त्योहार, संतोष, दरबारियों से मेल, आध्यात्मिक जीवन।

छठा भाव

व्याधि, रोगी का भोजन, खानपान का स्वभाव, सेवा में थकान, कर्मचारी, अधीनस्थ कर्मचारी या सेवक, कर्ज़, उधार, पालतू जानवर, छोटे पशु, किरायेदार, शत्रुता, परिधान, स्वच्छता, सफाई, जड़ी–बूटी, भोजन, वस्त्र। प्रतियोगिता में सफलता, कार्यों/प्रयासों में बाधा, मामा, विक्षिप्तता, शत्रुता, कंजूसी, गहन दुख, लाइलाज आंखों की बीमारी, बेवक्त भोजन, चोरी, त्रासदी, जेल। उद्योग, जनस्वास्थ्य, सफाई, छोटे भाई/बहन द्वारा वाहनों की खरीद–फरोख्त, माता की लघु यात्राएं, प्रथम संतान का कार्य–व्यवसाय और बैंक में धन, साझेदार को घाटा, साझेदार द्वारा खरीद या निवेश, साझेदार के गुप्त शत्रु, साझेदार से विच्छेद। पिता का कार्य–व्यवसाय। बड़े भाई को खतरा।

सप्तम भाव

गठबंधन, व्यापार में साझेदार, मुकदमा, द्वंद्व युद्ध। समाज में लोकप्रियता, जुर्माना, तलाक, कानूनी गठबंधन, ठेका, यात्रा विच्छेद, विदेशों में प्रभाव, वहां पर अर्जित साख और सम्मान, जीवन को खतरा। गयी संपत्ति की पुनर्प्राप्ति, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, मध्यस्थता, युद्ध, विदेशी मामले, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, सार्वजनिक सभा, खुला युद्ध, माता की अचल संपत्ति, वाहन, दत्तक संतान, गुप्त शत्रु से खतरा,

कठिनाइयां, मृत्यु, पिता के मित्र और सहयोगी, जातक के पिता के मित्रों के साथ साझेदारी।

अष्टम भाव

आयु, विरासत, वसीयत, बीमा, ग्रेच्युटी, मृत्यु–स्वाभाविक या अकस्मात, डूबना, आग, दुर्घटना, आत्महत्या, रहस्य, कष्ट, दुर्भाग्य, संताप, चिंताएं, अभाव, विलंब, निराशा, पराजय, धन हानि, बाधाएं, बदनामी, दुर्घटना, शत्रुओं से खतरा। गलत कार्य, नदी पार करना, चोरी, डकैती, किले की घेराबंदी, युद्ध। दहेज, बिना परिश्रम की आमदनी, मुनाफे में हिस्सा। शल्यचिकित्सक, डॉक्टर, स्वास्थ्य निरीक्षक, बूचड़खाना, कसाई, कोने आदि।

जनता की मृत्यु दर, आत्महत्या, गंभीर दुर्घटना, संक्रमण, बाढ़, आग, दुर्भिक्ष, बीमारी, भूकंप, राष्ट्रीय त्रासदी/शोक, विदेशों से आर्थिक संबंध, आयात/निर्यात, विदेशों से कर्ज़, समर्पण या हानि, दूसरे देश का क्षेत्र, सार्वजनिक कर्ज़ या ब्याज, घाटे का बजट, महसूल, सरकारी बिक्री, बीमा, मृतक का धन, यात्रा में कठिनाई, शत्रु द्वारा कष्ट, भ्रष्टाचार, लॉटरी द्वारा माता को लाभ, जुए में जीता धन।

नवम भाव

श्रद्धा, ज्ञान, भक्ति, भाग्य, दर्शन, धार्मिक और अध्यात्मिक विचार, ध्यान, साधना, अतींद्रिय शक्ति, दूरदृष्टि, मंदिर, गिरजे, मस्जिद, आध्यात्मिक कल्याण, तीर्थयात्रा, गोल जलाशय, दान, अनुसंधान, खोज, अन्वेषण, पिता, धार्मिक गुरु, संतान के गुरु। कानून, कानूनी मध्यस्थता, अध्यापन, धर्म, स्वप्न और दिव्यदर्शन, आत्माओं से वार्तालाप, लंबी यात्राएं, समुद्री यात्रा, हवाई यात्रा।

उत्तम पुस्तकों का प्रकाशन, अंतर्राष्ट्रीय मामले, ईश्वर की भक्ति, संचार माध्यम, जहाजरानी, यात्रा, विधि विभाग, विज्ञान, विश्वविद्यालय, विदेश जाना, विदेशवास, किसी देश के आयात–निर्यात, राष्ट्रीय व्यापार, रेडियो, दूरस्थ स्थान के लिए संदेश व्यवस्था, केबल, वायरलैस।

दान, मंदिर जाना, वैदिक यज्ञ, मन की पवित्रता, तपस्या, उत्तम व्यवहार, पुराणशास्त्र, अश्व, भैंस, दरबार हॉल, मुद्रा प्रसार।

कुएं, झील, तालाब, जलाशय, मंदिर, आर्थिक प्रतिज्ञा, तीर्थयात्रा। पत्नी की लघु यात्राएं, कर्मचारी का वाहन और अचल संपत्ति, संतान की सट्टे की प्रवृत्ति और सट्टे से लाभ, माता की अस्वस्थता, छोटे भाई की पत्नी, बड़े भाई के मित्र।

दशम भाव

सम्मान, साख, प्रसिद्धि, सत्ता, पद, सफलता, नाम, रुतबा, औकात, महत्वाकांक्षाएं, अधिकार, सांसारिक गतिविधियां, ज़िम्मेदारियां।

स्थायित्व, प्रोन्नति, उन्नति, नियुक्ति, कार्यक्षेत्र, धंधा, व्यापार, कर्मस्थान। माता–पिता के अंतिम संस्कार, धार्मिक समारोह, मालिक, वरिष्ठ अधिकारी, बॉस, न्यायाधीश, सरकार, प्रशासन।

तीर्थयात्रा, सरकार से सम्मान, सम्मानीय जीवन, नौकरी पक्की होना, उत्कृष्टता, अधिकारी की मोहर,

Future Point

अश्वारोहण, खेलकूद, एथलेटिक्स, सेवा भाव, बलिदान, नौकरी, खेती, डॉक्टर, नाम, ख़जाना, डिपॉसिट धन, तंत्र–यंत्र–मंत्र, मानवीयता, औषधि, जांघें, संपन्नता, दत्तक पुत्र, अध्यापन, अध्यात्म।

वर्षा, संन्यास, साहस, ताकत, ज्ञान, चुराया धन, न्यायाधीश, स्टेवर्ड (खिदमतगार), रेस क्लब के अध्यक्ष, घोड़ों के शौकीनों की रईसी। राष्ट्राध्यक्ष, राष्ट्रीय नेता, राष्ट्रीय व्यापार, पिता की स्वयं की कमाई संपत्ति, माता–पिता का मारक स्थान, व्यापार या जीवनसाथी की संपत्ति या वाहन, कर्मचारियों के मनोरंजन के साधन, संतान की अस्वस्थता, संतान के कर्ज़, मुकदमे, चुनाव, छोटे भाई को खतरा, माता के विरोधी, बड़े भाई को हानि या उनके विरुद्ध षड़यंत्र।

एकादश भाव

मित्रों का भाव, समाज, कृपापात्र, प्रशंसक, चाटुकार, सहायक, सलाहकार, समर्थक, शुभचिंतक, निकटवर्ती, आशाएं, इच्छाएं, आकांक्षाएं और उनकी पूर्ति। कार्यों में सफलता, विदेशी गठबंधन, चुनाव, मुकदमे, सट्टा, लेख, स्वास्थ्य, लाभ, आय, आनेवाला धन।

मूलधन और ब्याज, आमोद–प्रमोद, धनाढ्यता, लाभ, प्रयत्न में सफलता, आकांक्षाओं की पूर्ति के बाद शांति, साझेदारी, पक्की दोस्ती, सुधारवादी और अपारंपरिक गतिविधियां, बड़े भाई, उपचार, न्यास। बायां कान, दायां पैर, बायां हाथ, धन–दौलत। व्यक्तिगत प्रभाव, सबसे बड़ा भाई, चाचा, ताऊ, ईश्वर भक्ति, भाग्य, सरल आय, साला, माता की आयु, घुटने, शुभ समाचार, मंत्रीपद, किस्मत जागना।

चर राशियों में जन्मे व्यक्तियों के लिए बाधकस्थान, ज्ञान, आय, घोड़े, हाथी, वाहन, रथ, फर्नीचर, आभूषण, संगीतमय क्रेडल, सजावट, धन, सत्ता, दामाद, बहू।

रत्न, संसद, विधान सभा आदि, लोकसभा, निगम, नगरपालिका, जिला बोर्ड, पंचायत। सरकारी नीतियां और योजनाएं, अंतर्राष्ट्रीय मित्र, सुविधाओं का आदान–प्रदान, कंपनी, मंडली, परिषद, संघ, घुड़दौड़, सेवकों के नियंत्रण वाली समितियां, जीतने वाले की संख्या का संकेत इस भाव से मिलता है।

सरकारी कर्ज, विद्युत कंपनी, गैस, संग्रहालय, खेती, जायदाद, सिंचाई, रेशम, पिता की लघु यात्राएं, पत्राचार से आमदनी, संतान का जन्म, साझेदार के आमोद–प्रमोद के स्थान, सट्टेबाजी। बीमारी से मुक्ति, शत्रुओं पर विजय। संतान के प्रतिद्वंद्वी, खतरा, छोटा भाई, लंबी यात्राएं। कष्ट और दर्द से मुक्ति, अस्पताल से मुक्ति।

द्वादश भाव

धन हानि, बाधाएं, रुकावटें, मजबूरियां, फिजूलखर्ची, ठाट–बाट, खर्चे, धोखा, दरिद्रता।

खरीद, निवेश, दान, समाजसेवी संस्था से संबंध। परिवार से अलगाव, दूरस्थ स्थान की यात्रा, कष्ट, पाप, राजद्रोह, पृथक होना, दुर्भाग्य, गरीबी, उत्पीड़न, कारावास, साजिश। डर, हीन भावना, एकांतवास, गुप्त और अमूक कष्ट, महान बलिदान, सामाजिक बाधाएं, सीमाएं और बंधन, अप्रत्याशित मुसीबत।

गुप्त षड्यंत्र, चालाकी, द्वेष, धोखा, बेईमानी, आत्महत्या, हत्या। देश निकाला, विदेशवास, गुप्त सूचना,

Future Point

रहस्य, रूहों से बातचीत, तांत्रिक शोध, जासूसी, अस्पताल में भर्ती, घोटाला, कांड, बदनामी, गुप्त दुःख।

तंत्र–मंत्र में सफलता, प्रेम प्रसंग, रासायनिक खोज, जंतुओं से खतरा, बेगारी, मशक्कत, जंतुओं द्वारा मारी खरौंचें, दूरस्थ स्थान या विदेश में सफलता। समाजसेवी संस्थाओं से सहायता। निर्वासित व्यक्ति, कुकर्मी, चोरी गयी वस्तु जो कभी नहीं प्राप्त हुई, गुप्त–दीर्घकालीन क्रोध, दुष्ट व्यक्ति की गद्दारी। छिपा भवन, जीवन का अज्ञात पक्ष, गहरी नींद (तृतीय भाव द्वारा नींद से जागना ज्ञात होता है, छठे भाव से समाधि, नवम से स्वप्न), मानसिक कष्ट, बेचैनी, पैर, बायीं आंख, शत्रुओं से भय, अंग कटना, शारीरिक चोट, हानि, दुष्टता, कारावास, क्रोध, नौकरी छूटना।

शैया सुख, अप्रत्याशित मांग, धन का दबाव, असामान्य खर्चे, उपहार, दान, जेल, कारावास, शरणस्थान, पागलखाने आदि में रहने से अलगाव, अस्पताल।

विदेशवास, अपराध का आरोप और मुकदमा, संताप, स्वयं की करनी, लूटपाट, बलात्कार, जहर देना, तस्करी, ब्लैकमेल, घोड़े के मालिक पर बंदिश, घुड़सवार को सवारी पर पाबंदी, धोखा, चारसौबीसी, राजद्रोह, विश्वासघात। समाजसेवी कल्याणकारी संस्थाएं, काराग्रह, सामान्य अपराध, जासूस, गुप्त आंदोलन, तंत्र–मंत्र, टोने–टोटके, पिता की स्थायी संपत्ति, वाहन, पत्नी की व्याधि, मुकदमा, खतरा, संतान को कष्ट और निराशा, माता की लंबी यात्राएं, छोटे भाई का कार्य क्षेत्र, उसकी लोकप्रियता और धन।

विभिन्न कार्यों के लिए उपयुक्त भाव

		भाव
1. आयु		
1	स्वयं	1, 8, 12
2	पिता	2, 9, 4
3	माता	3, 6, 9, 10
4	भाई	2, 5, 10
2. संपत्ति		
1	खरीद	4, 11, 12
2	बेचना	3, 5, 11
3. धन		
1	स्वयं	1, 2, 11
2	माता	1, 2, 5
3	पिता	7, 9, 10
4. विचार विनिमय		3, 9, 11
5. साक्षात्कार		3, 9, 11

Future Point

6. आर्थिक मामले

1	नौकरी	2, 6, 10
2	लॉटरी में जीत	6, 10, 11

7 कार्यक्षेत्र – व्यवसाय

1	प्रतिस्पर्धात्मक	2, 6, 11
2	सट्टा	2, 5, 11
3	प्रोन्नति	2, 10, 11
4	प्रतिस्पर्धा	2, 6, 10, 11
5	कार्य के प्रकार में परिवर्तन	2, 11, 12
6	स्थान परिवर्तन	2, 3, 11
7	तबादला	3, 10, 12

8 विवाह

अ.	समृद्धि	2, 7, 11
आ.	विच्छेद	2, 6, 12
इ	पुनर्संबंध	2, 7, 11

9 संतान

1	जन्म	2, 5, 11
2	समृद्धि	2, 5, 9

10 विदेशवास

1	स्थायी	3, 7, 9, 11
2	अस्थायी	3, 9, 11, 12

11 शिक्षा

1	देश में	4, 11
2	उच्च शिक्षा	
अ	देश में	8, 11
आ	विदेश में	9, 11, 12

Future Point

Future Point

परिशिष्ट–1

अयनांश

स्थिर भचक्र के प्रारंभन की सही स्थिति जानने के लिए निम्न तथ्य महत्वपूर्ण हैं :

1. यह ज्ञात करें कि स्थिर या निरयण भचक्र और शयन भचक्र कब एक ही अंशों में थे।
2. भचक्र के पीछे जाने की गति।
3. हिंदू पद्धति से मेष राशि का प्रारंभ कहां से लें, अर्थात निरयण भचक्र

1. दोनों भचक्रों की मिलन तिथि : विभिन्न वैज्ञानिकों और ज्योतिर्विदों के भिन्न–भिन्न मत निम्न प्रकार हैं :

कीरो	388 ईसा पूर्व	डी. डैविडसन	317 ईसा पूर्व
जी. मेसे	255 ईसा पूर्व	थेरन्स	125 ईसा पूर्व
पी. काउंसेल	0 ईस्वी	सी. फगान	213 ईस्वी
लाहिड़ी	285 ईस्वी	कृष्णमूर्ति	291 ईस्वी
पी. एस. रे	319 ईस्वी	सेफेरिआ	498 ईस्वी

2. वह गति जिससे क्रांतिवृत्त और खगोलीय विषुवत वृत्त का मिलन बिंदु वक्री रूप में आगे बढ़ता है, निम्न है। इसके बारे में भी मतैक्य नहीं है।

आर्यभट्ट	46.3"	पराशर	46.5"
वराहमिहिर	50.0"	कृ.प. (न्यूकौंब)	50.2388475"
सूर्य सिद्धांत	54.0"	भास्कर	59.9"

3. कुछ ज्योतिर्विद संदर्भ बिंदु के रूप में अश्विनी तारा समूह का उपयोग करते हैं, परंतु किसी तारा समूह में किसी बिंदु को नियत करना कठिन है। अन्य विद्वान चमकीले तारे स्पीका से 180^0 की दूरी पर स्थित बिंदु को चित्रा नक्षत्र का स्थान मानते हैं। स्पीका को कन्या राशि का अंत और तुला का आरंभ माना जाता है, अतः इसे चित्रा के आरंभ से $6^0 40'$ दूर माना जाता है। स्पीका को स्थिर भचक्र में शरद संपात में स्थित माना जाता है। अयनांश निर्धारण में भिन्नता के बावजूद कृष्णमूर्ति पद्धति, लाहिड़ी और सी.जी. राजन के मतों में अंतर नगण्य ही है अतः इनमें से किसी को भी ज्योतिषीय कार्य के लिए प्रयोग कर सकते हैं। लाहिड़ी पंचांग अर्थात चित्रपक्ष अयनांश का उपयोग काफी लोकप्रिय है। फिर भी कृष्णमूर्ति पद्धति के अनुयायी कृष्णमूर्ति अयनांश का ही प्रयोग करते हैं।